किसी भी तरह के विज्ञापन एवं समाचार के लिए संपर्क करें मो0: 9891706853

दैनिक

राष्ट्रीय संस्करण

RNI: UPHIN/2021/84200

समाज जागरण

नोएडा उत्तर प्रदेश,दिल्ली एनसीआर, हरियाणा,पंजाब बिहार,मध्य प्रदेश, छतीसगढ, झारखण्ड असम से प्रसारित

वर्ष: 4 अंक: 284 नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) गुरुवार 23 जुलाई 2026 http://samajjagran.in पृष्ट - 12 मूल्य 05 रुपया

पेपर लीक पर संसद में चर्चा को तैयार सरकार, राहुल के आरोपों पर जेपी नड्डा का पलटवार

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री एवं राज्यसभा में सदन के नेता जेपी नड्डा ने पेपर लीक के मुद्दे पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि केंद्र सरकार इस विषय पर संसद में विस्तृत चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और विपक्ष इस गंभीर मुद्दे पर राजनीति कर रहे हैं। नड्डा ने कहा कि राहुल गांधी ने संसद में 150 से अधिक पेपर लीक मामलों का उल्लेख किया, जबकि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन शासित राज्यों में भी ऐसे कई मामले सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार हर तथ्य को सदन के सामने रखेगी और "दूध का दूध, पानी का पानी" करेगी।

उन्होंने कहा कि पेपर लीक जैसे संवेदनशील विषय पर राजनीतिक लाभ लेने की बजाय छात्रों के हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। नड्डा ने विपक्ष को इस मुद्दे पर संसद में सार्थक और तथ्यपरक चर्चा के लिए खुला आमंत्रण भी दिया।

गिरिराज सिंह बोले— "जिनके वस्त्र काले हैं, उनके मन भी उतने ही काले हैं"; विपक्ष शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग पर अडिग

नीट-यूजी विवाद पर संसद में तीखा गतिरोध, भाजपा का विपक्ष पर करारा प्रहार

समाज जागरण

नई दिल्ली। राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) के कथित प्रश्नपत्र लीक प्रकरण को लेकर संसद के मानसून सत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच टकराव और तेज हो गया है। विपक्ष द्वारा काले वस्त्र धारण कर विरोध प्रदर्शन किए जाने पर भारतीय जनता पार्टी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि "जिनके वस्त्र काले हैं, उनके मन भी उतने ही काले हैं।"

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार नीट-यूजी प्रकरण पर संसद में विस्तृत चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार है, किंतु विपक्ष जानबूझकर सदन की कार्यवाही बाधित कर

रहा है। उनके अनुसार विपक्ष छात्रों के हितों से जुड़े इस गंभीर विषय का राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास कर रहा है।

गिरिराज सिंह ने कहा कि सरकार ने सदन में चर्चा कराने का प्रस्ताव रखा था, परंतु विपक्ष ने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सहित विपक्षी दल संसद की कार्यवाही सुचारु रूप से चलने नहीं देना चाहते।

केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि संसद राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर गंभीर और रचनात्मक विमर्श का सर्वोच्च मंच है। उनका कहना था कि विपक्ष राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता की लालसा में सदन की गरिमा को प्रभावित कर रहा है।

वहीं केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने कहा कि नीट-यूजी प्रश्नपत्र लीक की घटना किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है तथा केंद्र सरकार इसकी निष्पक्ष एवं गहन जांच करा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा इस समस्या का समाधान नहीं है।

उधर विपक्षी सांसद काले वस्त्र पहनकर संसद पहुंचे और नीट-यूजी प्रश्नपत्र लीक प्रकरण तथा दिल्ली में छात्र प्रदर्शनकारियों पर हुई पुलिस कार्रवाई के विरोध में प्रदर्शन किया। विपक्ष ने शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग दोहराते हुए कहा कि जवाबदेही तय किए बिना चर्चा का कोई औचित्य नहीं है। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पुनः स्पष्ट किया कि सरकार नीट-यूजी प्रकरण पर चर्चा के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि चर्चा का समय और स्वरूप सभी राजनीतिक दलों से परामर्श के बाद निर्धारित किया जाएगा।

नीट-यूजी विवाद को लेकर संसद के मानसून सत्र में फिलहाल गतिरोध बना हुआ है। सरकार चर्चा कराने पर बल दे रही है, जबकि विपक्ष शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग पर अडिग है। ऐसे में इस मुद्दे पर सदन में टकराव फिलहाल समाप्त होता नहीं दिखाई दे रहा है। (एजेंसी)

बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा पर सरकार सख्त, आईटी नियमों में कड़े प्रावधान

समाज जागरण

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिए नियम और सख्त कर दिए हैं। केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने लोकसभा में बताया कि बाल यौन शोषण सामग्री (सीएसएएम) और अन्य गैर-कानूनी कंटेंट पर सोशल मीडिया कंपनियों को त्वरित कार्रवाई करनी होगी। संशोधित आईटी नियमों के तहत अदालत या सक्षम प्राधिकारी के आदेश पर तीन घंटे के भीतर गैर-कानूनी सामग्री हटाना अनिवार्य होगा,

जबकि संवेदनशील शिकायतों पर दो घंटे के भीतर कार्रवाई करनी होगी। सरकार ने एआई और डीपफेक सामग्री पर भी कड़ी निगरानी के लिए नए प्रावधान लागू किए हैं तथा प्लेटफॉर्म को ऐसे कंटेंट पर स्पष्ट लेबल और ट्रेस किए जा सकने वाले मेटाडेटा रखने के निर्देश दिए हैं।

अनुराग जैन बने नीति आयोग के नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अनुराग जैन को नीति आयोग का नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया है। वह 1989 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी हैं। नियुक्ति से पहले वह मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे।

अनुराग जैन प्रशासनिक और नीति निर्माण के क्षेत्र में लंबे अनुभव रखते हैं। उनकी नियुक्ति को नीति आयोग की कार्यप्रणाली को और गति देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। केंद्र सरकार ने उनकी नियुक्ति संबंधी आदेश जारी कर दिए हैं।

मुनाफे वाली BPCL घाटे में चली गई, पेट्रोल-डीजल सस्ते में बेचे पर भारी नुकसान

सरकारी तेल कंपनी भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड को चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में 3,962.13 करोड़ रुपये का भारी भरकम घाटा हुआ है. पिछले 15 तिमाहियों में यह कंपनी का पहला तिमाही घाटा है. यह आंकड़ा इसलिए भी चौंकाने वाला है क्योंकि पिछले साल ठीक इसी तिमाही में कंपनी ने 3,333.97 करोड़ रुपये का तगड़ा मुनाफा कमाया था.

इस भारी नुकसान के पीछे सबसे बड़ी वजह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चा तेल (क्रूड ऑयल) का अचानक बहुत महंगा होना है. दरअसल, 28 फरवरी को अमेरिका और इजरायल ने ईरान पर हमला किया था, जिसके बाद ईरान ने भी पलटवार किया. पश्चिम एशिया में भड़की इस जंग के कारण ग्लोबल मार्केट में सप्लाई बिगड़ी और कच्चे तेल की कीमतों में 50 फीसदी से ज्यादा का जबरदस्त उछाल आ गया.

नालों की सफाई, जलनिकासी, बाढ़ प्रबंधन और स्वास्थ्य सेवाओं की तैयारियों की समीक्षा, अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

जलभराव पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं, जवाबदेही तय कर होगी कड़ी कार्रवाई: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

समाज जागरण

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट कहा है कि प्रदेश के शहरों में जलभराव की समस्या किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नालों और नालियों की समयबद्ध सफाई, पंपिंग स्टेशनों का प्रभावी संचालन तथा जलनिकासी की समुचित व्यवस्था हर हाल में सुनिश्चित की जाए। मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी कि जलभराव रोकने में किसी भी स्तर पर लापरवाही या शिथिलता पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय करते हुए उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी।

बुधवार को एनेक्सी भवन सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने जिले के विकास कार्यों, बाढ़ प्रबंधन, जलनिकासी व्यवस्था तथा स्वच्छता अभियान की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि मानसून के दौरान कहीं भी जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां समय

रहते पूरी कर ली जाएं।

मुख्यमंत्री ने सभी नालों और नालियों की नियमित सफाई कराने तथा उन्हें अतिक्रमण मुक्त कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर प्रभावी रोक लगाने पर जोर देते हुए कहा कि प्लास्टिक के कारण नालियां जाम होती हैं और जलभराव की समस्या बढ़ती है। उन्होंने नाला निर्माण एवं मरम्मत संबंधी प्रस्ताव समय पर तैयार कर निर्धारित अवधि में कार्य पूर्ण करने के निर्देश भी दिए।

समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने राप्ती कॉम्प्लेक्स, गोरक्ष एंक्लेव, विजय चौराहा और धर्मशाला क्षेत्र में जलभराव की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि नालों की सफाई के बाद उन्हें व्यवस्थित ढंग से ढका जाए तथा नगर निगम के सभी पंप पूरी क्षमता से संचालित किए जाएं। साथ ही नागरिकों को नालियों में कूड़ा न डालने के लिए जागरूक करने और नियमित स्वच्छता अभियान चलाने के निर्देश भी दिए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रत्येक वार्ड, मलिन बस्तियों और खाली पड़े भूखंडों की नियमित सफाई सुनिश्चित करने तथा कूड़ा निस्तारण की प्रभावी व्यवस्था विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वच्छता अभियान को नियमित गतिविधि बनाने और इसमें जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक भवनों में भी स्वच्छता बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया।

उन्होंने शहरी व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के लिए स्ट्रीट वेंडरों को व्यवस्थित करने, सभी स्ट्रीट लाइटों को क्रियाशील रखने तथा सीसीटीवी कैमरों को अद्यतन स्थिति में बनाए रखने के निर्देश दिए। इसके अलावा बेसहारा गोवंश को सड़कों से हटाने और आवारा कुत्तों के लिए डॉग शेल्टर विकसित करने की आवश्यकता भी बताई।

स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि जिला अस्पताल सहित सभी सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर एंटी स्नेक वेनम तथा एंटी रैबीज वैक्सीन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहे, ताकि किसी भी आपात स्थिति में मरीजों को तत्काल उपचार मिल सके।

बाढ़ प्रबंधन की तैयारियों की समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री ने तटबंधों की नियमित निगरानी, बाढ़ चौकियों को सक्रिय रखने तथा राहत शिविरों में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने बाढ़ संभावित क्षेत्रों में संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए विशेष सतर्कता बरतने और क्षतिग्रस्त सड़कों की समयबद्ध मरम्मत सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया। (इनपुटः आईएएनएस)

विश्व में चौथे स्थान पर भारत, वर्ष 2030 के लक्ष्य को लेकर सरकार ने तेज की तैयारियां

भारत पवन ऊर्जा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर

स्थापित क्षमता 57,443 मेगावाट हुई, एक वर्ष में 106 अरब यूनिट विद्युत उत्पादन

समाज जागरण

नई दिल्ली। भारत स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा के क्षेत्र में लगातार नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। देश में पवन ऊर्जा (विंड एनर्जी) की स्थापित क्षमता बढ़कर 57,443 मेगावाट हो गई है। वहीं, वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान पवन ऊर्जा परियोजनाओं से 106 अरब यूनिट विद्युत का उत्पादन दर्ज किया गया। यह जानकारी केंद्र सरकार ने मंगलवार को लोकसभा में दी।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीपद येसो नाइक ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में बताया कि पिछले तीन वित्तीय वर्षों के दौरान पवन ऊर्जा उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल विंड एनर्जी काउंसिल (जीडब्ल्यूईसी) की वर्ष 2026 की रिपोर्ट के अनुसार, 31 दिसंबर 2025 तक पवन ऊर्जा स्थापित क्षमता के मामले में भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा देश बन चुका है।

हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल

राज्य मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार के लिए व्यापक स्तर पर कार्य कर रही है। ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर योजना के अंतर्गत नई विद्युत प्रसारण लाइनों और उपकेंद्रों का निर्माण किया जा रहा है, ताकि पवन एवं सौर ऊर्जा का निर्बाध प्रसारण सुनिश्चित किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, 30 जून 2025 तक चालू हुई सौर एवं पवन ऊर्जा

परियोजनाओं को अंतरराज्यीय विद्युत प्रसारण प्रणाली (आईएसटीएस) शुल्क में छूट प्रदान की गई है। इसके बाद शुरू होने वाली परियोजनाओं के लिए चरणबद्ध शुल्क व्यवस्था लागू की गई है।

वर्ष 2030 के लक्ष्य के अनुरूप तैयार हो रहा आधारभूत ढांचा

सरकार ने वर्ष 2030 तक निर्धारित नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए देशभर में विद्युत प्रसारण अवसंरचना के विस्तार की व्यापक योजना तैयार की है। साथ ही इस क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को स्वचालित मार्ग (ऑटोमैटिक रूट) के माध्यम से अनुमति प्रदान की गई है।

आरपीओ और आरसीओ का पालन होगा अनिवार्य

सरकार ने वर्ष 2029-30 तक नवीकरणीय ऊर्जा क्रय दायित्व (आरपीओ) तथा नवीकरणीय ऊर्जा उपभोग दायित्व (आरसीओ) के लक्ष्य भी निर्धारित किए हैं। ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 के अंतर्गत आने वाले सभी निर्धारित उपभोक्ताओं के लिए इनका पालन अनिवार्य होगा।

राम मंदिर के नए उएड की नियुक्ति तक 5 संत संभालेंगे संचालन, ट्रस्ट ने बनाई धार्मिक समिति

चढ़ावा प्रकरण पर एसआईटी रिपोर्ट का इंतजार, एसबीआई की कार्यप्रणाली पर ट्रस्ट ने जताई नाराजगी

समाज जागरण

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की मंगलवार को हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की नियुक्ति होने तक मंदिर का संचालन पांच संतों की धार्मिक समिति की देखरेख में होगा। ट्रस्ट ने बताया कि नए सीईओ के चयन में लगभग एक माह का समय लग सकता है।

ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद गिरी की अध्यक्षता में गठित धार्मिक समिति में स्वामी रामानंद दास, महंत राजकुमार दास, स्वामी विश्वप्रसन्न तीर्थ, स्वामी कमलनयन दास, स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती और स्वामी दिनेंद्रदास को शामिल किया गया है। बैठक में चढ़ावा गणना में कथित अनियमितताओं को लेकर एसआईटी जांच की प्रगति की समीक्षा की गई। ट्रस्ट ने कहा कि

मामले में एसआईटी की अंतिम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। ट्रस्ट ने मंदिर परिसर और चढ़ावा गणना कक्ष में लगे सीसीटीवी कैमरों की निगरानी व्यवस्था पर संतोष व्यक्त किया। साथ ही चढ़ावे में प्राप्त सोना-चांदी की मात्रा और शुद्धता की जांच के लिए आरबीआई की टकसाल (मिंट) के साथ वर्तमान व्यवस्था जारी रखने का निर्णय लिया गया।

बैठक में चढ़ावे की गणना से जुड़े कार्य में एसबीआई की लापरवाही पर भी न्यासियों ने नाराजगी जताई और संबंधित प्रक्रियाओं व व्यवस्थाओं की समीक्षा करने के निर्देश दिए।

आढ़तियों के चंगुल में ग्राहक-किसान, सरकार लाचार

संजय सक्सेना,लखनऊ,

भारतीय कृषि व्यवस्था की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि खेत की मिट्टी से उपज उगाने वाला किसान और रसोई घर का बजट संभालने वाला आम ग्राहक, दोनों एक ही चक्रव्यूह के दो अलग-अलग शिकार हैं। किसान दिन-रात पसीना बहाकर फसल तैयार करता है, लेकिन जब वह बाजार पहुंचता है तो उसकी जेब खाली रह जाती है। दूसरी तरफ, जब वही ग्राहक बाजार में सब्जियां या अनाज खरीदने जाता है, तो आसमान छूती महंगाई उसकी कमर तोड़ देती है। इस पूरी व्यवस्था के बीच एक ऐसा वर्ग पनप रहा है, जो बिना किसी शारीरिक मेहनत के पूरी मंडी प्रणाली पर अपना नियंत्रण जमाए बैठा है ये हैं बिचौलिए यानी 'आढ़ती'। खेत से लेकर ग्राहक की थाली तक के सफर में जो मुनाफा किसान के घर पहुंचना चाहिए था और जो राहत ग्राहक को मिलनी चाहिए थी, वह सब इन आढ़तियों की तिजोरियों में बंद हो रहा है। आज स्थिति यह बन चुकी है कि आढ़तियों के तय किए रेट पर ही किसान बेचने और ग्राहक खरीदने के लिए मजबूर हैं, और सरकार का तंत्र इस पूरे खेल में पूरी तरह मूकदर्शक बना नजर आता है। आंकड़ों पर नजर डालें तो इस शोषण की भयानक तस्वीर साफ दिखने लगती है। भारत में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएसओ) के आंकड़े बताते हैं कि देश में एक कृषि परिवार की औसत मासिक आय मात्र 10,218 रुपये के करीब है। इस मामूली सी रकम में किसान को अपनी खाद, बीज, डीजल, मजदूरी और परिवार के भरण-पोषण का खर्च चलाना पड़ता है। इसके ठीक विपरीत, रिजर्व बैंक और विभिन्न शोध संस्थानों की रिपोर्ट दशार्ती है कि किसान की उपज के अंतिम बाजार मूल्य (यानी जो दाम ग्राहक चुकाता है) का महज 25 से 35 प्रतिशत हिस्सा ही किसान की जेब तक पहुंच पाता है। उदाहरण के लिए, यदि बाजार में टमाटर या प्याज 60 रुपये प्रति किलो बिक रहा है, तो खेत पर किसान को इसका मुश्किल से 12 से 15 रुपये प्रति किलो ही मिलता है। बाकी का लगभग 65 से 75 प्रतिशत हिस्सा बिचौलियों, आढ़तियों, परिवहन और मंडी के विभिन्न स्तरों पर बंट जाता है। यह आंकड़ा साबित करता है कि असली पसीना बहाने वाले को नाममात्र की मजदूरी मिल रही है, जबकि बीच की कड़ी मुनाफा कूट रही है।

आढ़तियों का यह नेटवर्क इतना मजबूत और संगठित है कि वे मंडी में प्रवेश करते ही किसान की बेबसी का फायदा उठाना शुरू कर देते हैं। कृषि उपज मंडी समितियों (एपीएमसी) का गठन मूल रूप से इसलिए किया गया था ताकि किसानों को शोषण से बचाया जा सके और उन्हें पारदर्शी तरीके से अपनी फसल का सही दाम मिले। लेकिन समय के साथ ये मंडियां आढ़तियों के एकाधिकार का केंद्र बन गईं। आढ़ती ही यह तय करते हैं कि किसान की उपज की बोली किस दाम से शुरू होगी और किस भाव पर उसे खरीदा जाएगा। किसान के पास न तो अपनी फसल को लंबे समय तक स्टोर करने के लिए पर्याप्त शीत गृह (कोल्ड स्टोरेज) हैं और न ही उसके पास इतना धैर्य होता है कि वह दाम बढ़ने का इंतजार करे, क्योंकि उसे अगली फसल के लिए कर्ज चुकाना होता है। आढ़तियों को किसान की इस लाचारी का पूरा अहसास होता है। वे एकजुट होकर कृत्रिम रूप से दाम गिरा देते हैं, जिससे किसान औने-पौने दामों में अपनी उपज बेचने पर मजबूर हो जाता है।दूसरी ओर, जब यही माल मंडी से बाहर निकलकर खुदरा बाजार की ओर बढ़ता है, तो आढ़तियों का दूसरा खेल शुरू होता है। वे बाजार में आपूर्ति को नियंत्रित करके और अपने पास माल का भंडारण करके खुदरा कीमतों को कृत्रिम रूप से बढ़ा देते हैं। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के आंकड़ों के अनुसार, खाद्य मुद्रास्फीति का सीधा असर आम नागरिक की जेब पर पड़ता है। एक औसत भारतीय परिवार अपनी कुल आय का लगभग 40 से 45 प्रतिशत हिस्सा केवल भोजन पर खर्च करता है। जब आढ़तियों और थोक व्यापारियों के गठजोड़ के कारण सब्जियों और खाद्यान्न के दाम बढ़ते हैं, तो ग्राहक का पूरा मासिक बजट बिगड़ जाता है। ग्राहक मजबूरी में महंगे दामों पर सामान खरीदता है, यह सोचकर कि शायद इसका फायदा किसान को मिल रहा होगा, जबकि हकीकत में किसान पहले ही अपनी फसल कौड़ियों के भाव बेचकर खाली हाथ घर लौट चुका होता है।

इस पूरी व्यवस्था में सरकार और उसके प्रशासनिक ढांचे की भूमिका सबसे ज्यादा निराशाजनक रही है। कागजों पर तो किसान हितैषी कई योजनाएं हैं, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के दावे हैं और आवश्यक वस्तु अधिनियम जैसे कानून मौजूद हैं, लेकिन धरातल पर आढ़तियों पर किसी का नियंत्रण नहीं है। आज तक शायद ही ऐसा कोई उदाहरण देखने को मिला हो, जब किसी बड़े आढ़ती या गठजोड़ पर जमाखोरी या कीमतों में हेरफेर के लिए कोई कड़ी प्रशासनिक कार्रवाई की गई हो। जब भी महंगाई बढ़ती है, तो सरकारें थोड़े समय के लिए छापेमारी का नाटक करती हैं या आयात-निर्यात नीतियों में बदलाव करके इतिश्री कर लेती हैं, लेकिन आढ़तियों के इस मजबूत ढांचे पर कोई स्थायी जांच कमेटी या सख्त दंडात्मक कार्रवाई कभी नहीं देखने को मिलती। इसका मुख्य कारण आढ़तियों का राजनीतिक रूप से बेहद प्रभावशाली होना है। स्थानीय राजनीति से लेकर राज्य स्तर के नेताओं तक आढ़तियों का एक गहरा आर्थिक-राजनीतिक गठजोड़ काम करता है, जिसके कारण कानून के हाथ इन तक पहुंचते-पहुंचते बौने साबित हो जाते हैं।विश्व बैंक और नीति आयोग के कई अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में कृषि विपणन में सुधार न होने का सबसे बड़ा कारण मंडी का यह बंद ढांचा है। देश में लगभग 86 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसान हैं, जिनके पास एक या दो हेक्टेयर से कम जमीन है। ये छोटे किसान अपनी थोड़ी सी उपज लेकर दूर के बड़े बाजारों में नहीं जा सकते, इसलिए वे अपने नजदीकी आढ़ती पर ही पूरी तरह निर्भर हो जाते हैं। आढ़ती केवल व्यापारी नहीं होते, बल्कि वे इन किसानों को खाद-बीज के लिए अनौपचारिक रूप से कर्ज भी देते हैं। इस कर्ज के जाल में फंसा किसान अपनी फसल किसी अन्य को बेचने की स्थिति में ही नहीं रहता। यह आदतों और मजबूरियों का ऐसा दुष्चक्र बन चुका है, जिससे किसान चाहकर भी बाहर नहीं निकल पाता।

यदि हम वैश्विक तुलना करें तो विकसित देशों में किसान की उपज का लगभग 60 से 70 प्रतिशत हिस्सा सीधे किसान तक पहुंचता है, क्योंकि वहां 'खेत से थाली तक' का सीधा संपर्क या तो सहकारिता के माध्यम से है या फिर पारदर्शी डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए। भारत में 'ई-नाम' जैसी डिजिटल मंडी योजनाओं की शुरूआत जरूर की गई है, ताकि किसान देश की किसी भी मंडी में अपना माल बेच सके, लेकिन तकनीकी साक्षरता की कमी, इंटरनेट की सुस्त व्यवस्था और आढ़तियों के जमीनी दबदबे के कारण यह व्यवस्था भी अब तक आढ़तियों के तिलस्म को पूरी तरह तोड़ने में असफल रही है।परिणामस्वरूप, किसान लगातार कर्ज के बोझ तले दबता जा रहा है और देश में हर साल हजारों किसान आर्थिक तंगी के कारण आत्महत्या जैसे कदम उठाने पर मजबूर होते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े आज भी कृषि क्षेत्र में बढ़ती आर्थिक विषमता और मानसिक तनाव की दर्दनाक गवाही देते हैं। वहीं दूसरी तरफ, शहर का आम ग्राहक अपनी सीमित आय में कटौती करके महंगाई का डंक सहने को विवश है। इन दोनों के आंसुओं के बीच, मंडियों के शेड के नीचे बैठा आढ़ती वर्ग बिना किसी उत्पादन जोखिम के, बिना किसी प्राकृतिक आपदा के खतरे के, हर सीजन में करोड़ों का कारोबार कर रहा है। यह बेहद गंभीर प्रश्न है कि आखिर कब तक देश का अन्नदाता और देश का उपभोक्ता इस शोषणकारी व्यवस्था के चंगुल में फंसकर पिसते रहेंगे? जब तक आढ़तियों और बिचौलियों की इस एकाधिकारवादी व्यवस्था पर कड़ा प्रहार नहीं किया जाएगा, जब तक उनकी मनमानी कीमतों और जमाखोरी पर निष्पक्ष जांच बिठाकर कड़ी सजा का प्रावधान नहीं होगा, तब तक न तो किसान को उसकी मेहनत का वाजिब हक मिलेगा और न ही आम ग्राहक को महंगाई से राहत मिल पाएगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भारतीय मूल का वैश्विक नेतृत्व

महेन्द्र तिवारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज मानव इतिहास की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकों में गिनी जा रही है। जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन प्रणाली को बदला, इंटरनेट ने संचार और सूचना के स्वरूप को परिवर्तित किया, उसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता आने वाले दशकों में अर्थव्यवस्था, शासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित करने वाली है। इसी कारण दुनिया के विकसित देश केवल एआई तकनीक विकसित करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उसके सुरक्षित, जिम्मेदार और नैतिक उपयोग के लिए प्रभावी नीतियां भी बना रहे हैं। ऐसे समय में ब्रिटेन द्वारा भारतीय मूल के कनिष्क नारायण को देश का पहला समर्पित और कैबिनेट स्तर का कृत्रिम बुद्धिमत्ता मंत्री नियुक्त करना केवल एक राजनीतिक निर्णय नहीं बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाला कदम माना जा रहा है। यह नियुक्ति तकनीकी नेतृत्व, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और भारतीय प्रतिभा की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता का भी महत्वपूर्ण प्रतीक बन गई है।

कनिष्क नारायण का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ था। जब वे लगभग बारह वर्ष के थे, तब उनका परिवार ब्रिटेन के वेल्स चला गया। प्रारंभिक जीवन आर्थिक चुनौतियों से भरा रहा, लेकिन शिक्षा के प्रति समर्पण और प्रतिभा के बल पर उन्होंने आगे बढ़ते हुए ईटन कॉलेज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और बाद में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। यह यात्रा केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह दशार्ती है कि कठिन परिस्थितियों में भी शिक्षा और अवसर व्यक्ति को वैश्विक नेतृत्व तक पहुंचा सकते हैं।

राजनीति में आने से पहले कनिष्क नारायण ने ब्रिटिश सरकार की सिविल सेवा में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। उन्होंने कैबिनेट ऑफिस तथा पर्यावरण विभाग में नीतिगत कार्य किए और बाद में निजी क्षेत्र में भी रणनीतिक एवं आर्थिक विषयों पर अनुभव प्राप्त किया। इस विविध अनुभव ने उन्हें प्रशासन, सार्वजनिक नीति, तकनीकी परिवर्तन और आर्थिक विकास के बीच संबंधों को गहराई से समझने का अवसर दिया। यही कारण है कि उन्हें केवल एक राजनेता नहीं बल्कि नीति निर्माण और तकनीकी प्रशासन की समझ रखने वाले नेता के रूप में देखा जाता है।

साल 2024 के आम चुनाव में उन्होंने वेल ऑफ ग्लैमरगन निर्वाचन क्षेत्र से जीत हासिल की और वेल्स के पहले जातीय अल्पसंख्यक सांसद बने। इसके बाद उन्हें विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी विभाग में एआई और ऑनलाइन सुरक्षा से संबंधित जिम्मेदारी दी गई। इस दौरान उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन सुरक्षा, बौद्धिक संपदा, सेमीकंडक्टर, तकनीकी नवाचार तथा एआई सुरक्षा संस्थान जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्य किया। यही अनुभव आगे चलकर उन्हें ब्रिटेन के पहले कैबिनेट स्तर के एआई मंत्री के रूप में स्थापित करने का आधार बना।

ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री एंडी बर्नहम ने सरकार के पुनर्गठन के दौरान एआई को अलग और अधिक महत्व देते हुए इस मंत्रालय को कैबिनेट स्तर का दर्जा दिया। इसके साथ ही कनिष्क नारायण को कृत्रिम बुद्धिमत्ता मंत्री नियुक्त किया गया। यह निर्णय इस बात का संकेत है कि ब्रिटेन एआई को केवल तकनीकी विषय नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, सार्वजनिक सेवाओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से जुड़ा रणनीतिक क्षेत्र मानता है। इस नई व्यवस्था में एआई नीति का समन्वय सीधे सरकार के सर्वोच्च स्तर पर किया जाएगा।

आज पूरी दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में रोगों की शीघ्र पहचान, कृषि में बेहतर उत्पादन, शिक्षा में व्यक्तिगत शिक्षण, उद्योगों में स्वचालन, परिवहन में स्मार्ट सिस्टम और प्रशासन में डिजिटल सेवाओं के विस्तार के कारण एआई विकास का प्रमुख आधार बन चुका है। दूसरी ओर डीपफेक, साइबर अपराध, डेटा गोपनीयता, एल्गोरिद्मिक पक्षपात, गलत सूचना, कॉपीराइट विवाद और रोजगार पर संभावित प्रभाव जैसी चुनौतियां भी सामने हैं। इन परिस्थितियों में केवल तकनीक विकसित करना पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके लिए संतुलित कानून और जिम्मेदार नीतियां भी आवश्यक हैं। हाल के अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में भी नागरिकों ने एआई के विकास के साथ मजबूत सुरक्षा और नियमन को प्राथमिकता देने की आवश्यकता जताई है।

कनिष्क नारायण की नई जिम्मेदारी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यही है कि वे ऐसी नीतियां तैयार करें जो तकनीकी नवाचार को बाधित किए बिना सुरक्षा और नैतिकता सुनिश्चित करें। उन्हें यह संतुलन बनाना होगा कि उद्योगों को अनुसंधान और निवेश के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता मिले, लेकिन नागरिकों की गोपनीयता, डिजिटल अधिकार और सामाजिक हित भी सुरक्षित रहें। यह कार्य सरल नहीं है क्योंकि एआई तकनीक प्रतिदिन बदल रही है और उसके सामने आने वाली चुनौतियां भी लगातार विकसित हो रही हैं।

ब्रिटेन लंबे समय से स्वयं को एआई अनुसंधान और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। वहां विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय, अनुसंधान संस्थान और प्रौद्योगिकी कंपनियां सक्रिय हैं। सरकार चाहती है कि एआई आधारित स्टार्टअप, डेटा सेंटर और उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग सुविधाओं का विस्तार हो, जिससे निवेश और रोजगार दोनों बढ़ें। कनिष्क नारायण की नियुक्ति इसी व्यापक रणनीति का हिस्सा मानी जा रही है।

एआई मंत्री के रूप में उन्हें अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी मजबूत करना होगा। आज एआई की चुनौतियां किसी एक देश तक सीमित नहीं हैं। डीपफेक वीडियो, साइबर हमले, सीमा पार डेटा प्रवाह और वैश्विक डिजिटल कंपनियों के संचालन जैसे विषय अंतरराष्ट्रीय समन्वय की मांग करते हैं। इसलिए ब्रिटेन को यूरोप, अमेरिका, भारत तथा अन्य देशों के साथ मिलकर साझा मानक और सहयोग तंत्र विकसित करने होंगे। ऐसे प्रयासों में कनिष्क नारायण की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

उनकी नियुक्ति का भारतीय दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय मूल के लोग विश्व के अनेक देशों में राजनीति, उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के शीर्ष पदों तक पहुंचे हैं। अब भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण तकनीक मानी जा रही कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी भारतीय मूल के व्यक्ति का नेतृत्व संभालना इस बात का प्रमाण है कि भारतीय प्रतिभा वैश्विक स्तर पर निरंतर अपनी पहचान बना रही है। यह उपलब्धि उन लाखों भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा है जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सार्वजनिक नीति के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योगदान देना चाहते हैं।

हालांकि इस नियुक्ति के साथ अपेक्षाएं भी बहुत अधिक हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि केवल एआई मंत्रालय बना देने से समस्याओं का समाधान नहीं होगा। सरकार को स्पष्ट नियम, प्रभावी नियामक संस्थाएं, उद्योगों के साथ संवाद, अनुसंधान में निवेश और नागरिकों के हितों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। एआई का विकास तभी सफल माना जाएगा जब उसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचे और उसके जोखिमों को न्यूनतम रखा जा सके।

भविष्य में एआई वैश्विक शक्ति संतुलन को भी प्रभावित करेगा। जिस प्रकार पिछली शताब्दी में औद्योगिक क्षमता और बाद में सूचना प्रौद्योगिकी ने देशों की आर्थिक स्थिति निर्धारित की, उसी प्रकार आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता किसी भी राष्ट्र की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का प्रमुख आधार बनेगी। ऐसे समय में ब्रिटेन द्वारा एआई को कैबिनेट स्तर पर प्राथमिकता देना यह दशार्ता है कि सरकार भविष्य की चुनौतियों और अवसरों को गंभीरता से देख रही है।

कनिष्क नारायण की नियुक्ति केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं बल्कि बदलती वैश्विक राजनीति, तकनीकी नेतृत्व और नीति निर्माण की नई दिशा का प्रतीक है। उनकी शिक्षा, प्रशासनिक अनुभव, तकनीकी समझ और राजनीतिक नेतृत्व उन्हें इस चुनौतीपूर्ण भूमिका के लिए उपयुक्त बनाते हैं। यदि वे नवाचार, सुरक्षा, नैतिकता और आर्थिक विकास के बीच संतुलित नीति तैयार करने में सफल रहते हैं, तो ब्रिटेन वैश्विक एआई शासन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। साथ ही यह नियुक्ति भारतीय मूल के लोगों की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा को भी नई ऊंचाई प्रदान करेगी। आने वाले वर्षों में उनकी कार्यशैली और नीतियां केवल ब्रिटेन ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की एआई नीति और डिजिटल भविष्य पर प्रभाव डाल सकती हैं।

बुजुर्गों का सम्मान देश की स्वस्थ परंपरा बने,

सामाजिक संतुलन में बुजुर्गों की महिती भूमिका’

यह विडंबना है जब मनुष्य अत्यंत अनुभवी परिपक्व,प्रबुद्ध शालीन हो जाता है तब उसके अनुभव कार्य की लगनशीलता और परिपक्व मस्तिष्क का हम सदुपयोग नहीं करते उन्हें अवकाश प्रदान कर देते हैं। यह भी इस सिक्के का दूसरा पहलू है कि इस उम्र में शरीर में थकावट और वृद्धावस्था आ जाती है पर हम उन्हें सम्मान और यथा योग्य महत्व देकर उनके मार्गदर्शन और परामर्श का यथोचित लाभ लेकर अपने जीवन,व्यवसाय अथवा नई नीतियों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, पर अमूमन ऐसा होता नहीं है।

वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्याओं से घिरी हुई अवस्था माना जाता है, क्योंकि इस अवस्था में वृद्धों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।समय की रफ्तार के साथ समाज में अनेक परिवर्तन होने लगे हैं। नवीन पीढ़ी के लोग पुराने विचारों के लोगों का उनके जीवन में हस्तक्षेप उचित ना समझ कर बर्दाश्त नहीं करते हैं,इसी कारण युवा पीढ़ी बुजुर्गों और वृद्धों के विचारों की गहन उपेक्षा करने लगते हैं और बुजुर्गों को लगता है कि उनकी समाज में उपयोगिता धीरे धीरे कम हो रही है। जीवन का सांध्य काल आने पर मनुष्य कई समस्याओं से घिर जाता है। सबसे बड़ी समस्या शारीरिक क्षमता में कमी आ जाने की है, शरीर की सभी इंद्रियां धीमी पड़ जाती हैं,अनेक प्रकार की व्याधियों से शरीर घिर जाता है और मनुष्य धीरे-धीरे शरीर पर नियंत्रण खोता जाता है। उम्र के वृद्धावस्था के पड़ाव पर अनेक शारीरिक बीमारियों के साथ-साथ मूल समस्या मानसिक व्याधि की होती है। सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों में वेतन भोगी कर्मचारी को एक निर्धारित आयु के बाद सेवानिवृत्त कर दिया जाता है और यह मान लिया जाता है कि वह व्यक्ति अब शारीरिक एवं मानसिक श्रम के योग्य नहीं रहा चाहे वह व्यक्ति स्वस्थ ही क्यों ना हो। इसके बाद उस व्यक्ति के जीवन में अनेक कठिनाई आने लगती हैं। जैसे ही व्यक्ति की आर्थिक उपयोगिता समाज में कम होने लगती है, वह समाज के लिए अनुपयोगी मान लिया जाता है और इस अवस्था में पहुंचने के बाद मानसिक तनाव की स्थिति बनने लगती है। लोगों के संपर्क में न रहना, सहयोगी तथा मित्रों की मृत्यु भी मानसिक तनाव का बड़ा कारण होती है। आत्मविश्वास की धीरे-धीरे कमी होने लगती है, जिससे मानसिक विकृति अकेलापन आदि जैसे रोगों का निर्माण होने लगता है। इस अवस्था में मान सम्मान की कमी की समस्या तो होती ही है, दूसरी तरफ सीमित तथा अल्प धन की उपलब्धता के कारण आर्थिक कष्ट भी वृद्धों को उठाना पड़ता है। इसके साथ ही परिवार तथा समाज की नजरों में व्यक्ति अनुपयोगी, बोझ, फालतू समझा जाने लगता है, जिससे बुजुर्ग व्यक्ति के मन में एक प्रकार की वितृष्णा आने लगती है। और कई बुजुर्ग इस अवहेलना को ना बर्दाश्त कर आत्महत्या तक कर बैठते हैं। जो व्यक्ति कुछ समय पहले तक महत्वपूर्ण था, विशिष्ट था वह अचानक ही बोझ समझा जाने लगता है। उसके मान सम्मान एवं भावनाओं का महत्व बहुत कम हो जाता है। भागदौड़ वाली इस जिंदगी में युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों से एक दूरी बनाना शुरू कर देती है और वह व्यक्ति अकेला ही रह जाता है। जब मनुष्य अपने को एकाकी समझने लगता है तो यह उसके जीवन का सर्वाधिक कठिन समय एवं पल होता है। आत्मविश्वास जनित प्रेरणा की कमी वृद्धावस्था को बोझिल बना देती है। व्यक्ति की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है, दूसरों पर निर्भरता बढ़ने लगती है। नई पीढ़ी द्वारा उसे अकेला छोड़ दिया जाता है। यही परिस्थिति वृद्धा अवस्था के लिए एक अभिशाप की तरह होती है। वृद्धावस्था में मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक कष्ट के प्रमुख कारणों में से संयुक्त परिवार का विघटन भी है। युवा पीढ़ी द्वारा अपने मां-बाप से अलग होकर रहने की चाहत हमारे देश में एक गंभीर समस्या पैदा करती है। वृद्ध व्यक्ति या दंपत्ति को जिस आयु में पुत्र, पुत्रियों की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है, ऐसे समय में पुत्र द्वारा उनकी देखभाल छोड़कर अलग रहने के लिए अलग मकान बनाना या किराए पर रहना, उस दंपत्ति या व्यक्ति को मानसिक रूप से प्रताड़ित भी करती है। भारत देश वही देश है यहां की संस्कृति में परिवार के बुजुर्ग को भगवान के समान माना जाता था, किंतु संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन के कारण आज की नई युवा पीढ़ी ना तो बड़ों के अनुशासन में रहना चाहती है नहीं उन्हें किसी प्रकार का आदर सम्मान देना चाहती है। औद्योगिकरण और विसंस्कृतिकरण प्रणाली के फल स्वरुप युवा पीढ़ी के रहन-सहन एवं जीवन शैली में तीव्र बदलाव देखा जा रहा है। इस युग में व्यक्ति जितना अपने कार्यों में व्यस्त हो गया है कि उसको परिवार के साथ बैठने, रहने की फुर्सत ही नहीं मिल पाती। भारत में बदलते परिवेश में ओल्ड एज होम की अवधारणा तेजी से बल पकड़ती जा रही है। नई पीढ़ी तरह पुरानी पीढ़ी के बीच एक तरह कम्युनिकेशन गैप भी आ जाता है, जो बुजुर्गों के लिए एक बड़ी समस्या होती है। बुजुर्ग दंपत्ति हो या व्यक्ति के पास जब तक धन रहता है तब तक उनके पुत्र, पुत्री उनका ख्याल रखते हैं और जब वह धनहीन हो जाते हैं, तो उन्हें नकार दिया जाता है ।यह एक बड़ी समस्या आज बुजुर्गों के सामने यक्ष प्रश्न बनकर खड़ी है। व्यक्ति को बुजुर्ग अवस्था में जब सबसे ज्यादा धन की आवश्यकता होती है तब उसके पास धन नहीं होता है। यह धन की कमी उपेक्षा का बड़ा कारण भी बनती है। युवा पीढ़ी का व्यक्तिगत स्वार्थ एवं धन के प्रति आकर्षण भी बुजुर्गों के प्रति प्रभाव तथा उपेक्षा का मूल कारण होता है।

व्यक्ति का जब सर्वश्रेष्ठ काल होता है तब उपेक्षित और समस्या ग्रस्त होकर अवसाद ग्रस्त हो जाता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि रॉबर्ट ब्राउनिंग वृद्धावस्था के बारे में लिखा है

मेरे साथ रहो, रुको वृद्ध हो,
अभी जीवन का सर्वोत्तम शेष है।

वृद्ध व्यक्ति भी मानव है, उसे भी संवेदना, सहानुभूति और प्यार की आवश्यकता होती है। नई पीढ़ी को चाहिए कि वृद्धों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें उनकी लगातार सेवा करनी चाहिए, उनके मार्गदर्शन उनका परामर्श परिवार तथा समाज के लिए जल कल्याणकारी होता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार उनका आशीर्वाद उनकी शुभकामनाएं लोक मंगलकारी होती हैं यह माना जाता है कि बुजुर्ग का आशीर्वाद ईश्वर के आशीर्वाद जैसा ही होता है।

संजीव ठाकुर, वरिष्ठ
पत्रकार,स्तंभकार,
चिंतक,लेखक, रायपुर
छत्तीसगढ़ ,9009 415 415,

संवाद की डोर, क्रोध की मशाल...!

फिर सड़कों पर "शोर" उठा,
फिर मन में सवाल जगे,
लोकतंत्र की चौखट पे क्यों ऐसे
बवंडर दिखने लगे?
राजधानी की धड़कन ने फिर से
आह भरी चुपचाप,
आँसू, धक्का, भीड़, विवशता
सभी ने ओढ़ा नकाब।

जब संवाद की डोर टूटे, क्रोध
मशाल बनके आता है,
सत्य कहीं कोनों में सिमटकर,
झूठ उछलता गाता है।
कुर्सी हो या फिर आंदोलन,
दोनों की है एक कसौटी,
जनहित सबसे ऊपर हो, ना हो
सिर्फ सत्ता की रोटी।

यहाँ पत्थर से "समाधान" नहीं,
लाठी से विश्वास नहीं,
घाव किसी के हों लेकिन, उनसे
कोई "विकास" नहीं।
दिल्ली केवल "शहर" नहीं,
भारत की बड़ी पहचान है,
इसकी हर एक पीड़ा में छिपी
"लोकतंत्र" की जान है।

आओ ऐसा पथ चुनें जहाँ
मतभेद रहें, "मनभेद" नहीं,
पुनः संवादों की ज्योति जले,
हिंसा का फिर भेद नहीं।
जन की आशा कहती है, सब
मिलकर ये प्रण कर लें,
लोकतंत्र की गरिमा खातिर प्रेम,
विवेक का दीप जलें।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)
मो. 98260 25986(स्व-
रचित, मौलिक व अप्रकाशित)

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक रमन कुमार झा द्वारा सांई प्रिंटिंग प्रेस बी-42 सेक्टर 07 नोएडा से मुद्रित कराकर नियर दुर्गा पब्लिक स्कूल श्याम लाल कॉलोनी बरौला सेक्टर 49 नोएडा 201304, गौतमबुद्धनगर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
संपर्क 9891706853, संपादक- रमन कुमार झा, समस्त विवादों का निपटारा गौतमबुद्धनगर न्यायालय मे होगा। Website: https://samajjagran.in/ Email: vatankiawaz@gmail.com UPHIN/2021/84200

हाईराइज सोसायटियों में घर के पास बनेंगे मतदान केंद्र

जिला निर्वाचन अधिकारी ने आरडब्ल्यूए-एओए पदाधिकारियों के साथ की बैठक, दो दिन में मांगे सुझाव

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। जिले की बहुमंजिली आवासीय सोसायटियों और सेक्टरों में रहने वाले मतदाताओं को उनके घर के निकट मतदान केंद्र उपलब्ध कराने की दिशा में जिला प्रशासन ने कवायद तेज कर दी है। इसी क्रम में बुधवार को जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आरडब्ल्यूए एवं एओए के अध्यक्षों, सचिवों और अन्य पदाधिकारियों की बैठक आयोजित की गई।

बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार 1200 मतदाताओं के मानक के आधार पर वर्तमान मतदेय स्थलों का पुनर्गठन तथा आवश्यकता के अनुसार नए मतदान केंद्रों का चिन्हांकन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य मतदाताओं को उनके निवास के निकट, सुगम एवं सुविधाजनक मतदान केंद्र उपलब्ध कराना है।

उन्होंने बताया कि जिन हाईराइज सोसायटियों और सेक्टरों में 300 से 1200 मतदाता निवास करते हैं तथा जहां सुरक्षित वातावरण के साथ आवश्यक मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं, वहां नए मतदेय स्थल स्थापित करने के संबंध में सुझाव आमंत्रित किए गए हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने आरडब्ल्यूए एवं एओए पदाधिकारियों से अपील की कि यदि उनके पास इस संबंध में कोई व्यवहारिक एवं जनहितकारी सुझाव या प्रत्यावेदन हो तो उसे अगले दो दिनों के भीतर जिला निर्वाचन कार्यालय अथवा ई-मेल adeo-gbn@nic.in पर उपलब्ध कराएं, ताकि नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जा सके।

उन्होंने श्रमिक बहुल क्षेत्रों में रहने वाले मतदाताओं की सुविधा पर भी विशेष जोर देते हुए कहा कि ऐसे क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त मतदान केंद्रों के संबंध में सुझाव दिए जाएं, जिससे प्रत्येक मतदाता को निकटतम मतदान केंद्र की सुविधा मिल सके।

बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतदेय स्थलों के निर्धारण, 1200 मतदाताओं के मानक तथा भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों की विस्तृत जानकारी दी।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी भालचंद्र त्रिपाठी, उप जिला निर्वाचन अधिकारी अजीत कुमार सिंह, प्रभारी सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी एवं एसडीएम सदर (न्यायिक) अरुण कुमार, तहसीलदार जेवर प्रतीक चौहान, ईओ दादरी शालिनी गुप्ता सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं आरडब्ल्यूए-एओए के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पोषण योजनाओं में लापरवाही बर्दाश्त नहीं, पात्र लाभार्थियों तक समय पर पहुंचे पुष्टाहार : जिलाधिकारी

जिला पोषण समिति की बैठक में योजनाओं की समीक्षा, मातृ एवं शिशु पोषण पर विशेष फोकस के निर्देश

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पोषण समिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग की विभिन्न योजनाओं, पोषण ट्रैकर, संभव अभियान-6.0, सक्षम आंगनवाड़ी 2.0, कुपोषण प्रबंधन तथा आंगनवाड़ी केंद्रों की आधारभूत सुविधाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि संभव अभियान-6.0 के तहत जुलाई माह में मातृत्व पोषण तथा अगस्त में जन्म से छह माह तक के शिशुओं के पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत पात्र गर्भवती महिलाओं का समय पर पंजीकरण सुनिश्चित करने तथा आशा और एएनएम के समन्वय से ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण दिवस का शत-प्रतिशत आयोजन कराने के निर्देश दिए।

बैठक में तीन से छह वर्ष तक के बच्चों की अपार (अढअअफ) आईडी बनाने तथा ई-कवच ऐप पर अति कुपोषित बच्चों की प्रविष्टि समयबद्ध रूप से पूर्ण कराने के भी निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने कहा कि पुष्टाहार वितरण में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए और सभी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

99.28 प्रतिशत बच्चों का हुआ मापन

जिला कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि जून 2026 में जिले के 85,174 पंजीकृत बच्चों में से 84,557 बच्चों का मापन किया गया, जिससे 99.28 प्रतिशत मापन दक्षता प्राप्त हुई।

80 प्रतिशत से अधिक लाभार्थियों को फेस रिकग्निशन से मिला राशन

बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत शिशु अमृत, बाल पुष्टिकर एवं संपूर्ण मातृ आहार सहित नई रेसिपी आधारित अनुपूरक पुष्टाहार का वितरण नियमित रूप से किया जा रहा है। वितरण व्यवस्था की निगरानी के लिए जीपीएस युक्त वाहन, क्यूआर कोड और फेस रिकग्निशन प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है। 21 जुलाई 2026 तक 80.19 प्रतिशत पात्र लाभार्थियों ने फेस रिकग्निशन प्रणाली के माध्यम से पुष्टाहार प्राप्त किया।

288 अति कुपोषित बच्चों की पहचान

समीक्षा में बताया गया कि जून माह में जिले में 288 अति कुपोषित तथा 2,155 मध्यम कुपोषित बच्चों की पहचान की गई। गंभीर स्थिति वाले बच्चों को पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां जून में 87 प्रतिशत बेड ऑक्यूपेंसी दर्ज की गई।

83 आंगनवाड़ी केंद्रों का होगा सुदृढ़ीकरण

बैठक में बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में स्वीकृत 83 सक्षम आंगनवाड़ी केंद्रों के सुदृढ़ीकरण का कार्य प्रगति पर है। केंद्रों पर इछअ वॉल पेंटिंग, पोषण वाटिका और वर्षा जल संचयन (रेन वाटर हार्वेस्टिंग) जैसी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इसके अलावा एचसीएल, सीआरवाई और पेटीएम फाउंडेशन के सहयोग से भी आंगनवाड़ी केंद्रों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है।

मदिरा दुकानों का औचक निरीक्षण, सीसीटीवी और पीओएस मशीन से शत-प्रतिशत बिक्री के निर्देश

आबकारी विभाग का विशेष अभियान, स्टॉक का किया सत्यापन

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। आबकारी आयुक्त उत्तर प्रदेश के निर्देश पर जिलाधिकारी एवं पुलिस आयुक्त गौतमबुद्धनगर के निर्देशन में आबकारी विभाग ने जिले में विशेष अभियान चलाकर विभिन्न मदिरा दुकानों का औचक निरीक्षण किया।

जिला आबकारी अधिकारी के नेतृत्व में 21 जुलाई 2026 को संचालित अभियान के दौरान जनपद की कम्पोजिट शॉप, मॉडल शॉप और प्रीमियम रिटेल शॉप का निरीक्षण कर मदिरा के स्टॉक का सत्यापन किया गया।

निरीक्षण के दौरान अनुज्ञापियों एवं विक्रेताओं को निर्देश दिए गए कि सीसीटीवी कैमरे इस प्रकार लगाए जाएं कि दुकान पर आने वाले ग्राहकों और बिक्री काउंटर पर होने वाली गतिविधियों की स्पष्ट रिकॉर्डिंग हो सके। साथ ही सभी मदिरा दुकानों पर पीओएस मशीन के माध्यम से शत-प्रतिशत बिक्री सुनिश्चित करने के लिए सख्त निर्देश जारी किए गए। आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया कि अभियान आगे भी जारी रहेगा और नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित अनुज्ञापियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

अपने व्यापार का करें प्रचार प्रसार

दैनिक समाज जागरण मे खबर और विज्ञापन देने के लिए संपर्क करे। न्यूज पोर्टल पर चलवाये मात्र 200 रुपये रोज मे।

भाजपा का बूथ अध्यक्ष सम्मेलन संपन्न, संगठन सशक्त बनाने का आह्वान

महेश चौहान बोले- नोएडा का हर बूथ बने भाजपा का सबसे मजबूत संगठनात्मक केंद्र

समाज जागरण/संदीप गर्ग

नोएडा। भारतीय जनता पार्टी नोएडा महानगर की ओर से बुधवार को सेक्टर-91 स्थित पंचशील बालक इंटर कॉलेज में महानगर अध्यक्ष महेश चौहान के नेतृत्व में भव्य बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में संगठन की आगामी कार्ययोजना, बूथ सशक्तिकरण एवं संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व महापौर आशु वर्मा तथा विशिष्ट अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं गौतमबुद्धनगर सांसद डॉ. महेश शर्मा रहे। सम्मेलन में बड़ी संख्या में बूथ अध्यक्षों, मंडल पदाधिकारियों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

'बूथ जीता तो चुनाव जीता'

मुख्य अतिथि आशु वर्मा ने कहा कि भाजपा की सबसे बड़ी ताकत उसके बूथ स्तर के कार्यकर्ता हैं। उन्होंने कहा कि "बूथ जीता तो चुनाव जीता" केवल नारा नहीं, बल्कि संगठन की कार्यशैली का आधार है। उन्होंने सभी बूथ अध्यक्षों से मतदाताओं से निरंतर संपर्क बनाए रखने और केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का आह्वान किया।

उन्होंने संगठन के वार्षिक कार्यक्रमों को प्रत्येक बूथ पर प्रभावी ढंग से आयोजित करने की भी अपील की।

बूथ अध्यक्ष संगठन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी : डॉ. महेश शर्मा

सांसद डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि भाजपा आज विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन इसलिए है क्योंकि उसका बूथ स्तर तक मजबूत नेटवर्क है। उन्होंने कहा कि बूथ अध्यक्ष संगठन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं और उन्हें नए मतदाताओं, लाभार्थियों एवं आम जनता से लगातार संवाद बनाए रखना चाहिए।

उन्होंने कार्यकर्ताओं से केंद्र एवं उत्तर प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को घर-घर तक पहुंचाने और सेवा, अनुशासन व संगठन की भावना के साथ कार्य करने का आह्वान किया।

हर बूथ को मजबूत बनाने का लक्ष्य

सम्मेलन के समापन पर महानगर अध्यक्ष महेश चौहान ने सभी बूथ अध्यक्षों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नोएडा महानगर का प्रत्येक बूथ भाजपा का सबसे मजबूत संगठनात्मक केंद्र बने, यही संगठन का लक्ष्य है। उन्होंने बूथ अध्यक्षों को निर्देश दिए कि संगठन द्वारा निर्धारित सभी कार्यक्रमों का समयबद्ध आयोजन सुनिश्चित करें तथा उनकी रिपोर्ट एवं फोटो संगठन को उपलब्ध कराएं।

कार्यक्रम का समापन 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के उद्घोष के साथ हुआ।

कार्यक्रम में पूर्व विधायक विमला बाथम, योगेंद्र चौधरी, राकेश शर्मा, अमित त्यागी, चंदगीराम यादव, संजय बाली, कार्यक्रम संयोजक ओमवीर अवाना, डिम्पल आनंद, पंकज झा, अमित नागपाल, रामनिवास यादव, विपुल शर्मा, मंडल अध्यक्ष प्रदीप चौहान, गौतम शर्मा, मनीष तिवारी, शशिधर उपाध्याय, दीनबंधु कुमार, सतनारायण महावर, नीरज चौधरी, रामकिशन यादव सहित बड़ी संख्या में शक्ति केंद्र संयोजक, बूथ अध्यक्ष एवं पार्टी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जूनियर बालक फुटबॉल टीम चयन ट्रायल 24 जुलाई को

प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों का होगा चयन, आधार कार्ड व जन्मतिथि प्रमाण-पत्र लाना अनिवार्य

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। प्रदेश स्तरीय समन्वय जूनियर बालक फुटबॉल प्रतियोगिता के लिए जनपद गौतमबुद्धनगर की टीम के चयन हेतु 24 जुलाई को जिला स्तरीय चयन-ट्रायल आयोजित किए जाएंगे। चयनित खिलाड़ी 25 जुलाई को मेरठ में होने वाले मंडलीय ट्रायल्स में हिस्सा लेंगे।

प्रभारी क्रीड़ा अधिकारी डॉ. परवेज अली ने बताया कि खेल निदेशालय उत्तर प्रदेश एवं क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी, मेरठ मंडल के निदेशानुसार यह चयन प्रक्रिया आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता में वही खिलाड़ी भाग ले सकेंगे जिनकी जन्मतिथि 1 जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2012 के बीच हो।

जिला स्तरीय चयन-ट्रायल 24 जुलाई को अपराह्न 3 बजे एस्टर पब्लिक स्कूल, डेल्टा-2, ग्रेटर नोएडा में आयोजित होंगे। चयनित खिलाड़ियों के लिए 25 जुलाई को प्रातः 10 बजे कैलाश प्रकाश स्टेडियम, मेरठ में मंडलीय ट्रायल्स होंगे। इसके बाद प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता 1 से 8 अगस्त 2026 तक डॉ. भीमराव आंबेडकर स्पोर्ट्स स्टेडियम, मऊ में आयोजित की जाएगी।

डॉ. परवेज अली ने बताया कि ट्रायल में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को आधार कार्ड तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा सत्यापित जन्मतिथि प्रमाण-पत्र की छायाप्रति साथ लाना अनिवार्य होगा। जन्मतिथि प्रमाण-पत्र पर तिथि अंक एवं शब्द दोनों में स्पष्ट रूप से अंकित होनी चाहिए। निर्धारित आयु एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत न करने वाले खिलाड़ियों को चयन प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाएगा।

नोएडा में 2.48 करोड़ रुपये की अवैध दवाएं बरामद

सेक्टर-76 स्थित फ्लैट पर संयुक्त छापेमारी, एक आरोपी गिरफ्तार

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। नोएडा के सेक्टर-76 स्थित एक फ्लैट में अवैध रूप से संग्रहित लगभग 2.48 करोड़ रुपये मूल्य की दवाएं बरामद की गई हैं। संयुक्त छापेमारी के दौरान एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि मामले में आगे की विधिक कार्रवाई जारी है।

औषधि निरीक्षक जयसिंह ने बताया कि अंतरराज्यीय प्रकोष्ठ, अपराध शाखा, चाणक्यपुरी (नई दिल्ली) से प्राप्त सूचना एवं वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर सीडीएससीओ उत्तर जोन, गाजियाबाद, अपराध शाखा, नई दिल्ली तथा औषधि विभाग गौतमबुद्धनगर की संयुक्त टीम ने अमरापल्ली प्रिंसली एस्टेट, सेक्टर-76 स्थित फ्लैट संख्या जे-402 पर छापेमारी की।

कार्रवाई के दौरान फ्लैट में आनंद कुमार, बसंत लाल वर्णवाल एवं प्रीति मौजूद मिले। जांच में पता चला कि फ्लैट का उपयोग बड़ी मात्रा में तैयार औषधियों के अवैध भंडारण के लिए किया जा रहा था। मौके से गोलियां, कैप्सूल, इंजेक्शन, टीके, ह्यूमन एल्ब्यूमिन, इम्युनोग्लोबुलिन, रेबीज वैक्सीन, सर्पदंश एंटीसीरम सहित कई महंगी एवं जीवनरक्षक जैविक दवाएं बरामद की गईं।

जांच में कई दवाओं पर "सरकारी आपूर्ति, बिक्री के लिए नहीं" अंकित मिला। इसके अलावा, जिन दवाओं को 2 से 8 डिग्री सेल्सियस तापमान पर सुरक्षित रखा जाना चाहिए था, उन्हें सामान्य कमरे के तापमान पर रखा गया था, जिससे उनके दुरुपयोग और गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका जताई गई।

छापेमारी में जब्त दवाओं का कुल मूल्य 2,48,66,658.31 रुपये आंका गया है। जांच के लिए आठ दवा उत्पादों के नमूने एकत्र किए गए हैं, जबकि आयातित दवाओं के नमूने सीडीएससीओ द्वारा अलग से लिए जाएंगे। कार्रवाई के दौरान आनंद कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया तथा जब्त दवाओं और अन्य सामग्री को कब्जे में लेकर अग्रिम विधिक कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

महिला आयोग की सदस्य डॉ. मीनाक्षी भराला ने सुनी महिलाओं की फरियाद

19 मामलों की जनसुनवाई, 8 शिकायतों का मौके पर निस्तारण; अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य डॉ. मीनाक्षी भराला की अध्यक्षता में बुधवार को विकास भवन सभागार में महिला जनसुनवाई का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आई महिलाओं ने अपनी शिकायतें आयोग के समक्ष रखीं। जनसुनवाई के दौरान पुलिस विभाग से संबंधित 19 प्रकरणों की सुनवाई की गई, जिनमें 8 मामलों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया।

डॉ. मीनाक्षी भराला ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शेष मामलों का प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि महिलाओं से जुड़े मामलों में संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए पीड़ितों को शीघ्र न्याय दिलाना सभी संबंधित विभागों की जिम्मेदारी है।

उन्होंने पुलिस, महिला कल्याण विभाग तथा अन्य अधिकारियों को निर्देशित किया कि महिला फरियादियों के साथ सम्मानजनक एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार किया जाए तथा उनकी समस्याओं का निष्पक्ष समाधान सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने कहा कि राज्य महिला आयोग महिलाओं को न्याय दिलाने के साथ-साथ उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का भी कार्य कर रहा है।

'शक्ति संवाद' में छात्राओं को किया जागरूक

जनसुनवाई के बाद डॉ. मीनाक्षी भराला ने महामाया बालिका इंटर कॉलेज, सेक्टर-44, नोएडा में आयोजित 'शक्ति संवाद' कार्यक्रम में छात्राओं से संवाद किया। उन्होंने छात्राओं को महिला सुरक्षा, शिक्षा, आत्मनिर्भरता और संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी भालचंद्र त्रिपाठी, डीसीपी महिला सुरक्षा सुनीति, परियोजना निदेशक डीआरडीए नेहा सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी मनोज कुमार पुष्कर, जिला विद्यालय निरीक्षक चंद्रशेखर, जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी आशीष कुमार सिंह, एडीसी जितेंद्र मौर्य सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सेक्टर-19 में नालियों पर अतिक्रमण हटाने के निर्देश, दो दिन की मोहलत

अतिक्रमण नहीं हटाने पर बारिश में जलभराव की जिम्मेदारी भवन स्वामियों की होगी : नोएडा प्राधिकरण

समाज जागरण/संदीप गर्ग

नोएडा। नोएडा प्राधिकरण ने सेक्टर-19 के ए, बी और सी ब्लॉक में नालियों एवं सड़क की पटरी पर किए गए अतिक्रमण को लेकर सख्त रुख अपनाया है। प्राधिकरण ने संबंधित भवन स्वामियों को दो दिन के भीतर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए हैं।

प्राधिकरण के अनुसार, 18 जुलाई 2026 को अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी (वी.टी.) द्वारा वर्क सर्किल-2 क्षेत्र का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में पाया गया कि सेक्टर-19 के अधिकांश भवन स्वामियों ने नालियों और सड़क की पटरी पर अतिक्रमण कर रखा है।

इससे नालियों की नियमित सफाई प्रभावित हो रही है और बरसात के दौरान जलभराव की समस्या उत्पन्न हो रही है। प्राधिकरण ने बताया कि संबंधित भवन स्वामियों को नोटिस जारी कर अतिक्रमण हटाने के लिए दो दिन का समय दिया गया था। जिन स्थानों से अतिक्रमण हटा लिया गया है, वहां नालियों की सफाई का कार्य शुरू कर दिया गया है।

प्राधिकरण ने चेतावनी दी है कि जिन भवन स्वामियों ने अब तक अतिक्रमण नहीं हटाया है, यदि वर्षा ऋतु के दौरान उन स्थानों पर जलभराव या कोई अप्रिय घटना होती है तो उसकी पूर्ण जिम्मेदारी संबंधित भवन स्वामी की होगी।

मोबाइल स्नैचिंग गैंग का पदार्फाश, 25 लूटे गए मोबाइल के साथ दो गिरफ्तार

नॉलेज पार्क पुलिस की कार्रवाई, फर्जी नंबर प्लेट लगी अपाचे बाइक और अवैध हथियार भी बरामद

समाज जागरण/संदीप गर्ग

ग्रेटर नोएडा। थाना नॉलेज पार्क पुलिस ने मोबाइल फोन स्नैचिंग करने वाले दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 25 छीने गए मोबाइल फोन, फर्जी नंबर प्लेट लगी एक अपाचे मोटरसाइकिल तथा दो अवैध तमंचे और कारतूस बरामद किए हैं।

पुलिस के अनुसार, 22 जुलाई 2026 को ग्राम गुर्जरपुर रेलवे अंडरपास के पास से फैजान पठान और फरमान को गिरफ्तार किया गया। फैजान पठान रबूपुरा क्षेत्र का निवासी है, जबकि फरमान मूल रूप से बुलंदशहर का रहने वाला है। दोनों के आपराधिक इतिहास की जानकारी जुटाई जा रही है।

राहगीरों को बनाते थे निशाना

पूछताछ में सामने आया कि आरोपी नॉलेज पार्क और ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में राह चलते लोगों से मोबाइल फोन छीनकर फरार हो जाते थे। इसके बाद महंगे मोबाइल फोन को कम कीमत पर बेचकर अवैध लाभ कमाते थे।

यह सामान हुआ बरामद

25 विभिन्न कंपनियों के छीने गए मोबाइल फोन, 2 अवैध तमंचे (.315 बोर) 2 जिंदा कारतूस फर्जी नंबर प्लेट लगी एक अपाचे मोटरसाइकिल. पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध थाना नॉलेज पार्क में संबंधित धाराओं एवं आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

हत्या के प्रयास के मामले में चार वांछित आरोपी गिरफ्तार

जेवर पुलिस ने दो अवैध तमंचे, कारतूस और खोखे किए बरामद

समाज जागरण/संदीप गर्ग

गौतमबुद्धनगर। थाना जेवर पुलिस ने हत्या के प्रयास के मामले में वांछित चार आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो अवैध तमंचे, दो जिंदा कारतूस और दो खोखा कारतूस बरामद किए हैं।

पुलिस के अनुसार, 22 जुलाई 2026 को छातंगा तिराहे से झम्मन, भोला उर्फ दिनेश, विजय उर्फ बिज्जो और विक्रम को गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान झम्मन और भोला उर्फ दिनेश के कब्जे से एक-एक अवैध तमंचा (.315 बोर), एक-एक जिंदा कारतूस और एक-एक खोखा कारतूस बरामद हुआ।

20 जुलाई को हुई थी फायरिंग

पुलिस के मुताबिक, 20 जुलाई 2026 को वादी ने थाना जेवर में शिकायत दर्ज कराई थी कि झम्मन ने अपने साथियों के साथ मिलकर गाली-गलौज की और जान से मारने की नीयत से उसके पुत्र पर अवैध तमंचे से फायरिंग कर दी। शिकायत के आधार पर पुलिस ने हत्या के प्रयास और आर्म्स एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया था।

भाजपा के बूथ अध्यक्ष सम्मेलन में विधानसभा-2027 का हुआ शंखनाद, 450 बूथों के कार्यकर्ताओं ने लिया विजय का संकल्प।

समाज जागरण -ब्रजमोहन सिंह

फिरोजाबाद। भारतीय जनता पार्टी महानगर फिरोजाबाद द्वारा विधान सभा-97 के अंतर्गत पालीवाल हॉल, फिरोजाबाद में मंगलवार प्रातः 11:00 बजे भव्य बूथ अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन किया गया। महानगर जिला अध्यक्ष डॉ. सतीश दिवाकर के निर्देशन में आयोजित इस सम्मेलन में लगभग 450 बूथ अध्यक्षों एवं कार्यकताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। सम्मेलन में आगामी विधानसभा चुनाव-2027 की तैयारियों, बूथ सशक्तिकरण तथा संगठन विस्तार को लेकर विस्तृत मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हाथरस के पूर्व जिला अध्यक्ष गौरव आर्य रहे, जबकि कार्यक्रम के जिला संयोजक एवं पूर्व जिला अध्यक्ष कन्हैयालाल गुप्ता ने सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बूथ संगठन को भाजपा की सबसे बड़ी शक्ति बताया। मंच पर महानगर जिला अध्यक्ष डॉ. सतीश दिवाकर, सदर विधायक मनीष असीजा, महापौर कामिनी राठौर, विधानसभा संयोजक एवं महानगर उपाध्यक्ष विवेक अग्रवाल सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि गौरव आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत उसका समर्पित कार्यकर्ता और मजबूत बूथ संगठन है। बूथ अध्यक्ष ही संगठन की वास्तविक शक्ति हैं। उन्होंने प्रत्येक बूथ अध्यक्ष से जनसंपर्क बढ़ाने, केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने तथा प्रत्येक बूथ को संगठनात्मक दृष्टि से मजबूत बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मजबूत बूथ ही भाजपा की विजय का आधार है। महानगर जिला अध्यक्ष डॉ. सतीश दिवाकर ने कहा कि बूथ अध्यक्ष संगठन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने बूथ पर सक्रिय रहकर पार्टी की विचारधारा, केंद्र एवं प्रदेश सरकार की उपलब्धियों तथा जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाए। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती ही विधानसभा-2027 में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक विजय सुनिश्चित करेगी। उन्होंने सभी कार्यकताओं से पूरे समर्पण और अनुशासन के साथ संगठन के आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के जिला संयोजक एवं पूर्व जिला अध्यक्ष कन्हैयालाल गुप्ता ने कहा कि भाजपा की संगठनात्मक शक्ति का मूल आधार उसका बूथ संगठन है। उन्होंने सभी बूथ अध्यक्षों से प्रत्येक मतदाता से नियमित संपर्क बनाए रखने, संगठन के प्रत्येक कार्यक्रम को बूथ स्तर तक सफलतापूर्वक पहुंचाने तथा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बूथ अध्यक्ष यदि अपने दायित्व का पूरी निष्ठा से निर्वहन करेगा तो विधानसभा चुनाव-2027 में भाजपा ऐतिहासिक विजय प्राप्त करेगी।

सदर विधायक मनीष असीजा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश और प्रदेश में विकास, सुशासन और जनकल्याण के नए आयाम स्थापित हुए हैं। भाजपा सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी प्रत्येक कार्यकर्ता की है। उन्होंने बूथ स्तर पर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने का आह्वान किया।

महापौर कामिनी राठौर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता सेवा, समर्पण और राष्ट्रहित की भावना के साथ कार्य करता है। जनता के बीच निरंतर संपर्क, सेवा कार्य और संगठन की सक्रियता ही भाजपा की सबसे बड़ी पहचान है। विधानसभा संयोजक एवं महानगर उपाध्यक्ष विवेक अग्रवाल ने बूथ अध्यक्षों को संगठनात्मक दायित्वों की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि प्रत्येक बूथ पर मजबूत टीम का गठन, नियमित संपर्क अभियान तथा संगठन की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन ही आगामी चुनावों की सफलता का आधार बनेगा। सम्मेलन में पूर्व जिला अध्यक्ष नानक चंद्र अग्रवाल, सुनील शर्मा, अनिल भारद्वाज, राजेंद्र गुप्ता, महानगर महामंत्री आनंद अग्रवाल, देवेश भारद्वाज, महानगर उपाध्यक्ष केशव सिंह फौजी, योगेंद्र यादव बाबा, अंकित तिवारी, महानगर मीडिया प्रभारी आकाश गुप्ता, मंत्री सौरभ गुप्ता, नमन बंसल, कैलाश ओझा, राम लड़ैती, विमलेश जाटव, मनीष राठौर, मंडल अध्यक्ष देश दीपक, राजा गुप्ता, गौतम कुशवाहा, प्राचीर गुप्ता, लायक सिंह, सत्यवीर गुर्जर, राजेश झा, विशाल पचौरी, हिमांशु शर्मा, अनुपम शर्मा, के.के. गांधी, आकृति सहयोगी, गीता राठौर, श्याम सिंह यादव, हरिओम वर्मा सहित सभी मंडल अध्यक्ष, बूथ अध्यक्ष एवं बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन "मेरा बूथ, सबसे मजबूत" के संकल्प के साथ हुआ। सभी कार्यकताओं ने संगठन को बूथ स्तर तक और अधिक सशक्त बनाने, केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने तथा विधानसभा चुनाव-2027 में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक विजय सुनिश्चित करने के लिए पूरी निष्ठा, समर्पण और सक्रियता के साथ कार्य करने का संकल्प लिया।

भारतीय जनता पार्टी का बूथ स्तरीय कार्यक्रम संपन्न।

समाज जागरण

फिरोजाबाद। भारतीय जनता पार्टी जिला फिरोजाबाद द्वारा सिरसागंज विधानसभा में वंदना गार्डन सिरसागंज नगर में आयोजित 'बूथ अध्यक्ष सम्मेलन' जिलाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बूथ सम्मेलन में मुख्य अतिथि मा. विजय शिवहरे प्रदेश मंत्री / एमएलसी भाजपा उत्तर प्रदेश ने बूथ अध्यक्षों एवं कार्यकताओं का उत्साहवर्धन करते हुऐ कहा कि पार्टी का देवतुल्य बूथ का कार्यकर्ता ने आज बड़ी संख्या में उपस्थित होकर संगठन की नई ऊर्जा, उत्साह और संगठन के प्रति समर्पण का भाव जागृत किया। सिरसागंज विधानसभा का प्रत्येक बूथ अध्यक्ष एवं कार्यकर्ता भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा, सेवा, सुशासन और राष्ट्र प्रथम के संकल्प को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूर्ण निष्ठा, समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। सशक्त बूथ ही सशक्त संगठन की पहचान है, और सशक्त संगठन ही विकसित भारत के निर्माण का आधार है।। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के कुशल नेतृत्व में विकसित भारत - विकसित उत्तर प्रदेश के संकल्प को साकार करने के लिए प्रत्येक बूथ पर भाजपा को विजयी बना कर 2027 में पुनः भाजपा सरकार बनाने का आह्वान किया।। बूथ सम्मेलन को जिलाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह व हरीओम यादव पूर्व विधायक ने सम्बोधित करते हुऐ कहा कि बूथ अध्यक्ष व बूथ समिति के कार्यकर्ता ही हमारे संगठन की सबसे मजबूत इकाई है। यहीं से कार्यकर्ता टोली बनाकर "सेवा ही संगठन" के भाव से समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचती है। गरीब कल्याण, महिला सशक्तिकरण, किसान हित और युवा कल्याण की सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन भी बूथ से ही सुनिश्चित होता है। बूथ अध्यक्ष हमारे संगठन के सेनापति हैं। उनके नेतृत्व में सशक्त बूथ, सशक्त संगठन और सशक्त भारत का संकल्प और अधिक मजबूत होगा।इस दौरान अतुल प्रताप सिंह अध्यक्ष जिला सहकारी बैंक , विजय प्रताप सिंह पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष ने भी सम्बोधित किया। इस दौरान प्रमुख रूप से रंजना सिंह चेयरमैन सिरसागंज , जोगेंद्र यादव ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि , विजय यादव , डॉ . अमित गुप्ता जिला प्रवक्ता / मीडिया प्रभारी ,
अजीत राजपूत , राजीव यादव बाले , सौरभ शिवहरे , रेनु उपाध्याय , विपिन शिवहरे , स्नेहलता कुशवाहा , श्रीमती ज्योति गुप्ता मण्डल अध्यक्ष , शिवजीत वीरू धाकरे , यशपाल सिंह , राजवीर राजपूत , मंजेश शर्मा ,गोपाल कृष्ण सिंह , प्रशान्त शर्मा , सागर गुप्ता ,
केशव गुप्ता , मोनू कुशवाहा , जीतू यादव , अजय प्रताप , अभिषेक कठेरिया , नितिन सिंह ,
विष्णु पाराशर विजय रानी जादौन , आशा सिंह , सहित बड़ी संख्या में बूथ अध्यक्षगण व कार्यकर्ता बन्धु उपस्थित थे। संचालन आकाश शर्मा जिला महामंत्री द्वारा किया गया।।

भड़रिया नौमी को रही शादी समारोह की धूम

सामूहिक विवाह समारोह में 37वर वधू ने थामें एक दूसरे के हाथ

समाज जागरण -ब्रजमोहन सिंह

फिरोजाबाद। बुधवार को भड़रिया नौमी के चलते शादी समारोह की धूम रही। बड़ी संख्या में युवक-युवती शादी के पवित्र बंधन में बंधे। वहीं सामूहिक विवाह समारोह में भी सैकड़ों की संख्या में युवक-यवतियों का विवाह धार्मिक रीतिरिवाज के साथ संपन्न हुआ। महात्मा ज्योतिबाराव फुले सेवा समिति द्वारा

गंगा रिजोर्ट बंबा बाईपास पर हिंदू रीति रिवाज के साथ 37 कन्याओं के हाथ पीले किये गये। समिति के संस्थापक डाक्टर राधेश्याम कुशवाहा ने कहा कि यह महंगाई कारण गरीब लोगों की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं होती वह अपनी कन्या की शादी दान दहेज देकर कर सके ऐसी स्थिति में हमारी संस्था ऐसे लोगों की मदद करती आई है और करती रहेगी अब तक हमारी संस्था द्वारा लगभग 5000 कन्याओं के हाथ पीले करवा चुकी है राधेश्याम कुशवाहा और उनकी टीम तथा गणमान्य लोगों ने नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

लगातार पाँचवें दिन भी भाकिक्रायू के पदाधिकारी नजरबंद

जंतर मंतर पर चल रहे युवा आंदोलन में शामिल होकर देना चाहतें हैं समर्थन

संगठन ने प्रशासन की इस कार्यवाही पर जताया भारी विरोध

समाज जागरण

शिकोहाबाद। जनपद में भारतीय किसान क्रान्ति यूनियन के पदाधिकारियों को लगातार पाँचवें दिन जिला प्रशासन द्वारा उन्हें अपने ही घर में नजरबंद रखा गया है। संगठन के पदाधिकारी दिल्ली के जंतर.मंतर पर चल रहे युवा आंदोलन में शामिल होकर अपना समर्थन देने के लिए जाने वाले थे,लेकिन प्रशासन द्वारा उन्हें उनके आवासों से बाहर नहीं निकलने दिया जा रहा है। जिससे

संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकताओं में आक्रोश व्याप्त है। ब्रज प्रांत अध्यक्ष योगेश यादव व पुष्पेन्द्र यादव ने संयुक्त रूप से कहा कि लोकतंत्र में किसी भी नागरिक को शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात रखने और आंदोलन में शामिल होने का संवैधानिक अधिकार है। यदि प्रशासन आवाज उठाने वालों को नजरबंद करेगा,तो यह लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत होगा। उन्होंने कहा कि भारतीय किसान क्रान्ति यूनियन इस तरह के दबाव से पीछे हटने वाली नहीं है और किसानों,युवाओं एवं आमजन के अधिकारों की लड़ाई पूरी मजबूती के साथ जारी रखेगी। योगेश यादव ने यह भी कहा कि संगठन के निर्देश मिलते ही सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता एकजुट होकर दिल्ली के जंतर.मंतर पहुंचेंगे तथा युवा आंदोलन को अपना समर्थन देंगे।

मेडिकल न करने को लेकर तीमारदार और डॉक्टर में हुई तीखी नोंक झोक।

समाज जागरण

फिरोजाबाद। ट्रामा सेंटर में मंगलवार रात गोली लगने से घायल युवक का मेडिकल कराने आए भाजपा नेता के करीबियों और ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक में तीखी नोंकझोंक हो गई। शोर की आवाज सुनकर मरीजों, तीमारदारों और कर्मचारियों की भीड़ एकत्रित हो गई। भाजपा नेता का फोन उच्चाधिकारियों पर पहुंचा तो सीएमएस मौके पर पहुंच गए। उन्होंने समझाकर मामला शांत कराया।

थाना रजावली के गांव पहाड़ीपुर भौंडेला निवासी 30 वर्षीय अनुज प्रताप पुत्र सतेंद्र सिंह सिसोदिया का कुछ लोगों से जमीन को लेकर विवाद चला आ रहा है। मंगलवार शाम को दूसरे पक्ष के लोगों ने अनुज प्रताप पर फायरिंग कर दी थी। अनुज हाथ में गोली लगने से घायल हो गया था। परिजन उसे टूंडला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले गए, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक ने मेडिकल कराने के लिए ट्रामा सेंटर भेज दिया। भाजपा नेता के करीबी रात आठ बजे घायल को लेकर ट्रामा सेंटर पहुंचे लेकिन ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक नहीं मिले। भाजपा नेता के करीबियों का आरोप है कि चिकित्सक 9.45 बजे ट्रामा सेंटर पहुंचे। जब उन्होंने चिकित्सक से मेडिकल करने की बात कही तो उन्होंने टूंडला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर कराने के लिए कहा। इस बात को लेकर भाजपा नेता के करीबियों और चिकित्सक में कहासुनी होने लगी। मामला नोंकझोंक तक पहुंच गया तो चिकित्सक केबिन से खड़े होकर बाहर चले गए। यह देखकर वे भी बाहर गेट के निकट पहुंच गए। शोर की आवाज सुनकर तीमारदारों और ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों की भीड़ एकत्रित हो गई। जानकारी होने पर भाजपा नेता ने सीएमएस डॉ. नवीन जैन को फोन किया। सीएमएस मौके पर पहुंचे और समझाकर मामला शांत कराया। इसके बाद घायल का मेडिकल टूंडला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर कराया गया। सीएमएस ने बताया कि कुछ लोग एक घायल का मेडिकल कराने के लिए लाए थे। चिकित्सक ड्यूटी पर देरी से पहुंचे। इसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी।

नगर पालिका परिषद ने कीरतपुर की जनता से की पानी बचाने की अपील

दैनिक समाज जागरण अजमल अंसारी जनपद बिजनौर

किरतपुर गर्मी की शुरूआत के साथ ही क्षेत्र में जल संकट ना आय इसी को देखते हुए नगर पालिका परिषद कीरतपुर ने आम जनता से पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करने और जल बबार्दी रोकने की पुरजोर अपील की है। नगर

पालिका अधिशासी अधिकारी मेघा गुप्ता मुख्य अपील और निदेर्शःसीमित उपयोगः सुबह-शाम पानी इस्तेमाल के बाद पानी पानी को अन्वेषक रूप से ना बहने दे पानी की जरूरत ना होने पर पानी की सप्लाई बंद कर दे पालिका।को लीकेज की सूचनाः घरों या रास्तों में नल लीकेज होने पर तुरंत पालिका कार्यालय को सूचित करने को कहा गया है।टैंक ओवरफ्लोः छतों पर रखी पानी की टंकियों में अलार्म लगाएं ताकि पानी बहकर बर्बाद न हो।जनता का सहयोग जरूरी पालिका अधिकारियों के अनुसार, कीरतपुर का भूजल स्तर लगातार नीचे जा रहा है। अगर समय रहते पानी नहीं बचाया गया, तो आने वाले दिनों में किल्लत और बढ़ सकती है। किरतपुर पालिका ने नारा दिया हैः "कीरतपुर का एक ही नारा, व्यर्थ न बहे जल

आयुष्मान कार्ड निर्माण में लापरवाही पर जिलाधिकारी सख्त, धीमी प्रगति वाले अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो
शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

बिजनौर जिलाधिकारी जसजीत कौर की अध्यक्षता में कल दिनांक 21 जुलाई को वेबलिंक के माध्यम से आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत आयुष्मान कार्ड निर्माण की प्रगति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

समीक्षा के दौरान विकास खंड किरतपुर, नूरपुर, जलीलपुर, हल्दौर, मोहम्मदपुर देवमल तथा बूढ़नपुर स्योहारा में आयुष्मान कार्ड निर्माण की प्रगति अत्यंत धीमी पाए जाने पर जिलाधिकारी ने गहरी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने खराब प्रगति वाले सभी संबंधित सहायक विकास अधिकारी (पंचायत), चिकित्सा अधीक्षक/ एमओआईसी, बीपीएम तथा बीसी पीएम को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाने में किसी भी प्रकार की शिथिलता या लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। साथ ही सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे आपसी समन्वय स्थापित करते हुए विशेष अभियान चलाकर आयुष्मान कार्ड निर्माण में तेजी लाएं तथा प्रतिदिन निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान विकास खंड अफजलगढ़ की प्रगति भी अत्यंत असंतोषजनक पाए जाने पर जिलाधिकारी ने संबंधित ग्राम पंचायत अधिकारी/प्रभारी, सहायक विकास अधिकारी, बीपीएम, बीसी पीएम तथा चिकित्सा अधीक्षक /एमओ आईसी का माह जुलाई, 2026 का वेतन रोकने के लिए निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना भारत सरकार की अत्यंत महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी योजना है, जिसके माध्यम से पात्र परिवारों को गुणवत्तापूर्ण एवं निःशुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि पात्र लाभार्थियों के शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड शीघ्र तैयार कराए जाएं तथा योजना के क्रियान्वयन में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि निर्धारित लक्ष्य प्राप्त न करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी।

17.75 लाख रुपये और जेवर बरामद, तीन शातिर चोर गिरफ्तार

समाज जागरण

फिरोजाबाद। थाना सिरसागंज घर से लाखों रुपये के आभूषण चोरी करने के मामले में सिरसागंज पुलिस ने तीन शातिर चोरों को गिरफ्तार कर चोरी का खुलासा किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो सोने की चेन, तीन अंगूठियां और चोरी के आभूषण बेचकर प्राप्त 17.75 लाख रुपये नकद बरामद किए हैं।

पुलिस के अनुसार, 19 जुलाई को संतोष कुमार ने थाना सिरसागंज में तहरीर देकर बताया था कि उनके घर से सीता रानी हार, कॉलर, हथकूल, दस्ते समेत अन्य सोने के आभूषण चोरी हो गए हैं। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। एसएसपी के निर्देश पर चलाए गए अभियान के तहत सिरसागंज पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर एनएच-19 स्थित धरनई गेट के पास से मोहित कुमार, शिवम और किरण देवी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपियों की निशानदेही पर चोरी के दो चेन, तीन अंगूठियां और आभूषण बेचकर प्राप्त 17 लाख 75 हजार रुपये बरामद किए गए। पुलिस के मुताबिक, मुख्य आरोपी मोहित कुमार के खिलाफ पहले से कई आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं, जबकि शिवम पर भी पूर्व के मामले दर्ज हैं। पुलिस ने तीनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर आगे की विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

कृषि रक्षा उपकरण एवं सुरक्षित अन्न भंडारण बुखारी पर अनुदान प्राप्त करने का मिला अवसर

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

बिजनौर। जनपद के किसान भाइयों के लिए कृषि रक्षा उपकरण एवं सुरक्षित अन्न भंडारण बुखारी पर अनुदान प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध कराया गया है। जिला कृषि रक्षा अधिकारी जसवीर सिंह तेवतिया ने प्रेसनोट जारी कर बताया कि विभिन्न पारिस्थितिकीय संसाधनों द्वारा कीट रोग नियंत्रण योजना के तहत चालू वित्तीय वर्ष में जनपद को कुल 384 कृषि रक्षा यंत्रों एवं बुखारी का लक्ष्य प्राप्त हुआ है। इनमें 39 मानव चालित स्प्रेयर, 78 शक्ति चालित (पावर) स्प्रेयर तथा 267 अन्न भंडारण बुखारी का लक्ष्य आवंटित किया गया है।

योजना का लाभ पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा। मानव चालित स्प्रेयर पर कृषि रक्षा यंत्र के मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 15 सौ, शक्ति चालित स्प्रेयर पर 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 3 हजार, तथा लघु एवं सीमांत किसानों को अन्न भंडारण बुखारी पर मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 2 हजार का अनुदान देय होगा।

किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार खुले बाजार से आईएसआई (ISI) मानक वाले कृषि रक्षा यंत्र खरीद सकते हैं। बखारी के लिए निर्धारित गुणवत्ता मानकों का पालन अनिवार्य होगा, जिसमें स्टेट एग्रो इंडस्ट्रीज (सेल) की उच्च गुणवत्ता वाली जीआई शीट से निर्मित बुखारी ही मान्य होगी। योजना का लाभ पूरी तरह ऑनलाइन एवं पारदर्शी व्यवस्था के तहत दिया जाएगा। इच्छुक (पंजीकृत) किसान कृषि विभाग के पोर्टल (agricul ture.up.gov.in) पर ऑनलाइन बुकिंग करा सकते हैं। टोकन जारी होने के बाद चयनित किसान 10 दिनों के भीतर कृषि यंत्र/ बुखारी खरीदकर उसका बिल पोर्टल पर अपलोड करेंगे। विभागीय सत्यापन के उपरांत अनुदान की राशि सीधे किसानों के बैंक खाते में डीबीटी (DBT) के माध्यम से भेजी जाएगी। किसानों से अपील है कि भीड़ से बचने के लिए समय रहते पोर्टल पर बुकिंग कराकर योजना का लाभ प्राप्त करें।

बिजनौर में 22 जुलाई से 8 सितंबर तक चलेगा निःशुल्क खुरपका-मुंहपका टीकाकरण अभियान, 570000 पशुओं को लगेगा टीका

दैनिक समाज जागरण मुस्कान खान जनपद बिजनौर

एफ0एम0डी0 नियंत्रण को लेकर बिजनौर में विशेष अभियान शुरू, 30 टीमें घर-घर जाकर करेंगी पशुओं का टीकाकरण

जिलाधिकारी, बिजनौर द्वारा आज दिनांक 22.07.2026 को प्रातः 10:30 बजे कलैक्ट्रेट बिजनौर से एफ0एम0डी0 टीकाकरण अभियान आठवा चरण का शुभारम्भ करते हेतु पशुपालन विभाग की टीमों को हरी झंड़ी दिखा कर रवाना किया गया। मुख्य पशुचिकित्साधिकारी बिजनौर की पशुपालकों से अपील–खुरपका-मुंहपका से बचाव के लिए जरूर लगवाएं निःशुल्क टीका

मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा. लोकेश कुमार अग्रवाल ने अवगत कराया है कि पशुओं में होने वाले खुरपका-मुँहपका रोग के नियन्त्रण हेतु केन्द्र सरकार द्वारा संचालित एफ०एम०डी०सी०पी० योजना के तहत आठवा चरण में पशुओं में टीकाकरण कार्य जनपद में दिनांक 22.07.2026 से 08.09.2026 तक विशेष टीकाकरण अभियान चलाया जायेगा। इस दौरान जनपद के 570000 गोवंशीय एवं महिषवंशीय पशुओं का निःशुल्क टीकाकरण किया जायेगा। अभियान को सफल बनाने के लिए जनपद के सभी 11 विकास खण्डों में स्थित सभी पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण सम्पादित किया जायेगा। इसके लिए 30 टीकाकरण टीमें गठित की गयी है। जो गाँव-गाँव और घर-घर पहुँचकर पशुओं को निःशुल्क टीका लगायेगी। 04 माह से कम आयु के बच्चों तथा 08 माह से अधिक गर्भित गाय एवं भैसों को छोडकर सभी पात्र पशुओं को टीकाकरण किया जायेगा।

उन्होंने जनपद के समस्त पशुपालकों से अपील की है कि वह अपने गौवंशीय एवं महिषवंशीय पशुओं में टीकाकरण कार्य करायें एवं इस भयंकर बीमारी की रोकथाम में अपना सहयोग प्रदान करें। जनपद के सभी ग्राम प्रधानों / अन्य जनप्रतिनिधियों से भी अपील की जाती है कि पशुपालन विभाग की ग्राम में जा रही टीकाकरण हेतु टीमों का सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। इस कार्यक्रम की अधिक जानकारी हेतु जनपद के समस्त पशुपालक अपने-अपने क्षेत्र के निकटस्थ पशुचिकित्सालय से सम्पर्क स्थापित कर सकते है । इस बीमारी के मुख्य लक्षण है- 1. मुंह में छाले ओर लार टपकना, 2.खुरों के बीच छाले या घाव, 3.चलने में लंगड़ापन, 4.भूख कम लगना, 5.बुखार सुस्ती, दुग्ध उत्पादन में कमी। इस बीमारी के बचने के लिए यह सावधानियां अपनानी चाहिए- 1.

नियमित रूप से एफ0एम0डी0 टीकाकरण लगवाये, 2. पशुओं को साफ एवं सूखे स्थान पर रखें, 3.बीमार पशुओं को अलग रखें, 4.आवागमन पर नियन्त्रण रखें, 5.खुरों की सफाई एवं कीटनाशक का उपयोग करें, 6.पानी और चारा स्वच्छ रखें।

एसडीएम व सीओ ने क्षेत्र की खाद्य सामग्री व मिठाई की दुकानों का किया निरीक्षण

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

नगीना। श्रावण कांवड़ यात्रा के दृष्टिगत एसडीएम व सीओ ने क्षेत्र की खाद्य सामग्री व मिठाई की दुकानों का निरीक्षण किया । एसडीएम प्रिंस कुमार व पुलिस क्षेत्राधिकारी राजेश कुमार सोलंकी द्वारा श्रावण कांवड़ यात्रा एवं महाशिवरात्रि पर्व के दृष्टिगत सोमवार की देर सांय को नगीना क्षेत्र में खाद्य सामग्री व मिठाइयों की दुकानों का निरीक्षण किया गया ,इस दौरान खाद्य

पदार्थों के नमूने (सैंपल) लेकर उनकी गुणवत्ता की जांच हेतु आवश्यक कार्यवाही कराई गई ,तथा दुकानदारों को शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री का विक्रय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गये।

एएसपी व सीओ ने कांवड़ मार्गों का किया निरीक्षण

कावंड यात्रा को लेकर पुलिस प्रशासन अलर्ट मोड पर

दैनिक समाज जागरण मुस्कान खान जनपद बिजनौर

नजीबाबाद श्रावण मास की कावंड़ यात्रा को लेकर प्रशासन पूरी तरह अलर्ट मोड पर है। एसपी सिटी डा. कृष्ण गोपाल ने सीओ नजीबाबाद के साथ कावड मार्गों को निरीक्षण करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिये। सोमवार को अपर पुलिस अधीक्षक डा. कृष्ण गोपाल सिंह ने श्रावण मास की कावंड़ यात्रा को कोतवाली, बुन्दकी हरिद्वार फोर लेन आदि मार्गो को निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होने यातायात प्रबंधन, शिव भक्तो के लिए की गई आवश्यक व्यवस्थाओं, मार्गो पर बेरिकेटिंग सीसीटीवी कैमरे प्रकाश व्यवस्था, प्राथमिक उपचार आदि के सम्बंध में जानकारी की तथा आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस दौरान एसपी सिटी से सीओ नजीबाबाद आकांशा गौतम से कहा कि शिव भक्तो की यात्रा सुरक्षित, सुगम एंव व्यवस्थित रूप से कराना सुनिश्चत करें। उन्होने कहा कि 28 जुलाई से शुरू होने वाली कांवड़ यात्रा के दौरान शिव भक्तों को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। उन्होने पुलिस डयूटी के सम्बधं में भी आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस दौरान थाना प्रभारी अमित कुमार पुलिस टीम के साथ मौजूद रहें।

सीएचसी में बाल रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति की मांग, व्यापार मंडल ने सौंपा ज्ञापन

समाज जागरण
कांधला।(फुरकान जंग)

कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में नियमित बाल रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति की मांग को लेकर सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल (रजि.) के पदाधिकारियों एवं व्यापारियों ने एसीएमओ को एक शिकायती पत्र सौंपा है। बुधवार को कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचे एसीएमओ जाहिद अली त्यागी को व्यापार मंडल के उपाध्यक्ष रोहित गुप्ता, पवन कंसल सहित अन्य व्यापारियों ने शिकायती पत्र सकते हुए बताया कि सीएचसी में नियमित बाल रोग विशेषज्ञ नहीं होने के कारण नवजात शिशुओं और बच्चों को समय पर विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा नहीं मिल पा रही है। नगर के साथ-साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिदिन बड़ी संख्या में बच्चे उपचार के लिए अस्पताल पहुंचते हैं, लेकिन विशेषज्ञ चिकित्सक के अभाव में उन्हें शामली, मुजफ्फरनगर अथवा मेरठ रेफर करना पड़ता है।व्यापारियों का कहना है कि रेफर होने से मरीजों के उपचार में अनावश्यक देरी होती है, साथ ही उनके परिजनों पर आर्थिक और मानसिक बोझ भी बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की बढ़ती आबादी और आसपास के गांवों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को देखते हुए सीएचसी में स्थायी रूप से बाल रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति बेहद जरूरी है। इस दौरान व्यापारियों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी के नाम एक ज्ञापन एसीएमओ को सौंपा इस दौरान कई व्यापारी मौजूद रहे।

पुत्र-पुत्रवधू पर गाली-गलौज और नाबालिग बेटी से मारपीट का आरोप,

समाज जागरण कांधला।

कस्बे के मोहल्ला गुजरान निवासी दंपति ने अपने ही पुत्र और पुत्रवधू पर गाली-गलौज, अभद्र व्यवहार और 14 वर्षीय नाबालिग बेटी के साथ मारपीट करने का आरोप लगाया है। पीड़ित महिला ने थाने में तहरीर देकर कानूनी कार्यवाही की मांग की है। पुलिस जांच में जुटी हुई है। बुधवार को कस्बे के मोहल्ला गुजरान निवासी शहनाज पत्नी इसरार ने बताया कि उसका पुत्र अली और पुत्रवधू मेविश लगातार उनके साथ अभद्रता करते हैं और गाली-गलौज करते हैं। आरोप है कि दोनों उनकी 14 वर्षीय नाबालिग बेटी के साथ भी आए दिन बिना किसी कारण मारपीट करते हैं और मानसिक उत्पीड़न करते हैं।महिला का कहना है कि पुत्र-पुत्रवधू के इस व्यवहार से घर का माहौल पूरी तरह खराब हो गया है। कई बार मोहल्ले के लोगों द्वारा समझाने का प्रयास किया गया, लेकिन उनके व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ। पीड़िता ने कहा कि उसे और उसकी नाबालिग बेटी को अपनी जान-माल की सुरक्षा को लेकर खतरा बना हुआ है। पीड़ित महिला व उसके पति ने पुलिस से मांग की है कि दोषी पुत्र और पुत्रवधू के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाए, ताकि उसे और उसकी बेटी को सुरक्षा मिल सके। मामले में पुलिस ने कार्रवाई का आश्वासन देते हुए जांच शुरू कर दी है।

कांवड़ यात्रा को लेकर एएसपी का पैदल गश्त, सुरक्षा व्यवस्था परखी

समाज जागरण

कांधला।(फुरकान जंग) आगामी कांवड़ यात्रा को शांतिपूर्ण और सुरक्षित संपन्न कराने के उद्देश्य से अपर पुलिस अधीक्षक सुमित शुक्ला ने नगर एवं क्षेत्र में पैदल गश्त कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान क्षेत्राधिकारी कैराना, थाना प्रभारी निरीक्षक एवं पुलिस बल मौजूद रहा।पैदल

गश्त के दौरान एएसपी ने प्रमुख मार्गों, बाजारों तथा संवेदनशील एवं भीड़भाड़ वाले स्थानों का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्था परखी। उन्होंने ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को पूरी सतर्कता और मुस्तैदी के साथ जिम्मेदारी निभाने के निर्देश दिए।एएसपी ने व्यापारियों, दुकानदारों और स्थानीय नागरिकों से संवाद कर कानून-व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें और किसी भी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें। साथ ही कांवड़ यात्रा के दौरान यातायात व्यवस्था सुचारु रखने और श्रद्धालुओं को हरसंभव सुरक्षा एवं सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए।

सीएचसी में डायलिसिस मशीन का शुभारंभ, किडनी मरीजों को मिलेगी बड़ी राहत

--पूर्व विधायक राजेश्वर बंसल व समाजसेवी अखिल बंसल ने किया उद्घाटन, अब स्थानीय स्तर पर ही होगा उपचार

समाज जागरण
कांधला।(फुरकान जंग)

कस्बे के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डायलिसिस मशीन का शुभारंभ किया गया। पूर्व विधायक राजेश्वर बंसल एवं समाजसेवी अखिल बंसल ने संयुक्त रूप से फीता काटकर मशीन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एसीएमओ डॉ. जाहिद अली त्यागी, चिकित्सा प्रभारी डॉ. वीरेंद्र सिंह, अस्पताल स्टाफ, नगर के व्यापारी एवं गणमान्य लोग मौजूद रहे। बुधवार के नगर के सरकारी अस्पताल में कार्यक्रम आयोजित हुआ उसके

बाद डायलिसिस मशीन का शुभारंभ किया गया।चिकित्सा प्रभारी डॉ. वीरेंद्र सिंह ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर पहली बार डायलिसिस मशीन की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिससे क्षेत्र के किडनी रोगियों को अब इलाज के लिए दूर-दराज के बड़े शहरों का रुख नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मरीजों को अब सीएचसी में ही डायलिसिस की सुविधा मिलेगी, जिससे उनके समय और आर्थिक खर्च दोनों में कमी आएगी। एसीएमओ डॉ. जाहिद अली त्यागी ने कहा कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। कांधला सीएचसी में डायलिसिस सुविधा शुरू होने से आसपास के ग्रामीण अंचलों के किडनी रोगियों को बड़ी राहत मिलेगी।इस अवसर पर समाजसेवी अखिल बंसल ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के जरूरतमंद मरीजों को स्थानीय स्तर पर बेहतर उपचार उपलब्ध कराना जनसेवा का महत्वपूर्ण कार्य है। डायलिसिस मशीन शुरू होने से मरीजों और उनके परिजनों को अनावश्यक भागदौड़ से राहत मिलेगी तथा उन्हें समय पर उपचार मिल सकेगा।कार्यक्रम में व्यापारी नेता रोहित गुप्ता, विक्की जैन, विष्णु प्रसाद अग्रवाल, पवन कंसल, पालिका अध्यक्ष नजमुल इस्लाम, डॉ. विक्रम सैनी, अमन मित्तल, शरद मित्तल, वरुण जैन, जावेद जंग सहित अस्पताल का स्टाफ एवं नगर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सरकारी नल पर पानी भरने को लेकर विवाद, गर्भवती महिला से मारपीट का आरोप

समाज जागरण कांधला।

थाना क्षेत्र के गांव गढ़ी दौलत में सरकारी हैंडपंप पर पानी भरने को लेकर हुए विवाद में आठ माह की गर्भवती महिला के साथ मारपीट किए जाने का मामला सामने आया है। पीड़ित पक्ष ने मेडिकल परीक्षण कराने के बाद आरोपी के खिलाफ थाने में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। थाना क्षेत्र के गांव गढी दौलत निवासी इदरीश ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी सात वर्षीय पुत्री अफसाना सरकारी हैंडपंप से पानी भरने गई थी। आरोप है कि इसी दौरान पड़ोस के एक व्यक्ति ने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। शोर सुनकर बीच-बचाव करने पहुंची उसकी बड़ी बेटी रिजवाना, जो आठ माह की गर्भवती है, के साथ भी आरोपी ने मारपीट कर दी। शोर-शराबा होने पर आरोपी मौके से फरार हो गया।परिजनों ने घायल महिला का चिकित्सीय परीक्षण कराया और आरोपी के खिलाफ थाने में तहरीर दी है। पुलिस ने मामले में कार्रवाई का आश्वासन देते हुए आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

गंगा सुरक्षा कानून की उठाई मांग

समाज जागरण कांधला।

स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद,डॉ. गुरुदास अग्रवाल की 95वीं जयंती पर उनके पुत्र तरुण कुमार अग्रवाल ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र भेजकर संसद में गंगा सुरक्षा कानून पारित कराने की मांग की है।उन्होंने कहा कि स्वामी सानंद ने मां गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया, लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण संकल्प अब भी अधूरा है। पत्र में कहा गया है कि वर्ष 2008 में उनके अनशन के बाद गंगा को राष्ट्रीय नदी का दर्जा मिला और राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण का गठन किया गया था। साथ ही उनके प्रयासों से भागीरथी क्षेत्र में कई जलविद्युत परियोजनाएं भी रोकी गई थीं।तरुण अग्रवाल ने कहा कि वर्ष 2018 में स्वामी सानंद ने गंगा संरक्षण के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, लेकिन गंगा सुरक्षा कानून अब तक नहीं बन सका। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से स्वामी सानंद की अंतिम इच्छा के अनुरूप संसद में गंगा सुरक्षा कानून लाकर पारित कराने की पहल करने का आग्रह किया।

मालखाने से हथियार चोरी का मामला: फरार हेड मोहर्रिर एक सप्ताह बाद भी पुलिस की पकड़ से दूर

--मालखाने की चाबी अब भी आरोपी के पास होने की चर्चा, जांच में और खुलासों की उम्मीद

समाज जागरण कांधला।

थाने के मालखाने से हथियार और मादक पदार्थ गायब होने के मामले में नामजद निलंबित हेड मोहर्रिर अमित यादव को पुलिस घटना के एक सप्ताह बाद भी गिरफ्तार नहीं कर सकी है। आरोपी की गिरफ्तारी नहीं होने से नगर और क्षेत्र के लोगों में पुलिस की कार्रवाई को लेकर सवाल उठ रहे हैं। पुलिस के अनुसार थाने के मालखाने के तत्कालीन प्रभारी अमित यादव पर मालखाने से एक फैक्ट्री मेड पिस्टल सहित अन्य हथियार और मादक पदार्थ गायब करने का आरोप है। मामला उस समय सामने आया जब मेरठ के मवाना थाना पुलिस ने आरोपी के रिश्तेदार केशु यादव को हथियार तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से बरामद फैक्ट्री मेड पिस्टल वर्ष 2020 में कस्बे के एक व्यक्ति का निरस्त शस्त्र बताया गया, जिसे थाने के मालखाने में जमा कराया गया था।मामले के खुलासे के बाद पुलिस अधीक्षक ने अमित यादव को निलंबित कर दिया था। वहीं थाना प्रभारी निरीक्षक बच्चू सिंह यादव की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम गठित की गई थी।पुलिस सूत्रों के अनुसार मालखाने की चाबी अभी भी आरोपी के कब्जे में होने की बात सामने आ रही है। ऐसे में मालखाने का विस्तृत सत्यापन होने पर और भी अहम खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।एक सप्ताह बीतने के बाद भी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं होने से क्षेत्र के लोगों की निगाहें पुलिस कार्रवाई पर टिकी हैं। लोगों का कहना है कि अब देखना होगा कि पुलिस इस मामले में सख्त कार्रवाई करती है या जांच को आगे बढ़ाकर पूरे प्रकरण को ठंडे बस्ते में डालती है।

15 हजार का इनामी गैंगस्टर गिरफ्तार, अवैध छुरी बरामद

समाज जागरण कैराना।(फुरकान जंग)

पुलिस ने अवैध शस्त्र निर्माण से जुड़े 15 हजार रुपये के इनामी गैंगस्टर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक अवैध छुरी बरामद की है। आरोपी के

खिलाफ गैंगस्टर एक्ट समेत आयुध अधिनियम के कई मुकदमे पहले से दर्ज हैं।पुलिस अधीक्षक एन.पी. सिंह के निर्देश पर चलाए जा रहे संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहन चेकिंग अभियान के तहत अपर पुलिस अधीक्षक सुमित शुक्ला और क्षेत्राधिकारी कैराना के निर्देशन में थाना पुलिस ने बुधवार को मोहल्ला आलखुर्द निवासी याहिया पुत्र दिलशाद को गिरफ्तार किया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक अवैध छुरी बरामद हुई।पुलिस के अनुसार आरोपी अवैध शस्त्र निर्माण से जुड़े मामले में वांछित था और उस पर 15 हजार रुपये का इनाम घोषित था। उसके विरुद्ध कैराना, झिंझाना और कांधला थानों में गैंगस्टर एक्ट, आयुध अधिनियम, बीएनएस तथा अन्य धाराओं में कई मुकदमे दर्ज हैं।पुलिस ने आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई शुरू कर आरोपी का चालान कर दिया है।

कांवड़ यात्रा में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं, आलोक यादव

समाज जागरण
शामली।(फुरकान जंग)

कांवड़ यात्रा-2026 को सकुशल, शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सक्रिय हो गया है। इसी क्रम में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी एवं जिला मजिस्ट्रेट आलोक यादव की अध्यक्षता में समस्त सुपर जोनल मजिस्ट्रेट, जोनल मजिस्ट्रेट, सेक्टर मजिस्ट्रेट तथा संबंधित विभागीय अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कांवड़ यात्रा के दौरान कानून-व्यवस्था, सुरक्षा, यातायात, साफ-सफाई, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, चिकित्सा सेवाओं सहित सभी व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में जिलाधिकारी आलोक यादव ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि कांवड़ यात्रा मार्गों एवं शिविर स्थलों पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय रहते पूरी कर ली जाएं, ताकि शिवभक्तों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि सभी सुपर जोनल, जोनल एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट अपने-अपने क्षेत्रों का लगातार भ्रमण कर व्यवस्थाओं का स्थलीय निरीक्षण करें तथा किसी भी समस्या का तत्काल समाधान सुनिश्चित कराएं। डीएम ने कहा कि कांवड़ यात्रा अत्यंत महत्वपूर्ण

धार्मिक आयोजन है। ऐसे में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। सभी अधिकारी पूरी जिम्मेदारी, सतर्कता और आपसी समन्वय के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें तथा संबंधित विभागों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखें। बैठक में नगर निकायों एवं पंचायत विभाग को कांवड़ मार्गों पर साफ-सफाई, शौचालय एवं पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। वहीं राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) एवं लोक निर्माण विभाग को सड़कें गड्ढामुक्त करने, आवश्यक संकेतक लगाने तथा विद्युत विभाग को निर्बाध एवं सुरक्षित बिजली आपूर्ति, ट्रांसफार्मरों की बैरीकेडिंग और विद्युत पोलों की टेपिंग कराने के निर्देश दिए गए। वन विभाग को आवश्यकता के अनुसार पेड़ों की छंटाई, स्वास्थ्य विभाग को एंबुलेंस, मेडिकल कैंप और पर्याप्त दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा गया। इसके अलावा सीसीटीवी कैमरे, अग्निशमन व्यवस्था, शिविरों की सुविधाएं, खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता एवं रेट लिस्ट की जांच, वॉच टावर, कंट्रोल रूम तथा ड्रेनेज विभाग को घाटों पर संकेतक एवं बैरीकेडिंग की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए गए।बैठक में पुलिस अधीक्षक नरेन्द्र प्रताप सिंह ने कांवड़ यात्रा को लेकर तैयार की गई सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी देते हुए बताया कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यापक पुलिस प्रबंध किए गए हैं। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ब्रजेन्द्र शुक्ल, अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) सत्येन्द्र सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक सुमित शुक्ला सहित सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

स्मैक तस्करी के मामले में वांछित आरोपी गिरफ्तार

समाज जागरण झिंझाना।(फुरकान जंगत)

स्मैक तस्करी के मामले में फरार चल रहे वांछित आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की तलाश पिछले करीब तीन सप्ताह से की जा रही थी।पुलिस के अनुसार, 29 जून 2026 को झिंझाना पुलिस ने चूनसा

निवासी वाजिद अली को 20.77 ग्राम अवैध स्मैक और तस्करी में प्रयुक्त बाइक के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा था। जांच के दौरान मामले में मंडावर निवासी भूरा उर्फ बिल्ला पुत्र असगर का नाम भी सामने आया था, जिसके बाद से वह फरार चल रहा था।पुलिस अधीक्षक एन.पी. सिंह के निर्देशन में चलाए जा रहे संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहन चेकिंग अभियान के दौरान बुधवार को झिंझाना पुलिस ने वांछित आरोपी भूरा उर्फ बिल्ला को गिरफ्तार कर लिया।आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया है।

कांवड़ यात्रा की तैयारियों का डीएम-एसपी ने लिया जायजा,

-सुरक्षा व मूलभूत सुविधाएं समय पर पूरी करने के निर्देश

समाज जागरण
शामली। (फुरकान जंग)

आगामी कांवड़ यात्रा-2026 को सकुशल, सुरक्षित एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी आलोक यादव एवं पुलिस अधीक्षक एन.पी. सिंह ने कांवड़ यात्रा मार्ग का स्थलीय निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान अधिकारियों ने सुरक्षा, यातायात, पेयजल, चिकित्सा, स्वच्छता एवं अन्य व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान डीएम और एसपी ने कांवड़ मार्ग पर बैरिकेडिंग, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, चिकित्सा सुविधाएं, पार्किंग व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरों की स्थापना, स्वच्छता एवं अन्य मूलभूत व्यवस्थाओं की समीक्षा की। अधिकारियों ने निर्देश दिए कि सभी तैयारियां निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरी कर ली जाएं, ताकि कांवड़ यात्रियों और आमजन को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। जिलाधिकारी आलोक यादव ने संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए

कांवड़ यात्रा मार्ग पर सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुविधा प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है और व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। वहीं पुलिस अधीक्षक एन.पी. सिंह ने पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा व्यवस्था और अधिक मजबूत बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने संवेदनशील स्थलों पर विशेष सतर्कता बरतने, सीसीटीवी कैमरों एवं ड्रोन के माध्यम से लगातार निगरानी रखने तथा यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के निर्देश दिए, जिससे कांवड़ यात्रा के दौरान सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था पूरी तरह बनी रहे।

फर्जी दस्तावेज बनाकर प्लॉट बेचने के आरोपी को पुलिस ने दबोचा

समाज जागरण
शामली।(फुरकान जंग)

आदर्श मंडी थाना पुलिस और सर्विलांस टीम ने जमीन के फर्जी दस्तावेज तैयार कर प्लॉटों का बैनामा कराने, खरीदारों को कब्जा न देने और लाखों रुपये हड़पने के मामले में वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर अग्रिम कार्रवाई में जुटी है।पुलिस के अनुसार बनत कस्बे के जवाहर नगर निवासी प्रमोद कुमार और देवेंद्र कुमार ने अपने सहखातेदार विनोद कुमार व अन्य के खिलाफ धोखाधड़ी कर कूटरचित दस्तावेज तैयार कर जमीन का बैनामा कराने तथा खरीदारों को प्लॉट का कब्जा न देकर रकम हड़पने का मुकदमा दर्ज कराया था। इस मामले में श्रीमती कनकलता समेत अन्य लोगों ने भी शिकायत की थी। घटना के संबंध में 16 जून 2026 को आदर्श मंडी थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था।जांच के दौरान पुलिस ने पहले 17 जून को आरोपी अरुण कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। शेष आरोपियों की तलाश जारी थी। इसी अभियान के तहत सर्विलांस टीम और आदर्श मंडी पुलिस ने कार्रवाई करते हुए बनत निवासी अरुण कुमार को गिरफ्तार कर लिया।पुलिस के अनुसार आरोपी के खिलाफ इसी प्रकरण से संबंधित दो मुकदमे पहले से दर्ज हैं। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को न्यायालय में पेश करने की कार्रवाई की गई। न्यायालय ने आरोपी को जेल भेजने के निर्देश दिए पुलिस आरोपी को जेल भेज दिया है।

भाजपा बूथ अध्यक्ष सम्मेलन में संगठन मजबूती और डिजिटल अभियान पर जोर

समाज जागरण शामली।(फुरकान जंग)

देव गार्डन में बुधवार को भारतीय जनता पार्टी का बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि प्रदेश मंत्री प्रमेन्द्र कुमार जांगड़ा ने बूथ अध्यक्षों को संगठन की सबसे मजबूत कड़ी बताते हुए आगामी चुनाव की तैयारियों में पूरी सक्रियता से जुटने का आह्वान किया।कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष रामजी लाल कश्यप ने की। उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर मजबूत संगठन ही चुनावी सफलता की कुंजी है।प्रदेश मंत्री ने कार्यकताओं से मतदाता सूची का अध्ययन करने, प्रत्येक मतदाता से संपर्क बनाए रखने और केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वास जताया कि बूथ स्तर पर मजबूत संगठन के दम पर भाजपा आगामी चुनाव में फिर पूर्ण बहुमत हासिल करेगी।सम्मेलन के दौरान भाजपा आईटी सेल ने डिजिटल सहायता काउंटर लगाकर बड़ी संख्या में बूथ अध्यक्षों व कार्यकताओं को सरल ऐप डाउनलोड कराया तथा डिजिटल लर्निंग प्रोग्राम का प्रशिक्षण पूरा कराया। अभियान का संचालन आईटी एवं मीडिया प्रभारी विनीत शर्मा, आईटी संयोजक दीपक चौहान और जिला मंत्री अनिल उपाध्याय ने किया।इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष पुनीत द्विवेदी, रूबी चौधरी, प्रतिभा उर्फ सिमरन, अरविंद सिंघल, बबीता चौहान, मीनू संगल, पीयूष, रीना कश्यप, सौरभ चौधरी सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी, बूथ अध्यक्ष और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गन्ना किसानों के लिए त्रिवेणी गन्ना डॉक्टर व्हाट्सएप हेल्पलाइन शुरू

समाज जागरण शामली।(फुरकान जंग)

अपर दोआब शुगर मिल,त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड, में बुधवार को आयोजित किसान गोष्ठी में गन्ना किसानों को फसल सुरक्षा, कीट एवं रोग प्रबंधन की जानकारी दी गई। इस दौरान किसानों की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए त्रिवेणी गन्ना डॉक्टर व्हाट्सएप हेल्पलाइन की शुरूआत की गई।गन्ना महाप्रबंधक सतीश बालियान ने बताया कि इस

डिजिटल सुविधा के माध्यम से किसान अपनी गन्ने की फसल में लगने वाले कीटों और बीमारियों की पहचान आसानी से कर सकेंगे। किसान प्रभावित पौधे या पत्तियों का स्पष्ट फोटो व्हाट्सएप बॉट पर भेजकर संबंधित रोग या कीट की सटीक जानकारी और उसके नियंत्रण के उपाय प्राप्त कर सकते हैं।उन्होंने बताया कि मिल किसानों को आधुनिक कृषि यंत्र 25 से 30 प्रतिशत अनुदान पर भी उपलब्ध करा रही है, जिससे खेती की लागत कम होने के साथ उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।गोष्ठी में कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को गन्ने में लगने वाले प्रमुख कीटों, रोगों की पहचान, समय पर बचाव तथा कीटनाशकों के वैज्ञानिक एवं सुरक्षित उपयोग की जानकारी दी। किसानों से आधुनिक तकनीकों को अपनाकर गन्ने की बेहतर पैदावार लेने का आह्वान भी किया गया।

सड़क किनारे खड़ी ट्रक बनी काल, बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत

समाज जागरण/ अवधेश कुमार गुप्ता

सोनभद्र। जनपद के रॉबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार रात एक सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। यह घटना वाराणसी-शक्तिनगर राज्य मार्ग पर सुकृत पुलिस चौकी के पास रात करीब 10:15 बजे हुई। पुलिस के अनुसार, बहुआरा गांव निवासी जानू अली पुत्र इरफान और सूर्यप्रकाश पुत्र शिवशंकर विश्वकर्मा मोटरसाइकिल से सुकृत से अपने घर लौट रहे थे। सुकृत पुलिस चौकी के पास सड़क किनारे खड़ी एक ट्रक से उनकी बाइक टकरा गई। इस भीषण टक्कर में जानू अली की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि सूर्यप्रकाश गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि घटना की सूचना के बावजूद एंबुलेंस और पुलिस टीम देर से मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि समय पर उपचार न मिलने के कारण घायल युवक की हालत बिगड़ती गई। हादसे के बाद मौके पर भीड़ जमा हो गई और लोगों ने प्रशासन की कार्यशैली पर नाराजगी व्यक्त की। ग्रामीणों का कहना है कि वाराणसी-शक्तिनगर राज्य मार्ग पर सड़क किनारे बेतरतीब ढंग से खड़ी ट्रकों की कतारें अक्सर दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। उनका आरोप है कि संबंधित विभाग इस गंभीर समस्या पर ध्यान नहीं दे रहा है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और घायल को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आवश्यक विधिक कार्रवाई में जुटी हुई है।

अब तीसरी आंख की निगरानी में रहेगा खेकड़ा रेलवे स्टेशन

रेलवे ने लगाए पांच हाई डेफिनिशन सीसीटीवी कैमरे, यात्रियों की सुरक्षा होगी मजबूत

समाज जागरण खेकड़ा।

खेकड़ा रेलवे स्टेशन अब तीसरी आंख की निगरानी में रहेगा। यात्रियों की सुरक्षा और स्टेशन पर असामाजिक गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए रेल विभाग ने स्टेशन परिसर में पांच आधुनिक हाई डेफिनिशन सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। रेलवे के इस कदम से यात्रियों में सुरक्षा की भावना बढ़ी है, वहीं दैनिक यात्री संघ ने भी इसका स्वागत किया है। खेकड़ा रेलवे स्टेशन से

प्रतिदिन हजारों यात्री बड़ौत, शामली के साथ दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा और गुरुग्राम के लिए सफर करते हैं। इनमें बड़ी संख्या नौकरीपेशा लोगों की है। पिछले दिनों यात्रियों के साथ मारपीट समेत अन्य घटनाएं सामने आने के बाद रेलवे पुलिस भी सुरक्षा को लेकर सतर्क है। ऐसे में स्टेशन पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने को सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। स्टेशन पर लगाए गए सभी कैमरे 24 घंटे सातों दिन लगातार गतिविधियों पर नजर रखेंगे। कैमरों की रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखी जाएगी, जिससे किसी भी घटना की स्थिति में जांच के दौरान फुटेज महत्वपूर्ण साक्ष्य साबित हो सकेगा। इससे यात्रियों के साथ होने वाली घटनाओं के अलावा असामाजिक तत्वों और संदिग्ध गतिविधियों पर भी निगरानी रखी जा सकेगी।

दैनिक यात्री संघ के महासचिव धर्मसिंह एसडीओ ने रेल विभाग के इस कदम का स्वागत करते हुए कहा कि संघ लंबे समय से अपने मांगपत्रों के माध्यम से रेलवे स्टेशन पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग करता आ रहा था। कैमरे लगने से स्टेशन पर आने-जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था पहले से अधिक मजबूत होगी।

कोल्ड ड्रिंक समझकर बच्चे ने पी लिया ब्लीचिंग पाउडर का घोल

- तबीयत बिगड़ने पर मची अफरा-तफरी, सीएचसी में चल रहा उपचार

समाज जागरण खेकड़ा।

रटौल कस्बे में कोल्ड ड्रिंक के लालच में सात वर्षीय बच्चे ने घर में रखे ब्लीचिंग पाउडर के घोल को कोल्ड ड्रिंक समझकर पी लिया। घोल पीने के कुछ ही देर बाद उसकी तबीयत बिगड़ गई। परिजनों ने आनन-फानन में उसे उपचार के लिए खेकड़ा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया, जहां उसका उपचार चल रहा है। बताया गया कि रटौल कस्बे में एक कामगार का परिवार रहता है। घर में ब्लीचिंग पाउडर का घोल एक बोतल में रखा हुआ था। मंगलवार को कामगार का

सात वर्षीय पुत्र अलफेज खेलते-खेलते बोतल तक पहुंच गया और उसे कोल्ड ड्रिंक समझकर घोल पी लिया। घोल पीने के कुछ ही देर बाद बच्चे की तबीयत बिगड़ने लगी। यह देख परिजनों में हड़कंप मच गया। परिजन तुरंत बच्चे को लेकर खेकड़ा सीएचसी पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने उसका उपचार शुरू किया। फिलहाल बच्चे का उपचार जारी है।

मुंडन की खुशियां मातम में बदलीं, ईस्टर्न पेरीफेरल पर हादसे में मासूम समेत दो की मौत

- परिवार के साथ गांव जा रही 11 माह की बच्ची ने तोड़ा दम, बड़ी बहन गंभीर घायल

समाज जागरण खेकड़ा।

घर में मुंडन संस्कार की खुशियां मनाने जा रहे परिवार को रास्ते में ऐसा दर्दनाक हादसा झेलना पड़ा कि खुशियां पलभर में मातम में बदल गईं। मंगलवार रात ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेसवे पर खेकड़ा के पास हुए भीषण सड़क हादसे में 11 माह की मासूम बच्ची और कैंटर चालक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बच्ची की बड़ी बहन गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसे के बाद मृतकों के परिवारों में कोहराम मचा हुआ है। कासगंज के छिछोरा गांव निवासी लालू नरेला, दिल्ली में नौकरी करता है और अपनी पत्नी व दो बेटियों के साथ वहीं रहता है। मंगलवार को वह अपनी 11 माह की छोटी बेटी शिवांशी का मुंडन संस्कार कराने के लिए पत्नी और दोनों बेटियों के साथ कैंटर से गांव जा रहा था। बताया गया कि रात में उनका कैंटर ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेसवे पर खेकड़ा क्षेत्र में पहुंचा। इसी दौरान आगे चल रहे एक कैंटर के चालक ने अचानक ब्रेक लगा दिए। पीछे से आ रहा कैंटर अनियंत्रित होकर आगे चल रहे कैंटर में जा घुसा। टक्कर इतनी भीषण थी कि कैंटर चालक टिंकू और मुंडन संस्कार के लिए गांव जा रही 11 माह की मासूम शिवांशी की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में शिवांशी की बड़ी बहन तनिष्का गंभीर रूप से घायल हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और घायल तनिष्का को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। बुधवार को पोस्टमार्टम के बाद गमगीन परिजन दोनों शवों को अपने गांव ले गए। जिस घर में मासूम के मुंडन संस्कार की तैयारियां चल रही थीं, वहां अब चीख-पुकार और मातम पसरा हुआ है।

10 घंटे बंद रहेगा खेकड़ा का मुबारिकपुर रेल फाटक

- २७ जुलाई की रात से २८ जुलाई सुबह तक यातायात रहेगा बंद, बड़ागांव फाटक से गुजरेंगे वाहन

समाज जागरण खेकड़ा।

रेल पटरी की मरम्मत और पुरानी रेल लाइनों को बदलने के कार्य के चलते खेकड़ा में मुबारिकपुर मार्ग स्थित रेलवे फाटक 27 जुलाई की रात से 28 जुलाई की सुबह तक सड़क यातायात के लिए पूरी तरह बंद रहेगा। रेलवे प्रशासन ने इस दौरान वाहनों के आवागमन के लिए बड़ागांव मार्ग स्थित रेलवे फाटक को वैकल्पिक मार्ग निर्धारित किया है। वरिष्ठ अनुभाग अभियंता, उत्तर रेलवे बड़ौत की ओर से खेकड़ा कोतवाली प्रभारी को भेजे गए पत्र में बताया गया है कि मुबारिकपुर रेल फाटक के पास पुरानी रेल लाइन लगी हुई है। लंबे समय से उपयोग में आने के कारण यह रेल लाइन अब ट्रेनों के सुरक्षित संचालन के लिए उपयुक्त

नहीं रह गई है। यात्रियों की सुरक्षा को देखते हुए पुरानी रेल लाइन को बदलना आवश्यक है।

रेलवे के अनुसार 27 जुलाई की रात आठ बजे से 28 जुलाई की सुबह छह बजे तक करीब दस घंटे तक मुबारिकपुर मार्ग स्थित रेल फाटक से सड़क यातायात पूरी तरह बाधित रहेगा। इस दौरान वाहनों को बड़ागांव मार्ग स्थित रेलवे फाटक से होकर निकाला जाएगा। रेलवे अधिकारियों ने व्यवस्था बनाए रखने के लिए खेकड़ा कोतवाली से पुलिस बल की भी मांग की है। स्थानीय लोगों और वाहन चालकों से अपील की गई है कि असुविधा से बचने के लिए निर्धारित अवधि में मुबारिकपुर फाटक का रास्ता न अपनाएं और बड़ागांव मार्ग स्थित रेलवे फाटक से होकर आवागमन करें।

नीट में अरमान और लक्ष्य ने लहराया परचम, गुरुकुल विद्यापीठ में हुआ जोरदार स्वागत

- 581 और 600 अंक हासिल कर छात्रों ने बढ़ाया क्षेत्र का मान

समाज जागरण खेकड़ा।

राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (NEET) में शानदार प्रदर्शन कर गुरुकुल विद्यापीठ के दो मेधावी छात्रों ने विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। नीट में बेहतरीन अंक हासिल करने पर बुधवार को विद्यालय परिसर में दोनों

छात्रों का जोरदार स्वागत और सम्मान किया गया। उनकी सफलता से विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है। प्रधानाचार्या प्रभा सिंघल ने बताया कि विद्यालय से कक्षा 12वीं उत्तीर्ण छात्र अरमान पुत्र शकील खान ने नीट परीक्षा में 581 अंक, जबकि लक्ष्य शर्मा पुत्र अरिंदम शर्मा ने 600 अंक हासिल कर सफलता प्राप्त की है। दोनों छात्रों की उपलब्धि पर विद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में प्रबंधक मुकेश गुप्ता ने दोनों मेधावी छात्रों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि अरमान और लक्ष्य की सफलता विद्यालय के अन्य छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है। मेहनत, लगन और निरंतर अध्ययन के बल पर विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर उपप्रधानाचार्या राखी झा समेत विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं मौजूद रहे। विद्यालय परिवार ने दोनों छात्रों की सफलता पर हर्ष जताया।

मेधावी ताइक्वांडो खिलाड़ियों का सम्मान, प्रमाणपत्र पाकर खिले चेहरे

- जिला, राज्य और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर खिलाड़ियों ने बढ़ाया क्षेत्र का मान

समाज जागरण खेकड़ा।

कस्बे की छत्रपति शिवाजी ताइक्वांडो एकेडमी में बुधवार को आयोजित सम्मान समारोह में मेधावी ताइक्वांडो खिलाड़ियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने खिलाड़ियों की उपलब्धियों की सराहना करते हुए उनका हौसला बढ़ाया और भविष्य में भी बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया।

ताइक्वांडो एसोसिएशन बागपत से जुड़े खिलाड़ियों ने इस सत्र में जिला, राज्य, ओपन और राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक हासिल किए हैं। उनकी उपलब्धियों पर एकेडमी में आयोजित समारोह में खिलाड़ियों हुमैरा, दीक्षा, साक्षी, उदय, कृष्णा,

ईशान, अरबाज, कृष बंसल, शिवा डोडवाल, रिहान, देव यादव, पीयूष यादव, आजाद अहमद और आर्यन

समेत अन्य प्रतिभावान खिलाड़ियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सत्र की सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षिका विधि और प्रशिक्षक धर्मेंद्र शर्मा को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रबंधक डॉ. संदीप शाह समारोह के मुख्य अतिथि रहे। ताइक्वांडो एसोसिएशन के सचिव सचिन शर्मा ने बताया कि खिलाड़ियों ने पूरे सत्र में कड़ी मेहनत और लगन के साथ जिला, राज्य, ओपन और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन कर यह उपलब्धियां हासिल की हैं। समारोह में युवा रालोद के नगर अध्यक्ष अमित धामा, प्रधानाचार्य उमेश कुमार, समाजसेवी अजीत यादव, संघ अध्यक्ष सुभाष त्यागी समेत अनेक लोग मौजूद रहे।

त्रिपुरा के डीजीपी अनुराग धनखड़ का बड़ौत श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार, उमड़ा जनसैलाब

बेटे अभिषेक ने दी मुखाग्नि, गार्ड ऑफ ऑनर और हवाई फायरिंग से दी गई अंतिम विदाई

समाज जागरण बड़ौत।

त्रिपुरा के पुलिस महानिदेशक अनुराग धनखड़ का बुधवार सुबह नगर के श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनके बेटे अभिषेक ने उन्हें मुखाग्नि दी। सुबह 9:00 बजे निकली डीजीपी की अंतिम यात्रा में जनपद बागपत के सभी गणमान्य लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए। श्मशान घाट पर पुलिस प्रशासन द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और हवाई फायरिंग कर उन्हें अंतिम सलामी दी गई। मंगलवार रात 11:00 बजे उनका पार्थिव शरीर गांधी रोड स्थित उनके आवास पर पहुंचा था। शव पहुंचते ही पूरे परिवार में शोक की लहर दौड़ गई। डीजीपी की मां फूट-फूट कर रोने लगीं। मृतक की पत्नी कल्पना भी शव से लिपटकर देर तक बिलखती रहीं। बेटे अभिषेक ने किसी तरह मां को संभाला। अभिषेक "पापा-पापा" कहकर रोते रहे। डीजीपी अनुराग

धनखड़ मूल रूप से जनपद बागपत के बिहारीपुर गांव के निवासी थे। उनका शव 20 जुलाई को त्रिपुरा पुलिस मुख्यालय में मृत अवस्था में मिला था। सूचना मिलते ही बागपत एसपी सूरज कुमार राय, एडीशनल एसपी प्रवीण कुमार चौहान और डीजीपी के बेटे अभिषेक त्रिपुरा गए थे। वहां से पुलिस अधिकारियों के साथ एंबुलेंस के जरिए पार्थिव शरीर देर रात बड़ौत लाया गया था। अंतिम संस्कार में शहर के भारी संख्या में लोगों ने नम आंखों से उन्हें श्रद्धांजलि दी। डीजीपी अनुराग धनखड़ 1994 बैच के त्रिपुरा कैडर के आईपीएस अधिकारी थे। उन्होंने सीबीआई और सीआईएसएफ में भी अपनी सेवाएं दीं। वे संयुक्त राष्ट्र के कोसोवो मिशन में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके थे।

प्रॉपर्टी विवाद में भाजपा नेता को पिस्टल दिखाकर धमकी

गोपाल शर्मा ने बताया- गाड़ी से घर लौटते समय दबंगों ने रोका, कार्रवाई की मांग

समाज जागरण बड़ौत।

नगर में सराय मार्ग पर प्रॉपर्टी विवाद को लेकर कुछ दबंगों द्वारा समाजसेवी

एवं युवा भाजपा नेता गोपाल शर्मा को जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। मीडिया से रूबरू होते हुए गोपाल शर्मा ने बताया कि वह अपनी गाड़ी से सराय रोड मार्ग से अपने घर लौट रहे थे। तभी कुछ दबंग लोगों ने उन्हें रोका और जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि दबंगों ने उनकी छाती पर पिस्टल लगाकर धमकाया। गोपाल शर्मा ने इस संबंध में एसपी बागपत से शिकायत करते हुए दबंग लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जागौश - कोताना मार्ग गड्ढों में तब्दील, बरसात में जलभराव से आए दिन हो रहे हादसे

ग्रामीणों ने डीएम और राज्यमंत्री केपी मलिक से की सड़क मरम्मत की मांग,कई बार हो चुका है प्रदर्शन

समाज जागरण बड़ौत।

बड़ौत तहसील क्षेत्र के जागौश-कोताना मार्ग की हालत बेहद खराब हो गई है। यह मार्ग पूरी तरह से गड्ढों में तब्दील हो चुका है। बरसात होते ही यहां पानी भर जाता है, जिससे राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।ग्रामीणों ने बताया कि इसी मार्ग पर पहले मोटी बालू की खान संचालित थी। खनन के कारण सड़क पूरी तरह से धंस गई है और जगह-जगह गहरे गड्ढे हो गए हैं। कीचड़ और गड्ढों के कारण रोजाना बाइक फिसलकर गिर रही हैं। बीते दिनों आमने-सामने आ रही दो बाइकें आपस में टकरा गईं।

कीचड़ में दोनों बाइक गिरने से कई लोग चोटिल हो गए और उनके कपड़े भी कीचड़ से सन गए। इस समस्या को लेकर ग्रामीण कई बार धरना-प्रदर्शन भी कर चुके हैं, लेकिन आज तक इसका कोई समाधान नहीं हो पाया है। कोताना गांव के शिवा जाटव, डॉ. इंद्रपाल, समाजसेवी मिंटू कुमार, चिंटू कुमार, पूर्व प्रधान पति बालेश्वर कुमार प्रजापत, सुरेश कुमार और जागौश गांव के विशेष शर्मा, राहुल कुमार, संजीव कुमार, सुनील शास्त्री, मोहित त्यागी, नरेंद्र शर्मा, लोकेश कुमार, बबलू सहित अन्य ग्रामीणों ने जिला अधिकारी बागपत अस्मिता लाल और भाजपा सरकार में उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री केपी मलिक से मार्ग की शीघ्र मरम्मत कराने की मांग की है।

बड़का गांव में गौमाता ने एक साथ तीन बछियाओं को दिया जन्म, दर्शन को उमड़े ग्रामीण

समाज जागरण बड़ौत।

बड़ौत तहसील क्षेत्र के बड़का गांव में एक गौमाता के एक साथ तीन बछियाओं को जन्म देने का मामला चर्चा का विषय बना हुआ है। जानकारी के अनुसार सुभाष कश्यप के घर गौमाता ने तीन छोटी-छोटी बछियाओं को एक साथ जन्म दिया है। तीनों बछियाएं स्वस्थ हैं और गौमाता का दूध पी रही हैं। गौमाता अपनी तीनों बछियाओं को दुलार रही है। सुभाष कश्यप ने तीनों बछियाओं को गौमाता के थनों से दूध पिलाया। गांव के आसपास के क्षेत्र से लोग उनके घर पहुंचकर गौमाता को प्रणाम कर रहे हैं और उनका आशीर्वाद ले रहे हैं। ग्रामीण इसे भगवान की कुदरती माया और चमत्कार मान रहे हैं। पूरे जनपद बागपत में इस घटना को लेकर चर्चा है कि एक गौमाता ने एक साथ तीन स्वस्थ बछियाओं को जन्म दिया। हिंदू जागरण मंच के वरिष्ठ नेता आचार्य मधुसूदन शास्त्री ने गौमाता और बछियाओं का पूजन कराया। सुभाष कश्यप के परिवार वाले तीनों बछियाओं के लालन-पालन में जुट गए हैं।

साथी पोर्टल पर पंजीकरण न कराने वाले बीज विक्रेताओं का लाइसेंस होगा निरस्त

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

बिजनौर जिला कृषि अधिकारी, बिजनौर जसवीर सिंह तेवतिया ने जनपद के समस्त बीज निमार्ता, बीज प्रोसेसर, थोक एवं फुटकर बीज विक्रेताओं को निर्देशित किया है कि वे भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा विकसित साथी ((SATHI – Seed Auth enticatio n, Traceability & Holis tic Inventory)) पोर्टल पर निर्धारित समय सीमा के भीतर अपना पंजीकरण एवं प्रोफाइल अद्यतन करना अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि साथी पोर्टल का उद्देश्य देश में बीज उत्पादन, भंडारण, परिवहन, वितरण एवं विक्रय व्यवस्था को पूर्णतः पारदर्शी, डिजिटल एवं ट्रेसेबल बनाना है। इस पोर्टल पर प्रत्येक बीज व्यवसायी का ऑनलाइन रिकॉर्ड उपलब्ध होने से बीज की गुणवत्ता एवं प्रामाणिकता का सत्यापन सरल होगा तथा किसानों को प्रमाणित एवं गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराने की व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। उन्होंने बताया कि शासन के निदेर्शों के क्रम में जनपद बिजनौर के समस्त लाइसेंसधारी बीज निमार्ता, प्रोसेसर, थोक एवं फुटकर बीज विक्रेताओं का विवरण साथी पोर्टल पर ऑनलाइन दर्ज कराया जा रहा है तथा कृषि विभाग द्वारा चरणबद्ध तरीके से डेटा फीडिंग का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि यह पोर्टल बीज क्षेत्र में डिजिटल सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से किसी भी बीज की उत्पादन इकाई से लेकर किसान तक की संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला का डिजिटल रिकॉर्ड उपलब्ध रहेगा। इससे नकली, अमानक एवं अवैध स्त्रोतों से विक्रय किए जाने वाले बीजों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा तथा बीज संबंधी शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण भी संभव होगा। उन्होंने सभी बीज व्यवसायियों से अपील की है कि वे अपने बीज अनुज्ञापन पत्र (लाइसेंस), आधार कार्ड, पैन कार्ड, जीएसटी विवरण (जहां लागू हो), प्रतिष्ठान संबंधी अभिलेख एवं अन्य आवश्यक दस्तावेजों के साथ 25 जुलाई, 2026 तक साथी पोर्टल पर अपने आवंटित लॉगिन आईडी एवं पासवर्ड के माध्यम से लॉगिन कर आवश्यक विवरण भरना एवं दस्तावेज अपलोड करना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि निर्धारित तिथि के बाद यदि कोई बीज विक्रेता साथी पोर्टल पर पंजीकरण नहीं कराता है अथवा अपनी प्रोफाइल अद्यतन नहीं करता है और बिना साथी पोर्टल के बीज व्यवसाय संचालित करता पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध तत्काल प्रभाव से बीज लाइसेंस निरस्तीकरण की कार्रवाई नियमानुसार की जाएगी। उन्होंने बताया कि साथी पोर्टल पर पंजीकरण अथवा डेटा फीडिंग में किसी प्रकार की तकनीकी समस्या होने पर बीज विक्रेता जनपद के मास्टर ट्रेनर ओम ट्रेडिंग कम्पनी, बिजनौर, सिंह इंटरप्राइजेज, बिजनौर अथवा अपर जिला कृषि अधिकारी, बिजनौर के कार्यालय से संपर्क कर अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। जिला कृषि अधिकारी ने सभी बीज निमार्ता, थोक एवं फुटकर विक्रेताओं से समयबद्ध रूप से पंजीकरण एवं डेटा फीडिंग की प्रक्रिया पूर्ण करने का आग्रह करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि साथी पोर्टल के प्रभावी क्रियान्वयन से बीज व्यवसाय में पारदर्शिता बढ़ेगी, किसानों को गुणवत्तापूर्ण एवं प्रमाणित बीज उपलब्ध होंगे तथा कृषि क्षेत्र में तकनीक आधारित सुशासन को नई गति मिलेगी।

शिकायत पर हरकत में आया प्रशासन... विवादित भूमि से जेसीबी की मदद से हटवाए पाइप

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

नहटौर-हल्दौर मार्ग स्थित दुर्गा विहार कॉलोनी के समीप कब्रिस्तान के रूप में दर्ज विवादित भूमि से प्रशासन ने जेसीबी की मदद से सीमेंट के पाइपों को हटवा दिया। आरोप है कि कुछ लोग इस भूमि पर अवैध रास्ता बनाने के लिए पाइप डाल रहे थे। यह कार्रवाई राजस्व और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम की मौजूदगी में की गई। सरकारी अभिलेखों के अनुसार, खसरा संख्या 847 ग की भूमि कब्रिस्तान के रूप में दर्ज है। संबंधित भूमि से जुड़ा एक वाद सिविल जज (जूनियर डिवीजन) नगीना की अदालत में पहले से विचाराधीन है। मामला न्यायालय में होने के बावजूद कुछ लोगों द्वारा इस भूमि पर सीमेंट के पाइप डालकर रास्ता निकालने का प्रयास किया जा रहा था। इसकी भनक लगते ही कब्रिस्तान कमेटी और स्थानीय लोगों ने उपजि

लाधिकारी धामपुर से रविवार को तत्काल कार्रवाई की शिकायत की थी। शिकायत मिलने पर नायब तहसीलदार राजकमल, लेखपाल ब्रह्म कुमार रवि, कोतवाल किशन अवतार और कस्बा इंचार्ज अशोक मलिक पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और राजस्व अभिलेखों व स्थल का निरीक्षण किया।

इसके बाद नायब तहसीलदार राजकमल पुनः पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और जेसीबी की सहायता से विवादित स्थल पर डाले गए सीमेंट के पाइपों को हटवाकर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया। अधिकारियों ने बताया कि विवादित भूमि से पाइप हटवा दिए गए हैं। चूंकि मामला न्यायालय में विचाराधीन है, इसलिए राजस्व अभिलेखों और कोर्ट के निदेर्शों के आधार पर आगे की आवश्यक विधिक कार्रवाई नियमानुसार की जाएगी।

हरिद्वार मुरादाबाद मुख्य मार्ग पर सफाई अभियान चलाया गया

दैनिक समाज जागरण मुस्कान खान जनपद बिजनौर

स्योहारा हरिद्वार मुरादाबाद मुख्य मार्ग पर पडने वाले सभी ग्रामपंचायतों के सफाई कर्मचारियों ने एडीओ पंचायत के नेतृत्व में सफाई अभियान चलाया गया। सोमवार को कांवड़ यात्रा के मध्य नजर एडीओ पंचायत अनिल कुमार के नेतृत्व में हरिद्वार मुरादाबाद मुख्य मार्ग पर स्थित गोरा बदल चौकी से सहसपुर चौकी तक सफाई अभियान चलाया गया।

इस दौरान सफाई कर्मचारियों ने सड़क के दोनों और खड़े बड़े-बड़े पेड़ों, झाड़ियां सहित गंदगी को साफ किया। एडीओ पंचायत अनिल

कुमार ने बताया कि श्रावण मास के

अंतर्गत शिव भक्तों की यात्रा को ध्यान में रखते हुए सफाई अभियान चलाया गया है। लोगों से अपील की गई है कि वह सड़क ऊपर पूरा ना डालें और सफाई का विशेष

ध्यान रखें ताकि शिव भक्तों को कोई परेशानी ना हो। उन्होंने कहा कि लगातार सफाई अभियान चलाया जाएगा ताकि स्वच्छता बनी रहे और बरसात के मौसम में किसी तरह की कोई बीमारी ना फैले।

स्वतंत्रता दिवस-2026 की तैयारियों में जुटा जिला प्रशासन

डीएम नवीन कुमार ने अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश, शहीद अशफाक उल्ला खां स्टेडियम में होगा मुख्य समारोह

वीरेंद्र चौहान, समाज जागरण ब्यूरो किशनगंज। आगामी स्वतंत्रता दिवस-2026 के गरिमामय एवं सुव्यवस्थित आयोजन को लेकर जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। बुधवार को समाहरणालय स्थित कार्यालय वेश्म में जिलाधिकारी नवीन कुमार की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में समारोह से जुड़ी व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

बैठक में मुख्य समारोह स्थल शहीद अशफाक उल्ला खां स्टेडियम की तैयारियों, यातायात एवं पार्किंग व्यवस्था, बैरिकेडिंग, रंगाई-पुताई, राष्ट्रीय ध्वज फहराने, परेड, ध्वनि व्यवस्था, चिकित्सा सुविधा, साफ-सफाई, सुरक्षा, वाहन व्यवस्था, राष्ट्रीय गान, अभिभाषण और ई-कार्ड के माध्यम से आमंत्रण-पत्र भेजने सहित विभिन्न व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

जिलाधिकारी ने नगर परिषद को स्टेडियम में विशेष साफ-सफाई, वर्षा जल निकासी, पेयजल की समुचित व्यवस्था, आवश्यकता अनुसार मिट्टी भराई तथा बड़े घासों की कटाई समय पर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि समारोह के आयोजन में किसी प्रकार की अव्यवस्था नहीं होनी चाहिए।

डीएम ने महादलित टोलों में ध्वजारोहण के लिए चिन्हित पदाधिकारियों की सूची शीघ्र उपलब्ध कराने तथा वहां भी पूरे उत्साह और गरिमा के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाने के निर्देश दिए। साथ ही परेड में नए जवानों को भी शामिल करने पर जोर दिया।

बैठक में उप विकास आयुक्त प्रदीप कुमार झा, अपर समाहर्ता अमरेंद्र कुमार पंकज, अपर समाहर्ता (आपदा प्रबंधन) मो. उमैर, अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत कुमार, जिला योजना पदाधिकारी कुंदन कुमार सिंह सहित सभी संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

पटना में 25 हजार का इनामी अपराधी रविशंकर गिरफ्तार

अपहरण कर मांगी थी 20 लाख की फिरौती

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ बिहार एसटीएफ और पटना जिला पुलिस की संयुक्त टीम ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए 25 हजार रुपये के इनामी कुख्यात अपराधी रविशंकर कुमार को परसा बाजार थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार रविशंकर आलमगंज के अंबेडकर कॉलोनी का रहने वाला है और वह हवाई अड्डा थाना क्षेत्र में वर्ष 2022 से दर्ज अपहरण के एक मामले में फरार चल रहा था। पुलिस के अनुसार, यह मामला 22 जुलाई 2022 का है, जब बदमाशों ने हथियार के बल पर एलआईसी कर्मी राजेश गुप्ता का अपहरण कर लिया था और उनके परिजनों से 20 लाख रुपये की फिरौती मांगी थी। इस सनसनीखेज कांड में रविशंकर की संलिप्तता सामने आई थी, जिसके बाद से वह पुलिस की गिरफ्त से बचकर परसा बाजार में अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था। गुप्त सूचना के आधार पर एसटीएफ और पटना पुलिस ने संयुक्त रूप से छापेमारी कर उसे दबोच लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को अग्रिम कार्रवाई के लिए हवाई अड्डा थाने की पुलिस को सौंप दिया गया है। पुलिस इस मामले में उससे पूछताछ कर रही है।

पटना के ज्वेलरी दुकान में डकैती का आरोपी तीन साल बाद गिरफ्तार

दो लाख के आभूषण लूट मामले में थी तलाश

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के गर्दनीबाग थाना क्षेत्र के पुलिस कॉलोनी स्थित शिवशंकर ज्वेलर्स दुकान में दो लाख रुपये मूल्य के आभूषण लूटने के मामले में फरार चल रहे मुख्य आरोपी अमर कुमार सोनी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी मूल रूप से मसौढ़ी के श्रीनगर का रहने वाला है। घटना के संबंध में बताया गया कि 19 नवंबर 2022 को दुकानदार अमित कुमार अपनी दुकान पर बैठे थे। इसी दौरान छह की संख्या में बेखौफ बदमाश दुकान में घुसे और हथियार तान दिए। बदमाशों ने दुकानदार को जान से मारने की धमकी देते हुए करीब दो लाख रुपये की ज्वेलरी लूट ली और फरार हो गए। इस सनसनीखेज वारदात को लेकर दुकान के मालिक अमित कुमार ने गर्दनीबाग थाने में मामला दर्ज कराया था।

घटना के बाद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कुछ अपराधियों को पहले ही दबोच लिया था, लेकिन अमर कुमार सोनी लगातार फरार चल रहा था। पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई थी। इसी बीच, गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने छापेमारी कर तीन साल बाद आरोपी अमर कुमार सोनी को धर दबोचा। पुलिस अब उससे पूछताछ कर उसके अन्य साथियों के बारे में जानकारी जुटा रही है।

समस्तीपुर मंदिर चोरी कांड का खुलासा, तीन आरोपी गिरफ्तार

समस्तीपुर। बिहार पुलिस ने समस्तीपुर जिले के खानपुर थाना क्षेत्र स्थित चकोटी मठ मंदिर में हुई चोरी की वारदात का सफल खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से मंदिर से चोरी की गई छह मूर्तियां एवं पूजा सामग्री बरामद की है।

पुलिस के अनुसार, मंदिर चोरी की घटना के बाद गठित टीम ने तकनीकी एवं मानवीय साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई करते हुए तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया। पूछताछ के बाद उनकी निशानदेही पर चोरी की गई छह मूर्तियां और अन्य पूजा सामग्री बरामद कर ली गई। पुलिस मामले में आगे की जांच कर रही है। गिरफ्तार आरोपियों से यह भी पूछताछ की जा रही है कि चोरी की वारदात में और कौन-कौन शामिल थे तथा क्या उनका संबंध किसी संगठित चोरी गिरोह से है।

पटना के बिहटा में 100 पुड़िया स्मैक के साथ तस्कर गिरफ्तार

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बिहटा थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक स्मैक तस्कर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के घर से करीब 100 पुड़िया स्मैक बरामद की है, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत 50 हजार रुपये से अधिक बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार, गुप्त सूचना मिली थी कि समस्तु गांव के वार्ड संख्या-8 निवासी दीपा राय का पुत्र भीम कुमार अवैध रूप से स्मैक की खरीद-बिक्री में संलिप्त है।

सूचना के सत्यापन के बाद पुलिस टीम ने देर रात उसके घर पर छापेमारी कर आरोपी को दबोच लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से 100 पुड़िया स्मैक बरामद की गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल, पुलिस उससे पूछताछ कर यह पता लगाने में जुटी है कि इस अवैध नशे की खेप को कहां से लाया जाता था और किन-किन इलाकों में इसकी आपूर्ति की जाती थी। इस पूरे नेटवर्क का खुलासा करने के लिए पुलिस आगे की छानबीन कर रही है।

पटना के पालीगंज के स्कूलों में पहुंची 'अभया ब्रिगेड'

छात्राओं को सिखाए आत्मरक्षा के गुर और दिए सुरक्षा के टिप्स

समाज जागरण संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के पालीगंज में महिलाओं और छात्राओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए बिहार पुलिस की 'अभया ब्रिगेड' ने बुधवार को क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में विशेष जागरूकता अभियान चलाया। पालीगंज थानाध्यक्ष संतोष कुमार सिंह के निर्देश पर दारोगा प्रेमलता के नेतृत्व में टीम ने उत्क्रमित मध्य विद्यालय तोरणी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय नगवा और उच्च माध्यमिक विद्यालय रामपुर नगवा का दौरा किया। अभियान के दौरान 'अभया ब्रिगेड' की टीम ने छात्राओं को मानव तस्करी, महिला अपराध, साइबर अपराध, छेड़खानी और आत्मरक्षा के व्यावहारिक गुर सिखाए। साथ ही, किसी भी आपात

स्थिति में तुरंत पुलिस सहायता प्राप्त करने के तरीकों की विस्तार से जानकारी दी गई। छात्राओं को प्रेरित किया गया कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि या उत्पीड़न की सूचना बिना किसी डर के तुरंत पुलिस को दें। दारोगा प्रेमलता ने छात्राओं को आत्मविश्वास के साथ रहने, अनजान लोगों के झांसे में न आने और सोशल मीडिया का उपयोग बेहद सावधानी से करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इस ब्रिगेड का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को सुरक्षित माहौल देना और उन्हें हर प्रकार के अपराध के प्रति जागरूक करना है।

विद्यालय के शिक्षकों ने बिहार पुलिस की इस पहल की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम छात्राओं में आत्मबल बढ़ाते हैं। इस दौरान छात्राओं ने भी अपनी जिज्ञासाओं से जुड़े कई सवाल पूछे, जिनका टीम ने संतोषजनक जवाब दिया।

पटना के नौबतपुर में आहर में डूबने से दो सगे भाइयों की मौत, परिवार में छाया मातम

समाज जागरण संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के नौबतपुर थाना क्षेत्र के चेसी गांव में बुधवार को पानी से भरे आहर में डूबने से दो नाबालिग सगे भाइयों की असमय मौत हो गई। मृतकों की पहचान हुसैनचक गांव निवासी पिंटू सिंह के 14 वर्षीय पुत्र अभिजीत और 13 वर्षीय पुत्र प्रियांशु के रूप में हुई है। ग्रामीणों के अनुसार, धान रोपनी के दौरान छोटा भाई प्रियांशु आहर में नहाने गया था, जहां गहरे पानी में जाने से वह डूबने लगा। उसे बचाने के लिए बड़ा भाई अभिजीत भी आहर में कूद पड़ा, लेकिन अधिक गहराई होने के कारण दोनों भाई डूब गए। आसपास के लोगों ने दोनों को बाहर निकालकर नौबतपुर रेफरल अस्पताल पहुंचाया, जहां से डॉक्टरों ने उन्हें पटना एम्स रेफर कर दिया। एम्स में इलाज के दौरान दोनों भाइयों की मौत हो गई। इस हृदय विदारक घटना से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है।

पटना के जेपी गोलंबर पर छात्रों का प्रदर्शन

पुलिस ने किया लाठीचार्ज और वाटर कैनन का इस्तेमाल

समाज जागरण संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ नीट पेपर लीक मामले में जंतर-मंतर पर लाठीचार्ज और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर बुधवार को ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन के नेतृत्व में हजारों छात्र राजभवन मार्च के लिए निकले। प्रदर्शनकारी छात्र जब गांधी मैदान

स्थित जेपी गोलंबर के पास पहुंचे, तो पुलिस ने पहले से की गई बैरिकेडिंग से उन्हें रोकने का प्रयास किया। छात्रों के बैरिकेडिंग तोड़कर आगे बढ़ने की कोशिश करने पर पुलिस से उनकी तीखी झड़प हो गई। भीड़ को बेकाबू होते देख पुलिस ने पहले वाटर कैनन का इस्तेमाल किया और पानी की बौछार की। इसके बावजूद जब छात्र पीछे नहीं हटे, तो पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस के चार गोले दागे और हल्का लाठीचार्ज कर दिया। पुलिस की इस कार्रवाई से मौके पर भगदड़ मच गई और करीब दो घंटे तक जेपी गोलंबर के पास अफरातफरी का माहौल बना रहा। इस बल प्रयोग के दौरान कई छात्र और कवरेज कर रहे मीडियाकर्मी भी चोटिल हो गए।

इस विरोध प्रदर्शन और पुलिस कार्रवाई के कारण गांधी मैदान और उसके आसपास के इलाकों में भारी ट्रैफिक जाम लग गया। एग्जीविशन रोड, बाकरगंज समेत कई मुख्य मार्गों पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। पुलिस द्वारा खदेड़े जाने के बाद भी छात्र शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार और निजीकरण के खिलाफ अपना आंदोलन जारी रखने की बात कह रहे हैं।

पटना के बिक्रम में भारतीय किसान संघ की हुई बैठक

किसानों की समस्याओं को लेकर देशव्यापी आंदोलन का लिया निर्णय

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के बिक्रम बाजार स्थित पाटलिपुत्र रिसॉर्ट में बुधवार को भारतीय किसान संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पवन कुमार ने की, संचालन श्याम किशोर शर्मा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन अशोक कुमार ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के. साई रेड्डी ने दीप प्रज्वलित कर किया। बैठक से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में बिक्रम शहीद स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई, जिसके बाद सभा स्थल तक एक विशाल फ्लैग मार्च निकाला गया। बैठक में कृषि क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि आधुनिक कृषि तकनीक, जैविक खेती,

पशुपालन और डेयरी विकास में नवाचार को बढ़ावा देकर किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है। मुख्य अतिथि के. साई रेड्डी ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि फसल बीमा की विसंगतियों को दूर करने, सिंचाई योजना में तेजी लाने, आपदा राहत राशि बढ़ाने और खेतों के रास्तों को अतिक्रमण मुक्त कराने जैसी मांगें लंबे समय से लंबित हैं। कई बार ज्ञापन सौंपने के बावजूद ठोस पहल न होने पर, अब भारतीय किसान संघ ने देशव्यापी चरणबद्ध आंदोलन का ऐलान किया है ताकि किसानों के हितों के लिए सरकार पर दबाव बनाया जा सके। इस बैठक में अशोक कुमार, आलोक कुमार, संत कुमार, गौरी शंकर कुमार, लालू प्रसाद बौद्ध, योगेंद्र प्रसाद यादव, शंभु कुमार समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

पटना के मनेर में छत पर खेलने के दौरान गिरने से बच्चे की मौत

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के मनेर थाना क्षेत्र के गोरैया स्थान, नीलकंठ टोला गांव में छत पर खेलने के दौरान नीचे गिरने से एक 7 वर्षीय बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक की पहचान विजेंद्र कुमार के पुत्र दिलखुश कुमार के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया गया कि बच्चा अपने घर की छत पर खेल रहा था। छत पर रेलिंग न होने के कारण वह

filephoto

अचानक नीचे गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजनों और स्थानीय लोगों के सहयोग से उसे तुरंत दानापुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। इस हृदय विदारक घटना के बाद से परिवार में कोहराम मच गया है और पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई है। पंचायत समिति सदस्य धर्म भाई यादव समेत कई स्थानीय समाजसेवियों ने शोकाकुल परिवार से मिलकर गहरी संवेदना प्रकट की है।

पटना जंक्शन पर ट्रेन यात्रियों का लैपटॉप चुराने वाले गिरोह का भंडाफोड़

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ रेल जिला पुलिस ने ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के लैपटॉप व अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान चुराने वाले एक शातिर गिरोह का पदार्फाश करते हुए 5 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से लगभग 16 लाख रुपये मूल्य के 50 लैपटॉप, दो मॉनिटर, 15 कीबोर्ड, 27 चार्जर, तीन टैब और अन्य सामान बरामद किया है।

गिरफ्तार आरोपियों में गौतम कुमार (चोर), दुकानदार उदित कुमार, फवाज अहमद, गयासुद्दीन और दुकानदार का स्टाफ सूरज कुमार

शामिल हैं। पुलिस ने महाराजा कामेश्वर कॉम्प्लेक्स और डाकबंगला चौराहा स्थित दुकानों पर छापेमारी कर इन्हें पकड़ा। ये दुकानदार गौतम से कम कीमत पर चोरी के लैपटॉप खरीदकर उनकी रिमॉडलिंग कर बेचते थे। इस कार्रवाई की शुरूआत 19 जुलाई को राजरानी एक्सप्रेस के कोच सी-1 से महिला पुलिस अधिकारी सोनाली कुमारी का लैपटॉप चोरी होने के मामले से हुई, जो प्लेटफॉर्म पर उतरी थीं। मामले की जांच के दौरान 21 जुलाई को पटना जंक्शन के प्लेटफॉर्म संख्या 4 से पुलिस ने चोर गौतम कुमार को रंगे हाथों दबोच लिया। उसकी निशानदेही पर ही पुलिस ने बाकी आरोपियों को गिरफ्तार किया।

नबीनगर थाना परिसर में बच्चों को दिए गए सुरक्षा और कानून के टिप्स

दैनिक समाज जागरण अनील कुमार संवाददाता नबीनगर (औरंगाबाद)

नबीनगर (बिहार)बच्चों में आत्मविश्वास, सुरक्षा और कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से बुधवार को नबीनगर थाना परिसर में बालक-बालिका जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में आसपास के स्कूलों के बड़ी संख्या में बालक और बालिकाओं ने भाग लिया। बैठक में पुलिस पदाधिकारियों ने बच्चों को गुड टच-बैड टच, साइबर

सुरक्षा, बाल विवाह, नशे के दुष्प्रभाव और यातायात नियमों की जानकारी दी।बच्चों को संबोधित करते हुए एसआई श्याम बाबू कुमार ने कहा कि पुलिस आपके मित्र हैं। किसी भी तरह की परेशानी, छेड़छाड़ या साइबर ठगी होने पर डरें नहीं, तुरंत 112 या 1930 पर सूचना दें।उन्होंने बालिकाओं को सेल्फ डिफेंस के बेसिक तरीके भी बताए और कहा कि शिक्षा के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना जरूरी है।कार्यक्रम के दौरान बच्चों से सवाल-जवाब भी किए गए साथ ही हेल्पलाइन नंबर, महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की जानकारी भी दिया गया।उन्होंने बताया कि जिले में हर थाना स्तर पर इस तरह के जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे, ताकि बच्चे सुरक्षित माहौल में पढ़-लिखकर आगे बढ़ सके। इस दौरान एसआई राजू कुमार, एसआई कस्तूरी कुमारी, एएसआई महादेव विद्यार्थी,सुनील बोस, उमेश सिंह सहित स्कूल के शिक्षक, अभिभावक और थाना के अन्य पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

पटना के पालीगंज में चोर गिरोह का पदार्फाश, छह गिरफ्तार

समाज जागरण पटना जिला संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के पालीगंज थाना पुलिस ने एक शातिर चोर गिरोह का खुलासा करते हुए छह चोरों को गिरफ्तार किया है, जिनमें दो किशोर भी शामिल हैं। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर चोरी गए कई सामान बरामद किए हैं, जिनमें एयर कंडीशनर (एसी), ई-रिक्शा के पाट्र्स, टीवी, और पानी के मोटर शामिल हैं। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान प्रिंस कुमार, रंजीत कुमार, सुनील कुमार, आशिक कुमार, आजाद उर्फ चस्का और रुखिया के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, हाल ही में धरहरा मोड़ स्थित एक ई-रिक्शा की दुकान में चोरी की बड़ी वारदात हुई थी। मामला दर्ज कर छानबीन में जुटी पुलिस ने जब कुछ संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ की, तो इस पूरे सिंडिकेट का पदार्फाश हो गया। पूछताछ में यह भी सामने आया कि इस गिरोह में एक कबाड़ी दुकानदार भी संलिप्त है, जो चोरी का सामान खरीदता था। कड़ाई से पूछताछ के दौरान आरोपियों ने स्वीकार किया कि ई-रिक्शा दुकान में हाथ साफ करने से पहले उन्होंने धरहरा मोड़ के पास ही एक बंद पड़े रेस्टोरेंट को भी अपना निशाना बनाया था। वहां से उन्होंने एलसीडी टीवी, एसी और अन्य कीमती सामान चुराए थे। ये शातिर चोर चोरी के सभी सामानों को अलग-अलग जगहों पर खपाते थे और अवैध कारोबार चलाते थे। मामले की जानकारी देते हुए पालीगंज डीएसपी-1 राजीव चंद्र सिंह ने बताया कि पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए छह लोगों को दबोचा है, जिनमें चार बालिग और दो नाबालिग हैं। पुलिस अब इस गिरोह के पूरे नेटवर्क और अन्य आपराधिक इतिहास को खंगालने में जुटी है, ताकि चोरी के इस कारोबार से जुड़े अन्य लोगों को भी जल्द पकड़ा जा सके।

डीसीएम ट्रक से 1,485 लीटर विदेशी शराब बरामद, एक तस्कर गिरफ्तार

बिहार पुलिस और मद्यनिषेध एवं राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो की संयुक्त कार्रवाई, तस्करी नेटवर्क की जांच शुरू

समाज जागरण

मुजफ्फरपुर। बिहार में शराब तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मद्यनिषेध एवं राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (P&SNCB) तथा मुजफ्फरपुर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक छह चक्का डीसीएम ट्रक से 1,485 लीटर विदेशी शराब बरामद की है। इस कार्रवाई में एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है, जबकि मामले में आगे की जांच जारी है।

बिहार पुलिस के अनुसार, मद्यनिषेध एवं राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो के विशेष अभियान दल को शराब की

खेप ले जाए जाने की गुप्त सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर 21 जुलाई 2026 को ब्यूरो की टीम ने कांटी थाना पुलिस के साथ संयुक्त अभियान चलाया।

संयुक्त टीम ने संदिग्ध छह चक्का डीसीएम ट्रक को रोककर उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान ट्रक से 1,485 लीटर विदेशी शराब बरामद हुई, जिसे तत्काल जब्त कर लिया गया। मौके से ट्रक के साथ एक आरोपी को भी गिरफ्तार किया गया।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ की जा रही है, ताकि शराब तस्करी से जुड़े पूरे नेटवर्क, आपूर्ति श्रृंखला और इसमें शामिल अन्य लोगों का पता लगाया जा सके। बरामद शराब को जब्त कर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया गया है।

बिहार पुलिस ने कहा कि राज्य में शराबबंदी कानून को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए मद्यनिषेध एवं राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो तथा जिला पुलिस की संयुक्त कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी। तस्करी में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

बिहार पुलिस ने पकड़ी मिनी गन फैक्ट्री, संचालक गिरफ्तार

अवैध हथियार, कारतूस और हथियार बनाने की मशीनें बरामद, नेटवर्क की जांच शुरू

समाज जागरण

पटना। बिहार पुलिस ने अवैध हथियार निर्माण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए एक मिनी गन फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। कार्रवाई के दौरान फैक्ट्री संचालक मनोज विश्वकर्मा को गिरफ्तार कर बड़ी मात्रा में अवैध निर्मित एवं अर्द्धनिर्मित हथियारों के साथ हथियार बनाने में प्रयुक्त मशीनें और उपकरण बरामद किए गए।

बिहार पुलिस के अनुसार, गुप्त सूचना के आधार पर की गई छापेमारी में मौके से तीन देसी एकनाली बंदूकें, दो देसी कट्टे, एक अर्द्धनिर्मित देसी कट्टा, एक अर्द्धनिर्मित देसी पिस्टल तथा 10 जिंदा कारतूस बरामद किए गए।

इसके अलावा पुलिस ने सात खोखा कारतूस, चार लोहे के बैरल, दो ग्राइंडर मशीन, तीन ड्रिल मशीन, एक वेल्डिंग मशीन, एक लेथ मशीन तथा हथियार निर्माण में इस्तेमाल होने वाले अन्य उपकरण भी जब्त किए हैं।

पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ की जा रही है। यह पता लगाया जा रहा है कि अवैध हथियार किसके लिए तैयार किए जा रहे थे, उनकी आपूर्ति किन क्षेत्रों में की जाती थी और इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोग कौन हैं।

बिहार पुलिस ने कहा कि राज्य में अवैध हथियारों के निर्माण और तस्करी के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा तथा ऐसे अपराधों में शामिल किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मंडल की सभी समितियो मे पर्याप्त उर्वरक की उपलब्धता करें सुनिश्चितः श्रीकांत गोस्वामी

समाज जागरण
रंजीत तिवारी वाराणसी।

नोडल अधिकारी, वाराणसी मंडल, अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक, प्रबंध निदेशक, यूपीसीएलडीएफ श्रीकांत गोस्वामी की अध्यक्षता में व सर्किट हाउस, वाराणसी में विभागीय योजनाओं की समीक्षा बैठक हुई।अपर आयुक्त द्वारा आज सर्किट हाउस वाराणसी में सहकारिता विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की गई । उल्लेखनीय है कि श्री गोस्वामी वाराणसी मंडल के सहकारिता विभाग के नोडल अधिकारी भी हैं।अपर आयुक्त द्वारा विशेष कर मूल्य समर्थन योजना अंतर्गत जनपद वाराणसी चंदौली गाजीपुर एवं जौनपुर में क्रीत किए गए गेंहू के डिलीवरी एवं किसानों के भुगतान की समीक्षा की गई, तथा निर्देशित किया गया कि परिवहन या भंडारण की समस्याओ का त्वरित कार्रवाई करके निस्तारण सुनिश्चित

करे उक्त समीक्षा बैठक में संयुक्त आयुक्त एवं संयुक्त निबंधक सहकारिता वाराणसी मंडल सोमी सिंह द्वारा जनपद वाराणसी चंदौली गाजीपुर एवं जौनपुर के जिला प्रबंधक पीसीएफ, पीसीयू एवं यूपीएसएस तथा क्षेत्रीय प्रबंधक वाराणसी मंडल को निर्देशित किया कि अपर आयुक्त द्वारा दिए गए निदेशों का शत प्रतिशत पालन सुनिश्चित कराएं। अपर आयुक्त द्वारा जिला सहकारी बैंक जौनपुर वाराणसी एवं गाजीपुर से भी पैक्स कंप्यूटराइजेशन योजना अंतर्गत समितियों के डायनेमिक डे इंड, ऑन सिस्टम ऑडिट एवं ई-पैक्स रूपांतरण की भी समीक्षा की गई ।उन्होंने संबंधित अधिकारियो को यह भी निर्देशित किया कि कोई भी समिति डायनेमिक डे एंड से बाहर न आने पाए। डी0एल0 एम0 आई0सी0 और डी0एम0 सी0की बैठक नियमित रूप से कराएं। अपर आयुक्त ने निर्देशित किया कि डेयरी समितियों का रजिस्ट्रेशन कर दुग्ध उत्पादन एवं व्यवसाय सम्बंधित कारोबार समिति के माध्यम से कराए। अपर आयुक्त द्वारा सभी बीपैक्स पर 31 अगस्त तक कंप्यूटर भिज्ञ कार्मिकों की मानक के अनुरूप नियुक्ति के निर्देश दिए।वसूली की स्थिति असंतोषजनक पाई गई संयुक्त आयुक्त सोमी सिंह ने बताया कि वाराणसी मंडल प्रदेश मे वसूली मे सर्वाधिक खराब चार मंडलो मे है।अपर आयुक्त ने सभी सहायक आयुक्तो और सीईओ जिलासह कारीबैंक को निर्देशित किया कि गतवर्ष से पीछे चल रहे ब्लाको व शाखाओ के संबंधित एडीओ व शाखा प्रबंधको को कारण बताओ नोटिस जारी करें। बैठक में विभिन्न योजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई गोदामो के सुदृढ़ीकरण व मरम्मत योजना,जन औषधि केन्द्र तथा अन्य सामयिक योजनाओ की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने, निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने एवं शासन की मंशा के अनुरूप किसानों को अधिकतम लाभ उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।आज इसके पूर्व वाराणसी मंडल की सीमा पर पहुंचने पर संयुक्त आयुक्त एवं संयुक्त निबंधक वाराणसी मंडल सोमी सिंह, सहायक आयुक्त वाराणसी सुरेंद्र कुमार मौर्य तथा सहायक आयुक्त जौनपुर बृजेश पाठक ने अपर आयुक्त ,प्रबंध निदेशक का स्वागत किया। समीक्षा बैठक में जनपद वाराणसी जौनपुर गाजीपुर चंदौली के समस्त सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक, सी0ई0ओ0 जिला सहकारी बैंक, जिला प्रबंधक पीसीएफ पीसीयू एवं यूपीएसएस तथा अपर जिला सहकारी अधिकारी उपस्थित रहे।

बयोबृद्ध व दिव्यांगों की जांचकर जागरुकता सहित पंजीकरण का कार्य सम्पन्न

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी। हरहुआ ब्लाक के ग्राम पंचायत शिवरामपुर आयुष्मान आरोग्य मन्दिर पर पीएचसी हरहुआ व एलिम्को के टीम द्वारा वयोबृद्ध जनों व दिव्यांगजनो की जांचकर जागरूकता प्रदान करते हुए पंजीकरण का कार्य किया गया। पीएचसी हरहुआ प्रभारी डॉ0 सन्तोष कुमार के अनुसार 60 वर्ष व उससे ऊपर उम्र के बृद्धजनो व दिव्यांगों को उपकरण प्रदान करने के लिए शिविर के द्वारा शिवरामपुर आयुष्मान आरोग्य मन्दिर केंद्र पर जांच की व्यवस्था की गई थी। जिसमे कुल 38 लोगो का पंजीकरण किया गया। कान से सुनाई न देने पर मशीन ,कमर दर्द पर बेल्ट, घुटने के दर्द के लिए निकैप ,अपंगों के लिए ट्राई साइकिल,

व्हील चेयर,आंख से कम दिखने पर चश्मा ,मुंह मे दांत लगाने जैसे कई जांच की गई है। ऐसे लोगो को उपकरण निःशुल्क मिलेगा। 20 जुलाई से शुरू यह 3 अगस्त तक चलेगा वहीं एलिम्को टीम 5 अगस्त तक पंजीकरण का कार्य करेगी। जांच टीम में डॉ0अवनीश कुमार राय, आप्टोनिष्ट विनोद कुमार मौर्य ,ए एन एम रंजना कुमारी, सीएचओ नेहा पटेल व ए एन एम बंदना सहित क्षेत्रीय आशा कर्मियों व एलिम्को टीम ने शिविर में सहयोग किया।

अजगरा विधानसभा के बूथ अध्यक्ष सम्मेलन में कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों के प्रति किया गया सजग

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी हरहुआ रिंग रोड फेज-1 'द वेडिंग हाउस नियर शंकरा नेत्रालय में आज बुधवार को अजगरा विधानसभा के भारतीय जनता पार्टी बूथ अध्यक्षो का सम्मेलन कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों के प्रति सजग करते हुए पार्टी के भावी राजनीतिक रणनीति पर चर्चा हुई। विधायक त्रिभुवन राम ने कहा कि तेजी से हो रहे सांस्कृतिक ,भौतिक , सामाजिक ,आर्थिक ,धार्मिक व आध्यात्मिक विकास के दौर में आगामी विधान सभा के चुनाव की तैयारी में हर स्तर पर अपनी जिम्मेदारी ही कार्यकर्ता के भावनाओ का विकास होता है। हमें दुने उत्साह के साथ अभी से लग जाने की जरूरत है हर परिस्थितियों के लिए कार्यकर्ताओं को चुनौतियों

से सजग रहना है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा0 राणा प्रताप सिंह पूर्व जिला अध्यक्ष चंदौली ने कार्यकर्ताओं चुनाव में अपने दायित्व का बोध कराते हुए अन्य विषयों को लेकर सम्बोधित किया। प्रमुख रूप से अखण्ड प्रताप सिंह कार्यक्रम के संयोजक तथा जिला उपाध्यक्ष,चंद्रशेखर सिंह ,कपिल नारायण पांडेय, रामप्रकाश सिंह बीरू,सुनीता क्षेत्रीय कार्यालय, अपराजिता सोनकर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वाराणसी,मण्डल अध्यक्ष आयर शैलेन्द्र पटेल, मण्डल अध्यक्ष हरहुआ अजय मिश्रा ,उपाध्यक्ष अरुणेंद्र सिंह, मण्डल अध्यक्ष चौबेपुर लक्ष्मण सिंह,विपिन चंद्र राय मण्डल अध्यक्ष चोलापुर, सेक्टर संयोजक गण,शक्ति केंद्र संयोजक गण, तथा भारी संख्या में बूथ अध्यक्ष गण कार्यकर्ता गण, प्रधानगण कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अब कचहरी परिसर में मिलेगी मुफ्त वाई-फाई सुविधा

समाज जागरण रंजीत तिवारी

वाराणसी ।नगर निगम काशी को स्वच्छ और सुंदर बनाने के साथ-साथ अब इसे डिजिटल रूप से भी सशक्त बनाने में जुट गया है। इसी क्रम में शहर में डिजिटल कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए बुधवार को महापौर अशोक कुमार तिवारी ने कचहरी परिसर स्थित बनारस बार एसोसिएशन के सभागार में निःशुल्क वाई-फाई सेवा का विधिवत शुभारंभ किया। नगर निगम ने इस महत्वाकांक्षी डिजिटल पहल का आगाज सबसे पहले अस्सी घाट और दशाश्वमेध घाट से किया था। इसके बाद दूसरे चरण में पूर्वांचल के सबसे बड़े बीएचयू अस्पताल और ट्रामा सेंटर को मुफ्त वाई-फाई

सेवा से जोड़ा गया था। वहीं, तीसरे चरण में अब कचहरी परिसर को भी इस सुविधा से लैस कर दिया गया है।इसके साथ ही अब शहर के पांच प्रमुख और भीड़भाड़ वाले स्थानों पर लोगों को फ्री हाई-स्पीड वाई-फाई मिलने लगा है। शुभारंभ के दौरान महापौर ने कहा कि वर्तमान समय में इंटरनेट एक बुनियादी आवश्यकता बन चुका है। यह परियोजना वाराणसी को एक आधुनिक और स्मार्ट सिटी बनाने के हमारे संकल्प का अहम हिस्सा है। आम नागरिकों, अधिवक्ताओं और युवाओं की सहूलियत के लिए निगम ने वाई-फाई जोन में विशेष बोर्ड लगाए हैं। इन बोर्डस पर एक क्यूआर कोड दिया गया है, जिसे मोबाइल से स्कैन करते ही लोग बेहद आसानी से फ्री इंटरनेट सेवा का लाभ उठा सकते हैं। वाई-फाई व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने की जिम्मेदारी सार्वजनिक क्षेत्र की दूरसंचार कंपनी बीएसएनएल को सौंपी गई है। बीएसएनएल के प्रधान महाप्रबंधक अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि इस नेटवर्क की स्पीड और कवरेज को इस तरह डिजाइन किया गया है कि कचहरी में अत्यधिक भीड़ होने पर भी कनेक्टिविटी में कोई रुकावट न आए और सुचारू रूप से डेटा ट्रांसफर होता रहे। संचालन बनारस बार एसोसिएशन के महामंत्री सुधांशु मिश्रा ने किया। इस अवसर पर सेंट्रल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रेम प्रकाश सिंह गौतम, महामंत्री आशीष कुमार सिंह, सेंट्रल बार के पूर्व महामंत्री अश्वनी राय, बनारस बार एसोसिएशन के अध्यक्ष विनोद कुमार शुक्ला, उपाध्यक्ष सतीश यादव, भाजपा महानगर महामंत्री जगदीश त्रिपाठी, पार्षद मदन मोहन दुबे, बलराम कनौजिया, संदीप रघुवंशी, अरविंद सिंह, संदीप मौर्य, कमलेश यादव, संयुक्त नगर आयुक्त जितेंद्र आनंद, निगम के पीआरओ संदीप श्रीवास्तव, बीएसएनएल के एस डीओ अभिजीत कुमार साहा सहित कई वरिष्ठ अधिवक्ता उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावियों का हुआ सम्मान

समाज जागरण रंजीत तिवारी

रामेश्वर वाराणसी। विकासखंड में भारत सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा दयापुर-भटौली स्थित कोचिंग सेंटर में बुधवार को मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जेईई परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र शाहिल पाल एवं विवेक पाल तथा नीट परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले गौरव पटेल को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही अग्निवीर का सफल प्रशिक्षण पूरा कर वापस लौटे आजाद पंकज का भी माल्यार्पण एवं स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत रत्न डॉ. भीमराव आंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए कहा कि सफलता का मूल मंत्र कठिन परिश्रम, अनुशासन और लक्ष्य के प्रति समर्पण है। उन्होंने विद्यार्थियों से निरंतर अध्ययन करते हुए अपने माता-पिता, शिक्षकों तथा क्षेत्र का नाम रोशन करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर डॉ. श्रवण कुमार गुप्त एवं राजा राम मौर्य ने भी विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए जीवन में संघर्ष, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के महत्व पर प्रकाश डाला तथा उन्हें उच्च लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुशील सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन सुधांशु तिवारी ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कोचिंग संस्थान के निदेशक मुन्ना लाल मौर्य, भारत सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी डॉ. ओम प्रकाश , डॉ. उदय वर्मा, संजय कुमार यादव, रमेश पटेल, कृष्ण कुमार अजीत कुमार,संजय कुमार मुन्ना लाल सैनी, राम शरण गौतम सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं अभिभावक उपस्थित रहे।

नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी ने शिक्षकों के साथ की बैठक

समाज जागरण रंजीत तिवारी
रामेश्वर वाराणसी।।

नेता प्रतिपक्ष तथा वाराणसी शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित विधान परिषद सदस्य लाल बिहारी यादव ने गंगापुर इंटर कॉलेज में शिक्षकों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों के हित में अपने 6 साल के कार्यकाल के बारे में जानकारी दी।उन्होंने कहा कि वे शिक्षक हित और शिक्षकों को मिलने वाले

सुविधाओं को लेकर लगातार सदन में सवाल उठाते रहे हैं।कई समस्याओं का समाधान भी उन्होंने कराया।लाल बिहारी यादव ने कहा कि शिक्षक की सेवा सुरक्षा में किए गए बदलाव अमान्य है।इसके लिए भी संघर्ष जारी है।इस दौरान उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षणेत्तर संघ के जिला अध्यक्ष चंद्रमोहन उपाध्याय ने लाल बिहारी यादव से मिलकर उनके संवर्ग के कर्मचारियों को कैशलेश चिकित्सा सुविधा से आच्छादित किए जाने की मांग की। चंद्र मोहन उपाध्याय का कहना था कि यह सुविधा न मिलने से कर्णिक वर्ग के कर्मचारियों का परिवार चिकित्सा सुविधा से वंचित रह जाएगा।

इस दौरान गंगापुर इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉक्टर श्री प्रकाश सिंह प्रवीण सिंह, अवधेश यादव, राममूर्ति शीतला आदि ने भी अपने विचार रखे और समस्याओं से अवगत कराया। बैठक के दौरान रतन शंकर सिंह,लाल बहादुर सिंह,राजधर तिवारी ,शिवपूजन चौरसिया, आनंद सिंह,वंदना यादव, गीता पटेल, रंजीत यादव,सूरज आदि उपस्थित रहे।

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए उठाए जाएं प्रभावी कदम,सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर आमजन को यातायात नियमों के पालन के लिए किया जाए प्रेरित -पवन कुमार गंगवार

समाज जागरण

मीरजापुर / जिलाधिकारी पवन कुमार गंगवार ने पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कर जनपद में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए प्रभावी एवं ठोस कदम उठाए जाने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है और दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। बैठक में सड़क दुर्घटनाओं के कारणों, ब्लैक स्पॉट्स, यातायात प्रबंधन, सड़क संकेतकों की उपलब्धता, अवैध अतिक्रमण, वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों के पालन तथा जनजागरूकता अभियान की समीक्षा

की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को दुर्घटना संभावित स्थलों का चिन्हांकन कर आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई समयबद्ध ढंग से सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा से जुड़े सभी विभाग नियमित निरीक्षण करें तथा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई की जाए। साथ ही विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सड़क सुरक्षा संबंधी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर आमजन को यातायात नियमों के पालन के लिए प्रेरित किया जाए। जिलाधिकारी ने एन0एच0आई0 एवं टोल प्लाजा संचालकों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी सी0सी0टी0वी0 कैमरे सक्रिय रहे एवं टोल प्लाजा के आस पास भारी वाहनों को न खड़ा करने दिया जाए इससे सम्बन्धित समय-समय पर टोल कर्मियो के द्वारा एनाउंस भी कराया जाए। उन्होंने कहा कि स्कूलों में चलाए जा रहे स्कूली वाहनों का सत्यापन करे। उन्होंने कहा कि क्षेत्राधिकारी नगर, जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तीन दिन में संयुक्त रूप से स्कूलों की जांच करे स्कूलो में चल रहे वाहनो की सूची ले तथा देखे कि वाहन नियमानुसार संचालित है अथवा नही नियमानुसार नहीं होने पर सम्बन्धित के विरूद्ध कठोरतम कार्यवाही कार्यवाही करें। सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक रोडवेज को निर्देशित करते हुए जनपद में डग्गामार वाहनों पर कार्यवाही करे जिन वाहनों के परमिट नियमानुसार सही है उन्ही का संचालन कराया जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में दुर्घटना होने वाली सड़को/स्थलों की सूची उपलब्ध कराएं। पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए यातायात नियमों का कड़ाई से अनुपालन कराया जाए। ओवर स्पीडिंग, नशे की हालत में वाहन चलाने, बिना हेलमेट एवं बिना सीट बेल्ट वाहन चलाने तथा अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध अभियान चलाकर प्रभावी कार्रवाई की जाए। बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारियों ने अपने-अपने विभागों द्वारा सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी तथा सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए आवश्यक सुझाव प्रस्तुत किए। जिलाधिकारी ने सभी विभागों को समन्वित प्रयासों के माध्यम से सड़क सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विशाल कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक राज कुमार दीक्षित, क्षेत्राधिकारी नगर अमित कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

बाबा सिद्धनाथ की दरी में शाम 5 बजे के बाद पर्यटकों के प्रवेश पर लगा प्रतिबंध

समाज जागरण

मीरजापुर / विकासखंड राजगढ़ क्षेत्र के बाबा सिद्धनाथ की दरी पर पर्यटन की दृष्टिगत को देखते हुए पर्यटकों के लिए सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए थाना चुनार क्षेत्र के सक्तेशगढ़ चौकी अंतर्गत स्थित सिद्धनाथ दरी पर शाम 5 बजे के बाद पर्यटकों के आवागमन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। यहां पर अभी दो दिन पहले ही घटना घटी है इसी को देखते हुए प्रशासन ने यह बड़ा कदम उठाया है। क्षेत्राधिकारी चुनार ने आदेश दिया है कि 21 जुलाई से आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है।सिद्धनाथ की दरी पर्यटन के दृष्टिकोण से प्रसिद्ध है, जहां बड़ी संख्या में लोग स्नान और पिकनिक मनाने आते हैं। वर्तमान में बाबा सिद्धनाथ की दरी पर काफी रात तक पर्यटक लापरवाहीपूर्वक स्नान/पिकनिक मनाते हैं, जिसके कारण दुर्घटनाएं होती रहती हैं। शासन की मंशा के अनुरूप जन सुरक्षा व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए यह निर्णय लिया गया है। आदेश में स्पष्ट किया गया है कि शाम 5 बजे के बाद सिद्धनाथ दरी/वॉटर फॉल क्षेत्र में पर्यटकों का प्रवेश पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित रहेगा। प्रशासन ने आम जनता से अपील की है कि आदेश का पालन करें और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करें। पुलिस को निर्देश दिए गए हैं कि प्रतिबंधित समय में क्षेत्र में गश्त कर व्यवस्था बनाए रखें।

स्ट्रॉबेरी की खेती कर किसान हो रहे मालामाल, सरकार दे रही भारी अनुदान, प्रति हेक्टेयर 90 हजार रूपए अनुदान दे रही सरकार

*वर्तमान में 100 एकड़ से अधिक भूमि पर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे किसान प्रति एकड़ 12-14 लाख रुपए होता है शुद्ध लाभ

समाज जागरण

मीरजापुर / किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रदेश की योगी सरकार पारंपरिक खेती के साथ-साथ बागवानी को भी लगातार बढ़ावा दे रही है। सरकार की विभिन्न योजनाओं और अनुदान का लाभ उठाकर जनपद मीरजापुर के किसान अब स्ट्रॉबेरी की खेती की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। राजगढ़ क्षेत्र में भी कई किसान 5 वर्ष से ज्यादा हो साल से स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं जिसमें मुख्य रूप से अध्यापक राधेश्याम सिंह देवशरण सिंह स्ट्रॉबेरी की खेती कम लागत ज्यादा मुनाफा कमा रहे हैं कम लागत में ज्यादा पैसों के मुनाफा मिलता है क्रम समय में अधिक मुनाफा देने वाली इस फसल ने किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिला उद्यान अधिकारी मेवाराम ने बताया कि जनपद मीरजापुर में वर्तमान समय में 190 किसान 100 एकड़ से अधिक भूमि पर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। वर्ष 2026-27 में स्ट्रॉबेरी की खेती का रकबा बढ़ाकर 150 एकड़ करने का लक्ष्य है। बताया कि किसानों को इस फसल के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रति हेक्टेयर 90 हजार रुपये का अनुदान दिया जा रहा है। इससे किसानों पर शुरुआती लागत का बोझ कम हो रहा है और अधिक से अधिक किसान बागवानी फसलों की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि स्ट्रॉबेरी की खेती करने करने वाले किसान एक फसल में प्रति एकड़ 12 से 14 लाख की आय अर्जित कर

रहे हैं। लगातार बढ़ रहा स्ट्रॉबेरी का रकबा उन्होंने बताया कि स्ट्रॉबेरी एक नकदी फसल है, जिसकी बाजार में पूरे वर्ष अच्छी मांग बनी रहती है। मीरजापुर की जलवायु और मिट्टी इस फसल के लिए अनुकूल साबित हो रही है। यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में स्ट्रॉबेरी की खेती का रकबा लगातार बढ़ा है। किसान पारंपरिक फसलों की तुलना में स्ट्रॉबेरी से कई गुना अधिक लाभ अर्जित कर रहे हैं। उद्यान अधिकारी ने बताया कि विभाग की ओर से किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तायुक्त पौधों की उपलब्धता तथा आधुनिक खेती की जानकारी भी दी जा रही है। विभाग समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों से अवगत करा रहा है। इससे उत्पादन और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि हो रही है।बाजार में है स्ट्रॉबेरी की भारी मांग स्ट्रॉबेरी की खेती से न केवल किसानों की आय में बढ़ोतरी हुई है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी सृजित हुए हैं। फसल की तुड़ाई, पैकिंग और विपणन कार्यों में स्थानीय लोगों को रोजगार मिल रहा है। इसके अलावा मीरजापुर की स्ट्रॉबेरी अब आसपास के जिलों के साथ-साथ बड़े शहरों के बाजारों तक पहुंच रही है। योगी सरकार की बागवानी प्रोत्साहन नीति और उद्यान विभाग के प्रयासों का ही परिणाम है कि मीरजापुर के किसान आधुनिक और लाभकारी खेती को अपनाकर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। स्ट्रॉबेरी की खेती किसानों के लिए आय का नया स्रोत बनकर उभरी है और आने वाले समय में इसके विस्तार की व्यापक संभावनाएं दिखाई दे रही हैं।

राजगढ़ पुलिस ने अंतरराज्यीय वाहन चोर गैंग का भंडाफोड़, चार गिरफ्तार

समाज जागरण

मीरजापुर। थाना राजगढ़ पुलिस ने अंतरराज्यीय वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए चार शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से चोरी की सात मोटरसाइकिलें बरामद की गई हैं। यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक के निर्देश पर चलाए जा रहे वाहन चोरी रोकथाम अभियान के तहत की गई। पुलिस के अनुसार, 22 जुलाई 2026 को मुखबिर की सूचना पर शक्तेशगढ़ रोड स्थित निर्माणाधीन चिड़ियाघर की बाउंड्री के भीतर छापेमारी कर अशोक कुमार (सोनभद्र), रवि कुमार व रविंदर राम (कैमूर, बिहार) तथा रामकेश उर्फ नसुड़ी (राजगढ़, मीरजापुर) को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के पास से चोरी की सात मोटरसाइकिलें बरामद हुईं। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उनका संगठित गिरोह विभिन्न क्षेत्रों से मौका पाकर मोटरसाइकिल चोरी करता था। चोरी के बाद वाहनों की नंबर प्लेट हटाकर उन्हें छिपा दिया जाता था और बाद में बेचकर प्राप्त रकम आपस में बांट ली जाती थी। इसी से वे अपना और परिवार का खर्च चलाते थे। इस मामले में थाना राजगढ़ पर बीएनएस की संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया। गिरोह के अन्य सदस्यों और चोरी के नेटवर्क के संबंध में भी जांच जारी है।

अमृत हरित महाअभियान को मिली नई उड़ान, जैतहरी व्यापार परिसर में सैकड़ों फलदार पौधों का वृहद वृक्षारोपण

नगर परिषद जैतहरी की पहल से महर्षि कश्यप व्यापार परिसर हुआ हरियालीमय, एसडीएम कमलेश पुरी सहित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और नागरिकों ने लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

समाज जागरण

जैतहरी, अनूपपुर। पर्यावरण संरक्षण, हरित विकास और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से संचालित अमृत हरित महाअभियान के अंतर्गत नगर परिषद जैतहरी द्वारा महर्षि कश्यप व्यापार परिसर में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों फलदार पौधों का रोपण कर हरित जैतहरी का संदेश दिया गया। अभियान में प्रशासनिक अधिकारियों, नगर परिषद के कर्मचारियों तथा बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई।

कार्यक्रम का शुभारंभ पौधारोपण के साथ हुआ। उपस्थित अधिकारियों एवं नागरिकों ने स्वयं पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा सभी से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया। वृक्षारोपण केवल एक औपचारिकता न होकर जनभागीदारी का अभियान बने, इसी उद्देश्य से प्रत्येक सहभागी ने पौधों के संरक्षण का भी संकल्प लिया।

इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कमलेश पुरी ने कहा कि वृक्ष प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पौधे लगाना जितना महत्वपूर्ण है, उससे कहीं अधिक आवश्यक उनका संरक्षण और

नियमित देखभाल है। यदि प्रत्येक नागरिक वर्ष में कम से कम एक पौधा लगाकर उसे वृक्ष बनने तक सुरक्षित रखे, तो पर्यावरण संरक्षण का लक्ष्य आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

मुख्य नगर परिषद अधिकारी भूपेंद्र सिंह ने कहा कि नगर परिषद जैतहरी द्वारा अमृत हरित महाअभियान के अंतर्गत लगातार हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किया जा रहा है। महर्षि कश्यप व्यापार परिसर में लगाए गए फलदार पौधे भविष्य में न केवल परिसर की सुंदरता बढ़ाएंगे, बल्कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने, छाया प्रदान करने और स्थानीय जैव विविधता को समृद्ध करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि लगाए गए पौधों को अपना समझकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करें। कार्यक्रम में उपस्थित विकास त्रिपाठी, कुलदीप मिश्रा, संजीव राठौड़, श्याम नारायण गुप्ता, अवधेश तिवारी सहित अन्य गणमान्य नागरिकों ने भी पौधारोपण कर अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाई। सभी ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल शासन-प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। कार्यक्रम के दौरान नगर परिषद के अधिकारियों और कर्मचारियों ने पौधों के संरक्षण के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं की भी जानकारी दी। पौधों की नियमित सिंचाई, सुरक्षा और देखरेख की योजना तैयार की गई है ताकि लगाए गए पौधे स्वस्थ रूप से विकसित होकर बड़े वृक्ष बन सकें। इसके लिए स्थानीय लोगों का सहयोग भी लिया जाएगा।

महर्षि कश्यप व्यापार परिसर में लगाए गए अधिकांश पौधे फलदार प्रजातियों के हैं, जो भविष्य में पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ लोगों को फल और छाया भी प्रदान करेंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि फलदार वृक्ष पक्षियों और अन्य जीवों के लिए भी उपयोगी होते हैं तथा जैव विविधता को बढ़ावा देते हैं। यही कारण है कि इस अभियान में फलदार पौधों को विशेष प्राथमिकता दी गई।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नगर परिषद के कर्मचारी, सामाजिक कार्यकर्ता, व्यापारी, युवा एवं क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने एक स्वर में पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान "एक पौधा - एक जीवन", "हरियाली ही खुशहाली" और "पेड़ लगाएं, भविष्य बचाएं" जैसे संदेश भी दिए गए। नगर परिषद जैतहरी द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान केवल पौधारोपण तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने का भी प्रयास है। प्रशासन का मानना है कि जब तक समाज की सक्रिय भागीदारी नहीं होगी, तब तक पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य पूरी तरह प्राप्त नहीं किए जा सकते। इसी सोच के साथ नगर परिषद लगातार

जनसहभागिता आधारित कार्यक्रम आयोजित कर रही है। अंत में सभी उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं नागरिकों ने लगाए गए पौधों की सुरक्षा और संरक्षण का संकल्प लिया तथा भविष्य में भी ऐसे अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाने का विश्वास व्यक्त किया।

अमृत हरित महाअभियान के तहत आयोजित यह वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम जैतहरी में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है, जिसने हरित भविष्य के प्रति लोगों की प्रतिबद्धता को और अधिक मजबूत किया है।

दुर्घटना मौत को आमंत्रण देती कालरी प्रबंधन की सड़के।

समाज जागरण

शहडोल एक प्रेस विज्ञप्तिके माध्यम से सीनियर एडवोकेट भाजपा नेता ने एक पत्र के माध्यम से कोयला मंत्री कलेक्टर और महानिदेशक बिलासपुर से मांग किया है कि सोहागपुर क्षेत्र के कैलोरी क्षेत्र की सड़कों का हालत जर्जर और खराब है सड़के गढ्ढे में बदलकर लगातार दुर्घटना को आमंत्रण दे रही है अमरा डंडी रेलवे फाटक से मुख्य महाप्रबंधक सोहागपुर क्षेत्र के साथ एमजीएम स्कूल और सेंट्रल स्कूल के साथ अन्य क्षेत्र को जोड़ने वाली सड़क धनपुरी नंबर 3 केंद्रीय विद्यालय तिराहे के पास धीरे-धीरे यह सड़क खाई में बदलती जा रहे हैं बगल में दो विद्यालय चल रहे हैं जहां दिन-रात बच्चे खुद की गाड़ी से लेकर ऑटो स्कूल बस से आते जाते हैं और कई बार एंबुलेंस केंद्रीय चिकित्सालय को तेजी से जाती है ऐसे में यहां पर इस गड्ढे की वजह से लगातार छोटी-बड़ी दुर्घटना हो रही है साहनी ने कहा कि जहां एक तरफ कोल इंडिया को सबसे पैसे वाला विभाग माना जाता है और सीआरएस योजना काम करता है तमाम कलारी प्रबंधन दान करते रहती है लेकिन आश्चर्य है कि जहां पर स्कूल और हॉस्पिटल जैसी जगह हैं और वह प्रबंधन की मुख्य सड़क है दिन-रात अधिकारी भी यहां से गुजर रहे हैं लेकिन इस सड़क को नए तरीके से निर्माण नहीं किया जा रहा है बस कभी-कभार गढ्ढे को भरने की औपचारिकता निभाई जाती है जबकि ऐसे गड्ढे इस सड़क पर कई जगह मिल जाएंगे किंतु मुख्य महाप्रबंधक के साथ

अन्य अधिकारियों की नजर ना आना आश्चर्यजनक है

या जानबूझकर नहीं बनवाया जा रहा है। मुख्य महा प्रबंधक से भाजपा नेता साहनी ने मांग किया है कि तत्काल इसको सड़क को अच्छे से मरम्मत कर बनवाया जाए अन्यथा कभी भी यहां गंभीर दुर्घटना के साथ कोई भी व्यक्ति मौत के आगोश में समा सकता है जीसके जिम्मेदार कॉलोनी प्रबंधन होगा

ग्राम धुरैटा में 12 दिवसीय सरल संस्कृत सम्भाषण शिविर का भव्य समापन, संस्कृत संभाषण से मंत्रमुग्ध हुए अतिथि

समाज जागरण

सम्भल।उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा संचालित "गृहे-गृहे संस्कृत" योजना के

अंतर्गत दिव्यलोक वाटिका, ग्राम धुरैटा, जनपद सम्भल में संस्कृत प्रशिक्षिका उर्वशी आर्य के निर्देशन में आयोजित 12 दिवसीय सरल संस्कृत भाषा शिक्षण एवं सम्भाषण शिविर का समापन समारोह अत्यंत गरिमामय एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन, भावपूर्ण सरस्वती वंदना तथा अतिथि स्वागत गीत के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि विपिन कुमार जी उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्राथमिक शिक्षक संघ की ब्लॉक अध्यक्ष पूनम भारती ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम का सबसे आकर्षक एवं प्रेरणादायी क्षण वह रहा जब शिविर के शिक्षार्थियों ने मंच से संस्कृत भाषा में अपना परिचय दिया तथा दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले अनेक संस्कृत वाक्यों का धाराप्रवाह प्रयोग कर उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों को आश्चर्यचकित कर दिया। अल्प समय में बच्चों का संस्कृत पर इतना उत्कृष्ट अधिकार देखकर सभी अतिथि अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने संस्कृत प्रशिक्षिका उर्वशी आर्य के समर्पित शिक्षण, परिश्रम एवं संस्कृत के प्रति उनके सेवा-भाव की मुक्तकंठ से सराहना की। अतिथियों ने यह भी आग्रह किया कि भविष्य में जब भी इस प्रकार का संस्कृत शिविर आयोजित हो, तो उसका आयोजन पुनः इसी परिसर में किया जाए, जिससे अधिकाधिक लोग संस्कृत सीखने का लाभ प्राप्त कर सकें।अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान और नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। उन्होंने बच्चों से संस्कृत का निरंतर अभ्यास करते हुए इसे अपने व्यवहार का अंग बनाने का आह्वान किया तथा ऐसे शिविरों को समाज में सांस्कृतिक जागरण का प्रभावी माध्यम बताया। कार्यक्रम के मध्य उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के समन्वयक अनिल गौतम ने ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शिविर की समीक्षा की। उन्होंने शिक्षार्थियों से संस्कृत में संवाद कर उनकी प्रगति की सराहना की तथा संस्कृत और भारतीय संस्कृति के महत्व पर प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। उन्होंने महर्षि पाणिनि, महर्षि पतंजलि, कालिदास एवं अन्य महान संस्कृत विद्वानों के प्रेरक विचारों का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों को संस्कृत अध्ययन के लिए निरंतर प्रेरित किया। अंत में उन्होंने सभी शिक्षार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए संस्कृत प्रशिक्षिका उर्वशी आर्य को शिविर के सफल संचालन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

समापन अवसर पर सभी शिक्षार्थियों में विशेष उत्साह एवं आत्मविश्वास देखने को मिला। अतिथियों ने विश्वास व्यक्त किया कि ऐसे संस्कृत सम्भाषण शिविर भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन तथा नई पीढ़ी को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

जमुई के पास अंडहाई ढक्कन फैक्ट्री और ढोलकी पतुरिया में फिर सजा जुए का अड्डा! आखिर किसके संरक्षण में उजड़ रहे परिवार?

समाज जागरण

शहडोल। जिले के सोहागपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले जमुई, अंडहाई ढक्कन फैक्ट्री क्षेत्र तथा ठोलकी पतुरिया में एक बार फिर कथित रूप से जुए के अवैध कारोबार के संचालित होने की चर्चाएँ तेज हो गई हैं। स्थानीय सूत्रों का दावा है कि इन स्थानों पर लंबे समय से बड़े पैमाने पर जुए का खेल चल रहा है, जिससे अनेक परिवार आर्थिक संकट की ओर धकेले जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, इस अवैध कारोबार से जुड़े लोग कथित रूप से लगातार आर्थिक लाभ अर्जित कर रहे हैं।

सूत्रों के अनुसार, इस कथित गतिविधि की जानकारी संबंधित विभाग और स्थानीय पुलिस तक भी कई बार पहुंच चुकी है। इसके बावजूद यदि प्रभावी कार्रवाई नहीं होती, तो स्वाभाविक रूप से यह सवाल उठता है कि आखिर ऐसे अवैध कारोबार पर अंकुश क्यों नहीं लग पा रहा है। क्षेत्र में यह चर्चा भी है कि छोटी-मोटी कार्रवाई केवल निचले स्तर के लोगों तक सीमित रह जाती है, जबकि कथित मुख्य संचालक कानून की पकड़ से दूर बने रहते हैं। जमुई क्षेत्र पूर्व में भी कथित अवैध गतिविधियों को लेकर सुर्खियों में रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते ऐसे मामलों पर कठोर कार्रवाई नहीं की गई, तो इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों पर पड़ेगा। कई लोग अपनी मेहनत की कमाई जुए में गंवाकर कर्ज, तनाव और पारिवारिक कलह का शिकार हो सकते हैं। इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि महाभारत में जुए की एक बाजी ने पूरे हस्तिनापुर का भविष्य बदल दिया था। पांडवों ने जुए में अपना राज्य, धन-संपत्ति, भाई और अंततः द्रौपदी तक दांव पर लगा दी थी। उसी अन्यायपूर्ण जुए ने आगे चलकर महाभारत जैसे विनाशकारी युद्ध की नींव रखी। यह प्रसंग आज भी समाज को यह संदेश देता है कि जुआ केवल आर्थिक नुकसान नहीं पहुंचाता, बल्कि परिवार, समाज और व्यवस्था को भी गहरे संकट में डाल सकता है। प्रदेश सरकार और पुलिस मुख्यालय लगातार अवैध गतिविधियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई और जीरो टॉलरेंस की नीति की बात करते रहे हैं। हाल ही में जिले में पदस्थ हुए नवागत पुलिस अधीक्षक से भी आमजन को यही अपेक्षा है कि यदि क्षेत्र में जुए का यह कथित कारोबार वास्तव में संचालित हो रहा है, तो इसकी निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। इससे न केवल कानून का विश्वास मजबूत होगा, बल्कि ऐसे अवैध कारोबार पर भी प्रभावी अंकुश लग सकेगा।

अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या प्रशासन इन आरोपों की गंभीरता से जांच कर अवैध गतिविधियों पर रोक लगाएगा, या फिर कथित जुआ संचालकों का नेटवर्क यूँ ही फलता-फूलता रहेगा और मेहनतकश परिवार अपनी गाढ़ी कमाई गंवाकर आर्थिक बबार्दी की ओर बढ़ते रहेंगे?

सूत्रों का यह भी दावा है कि इस कथित अवैध कारोबार से जुड़े प्रमुख संचालकों और उनके नेटवर्क को लेकर कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आई हैं। इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि होना अभी शेष है। यदि पर्याप्त तथ्य और साक्ष्य उपलब्ध होते हैं, तो आगामी समाचारों में

कथित संचालकों के नामों और पूरे नेटवर्क का विस्तृत खुलासा किया जाएगा।

मनोनीत पार्षदों का सम्मान समारोह आयोजित फूल-मालाओं और बैंड-बाजे के बीच अमलाई में दिखा उत्साह

समाज जागरण

अमलाई। नगर परिषद बरगवां-अमलाई में एल्डरमैन (मनोनीत पार्षद) की घोषणा के बाद अमलाई नगर में उत्साह का माहौल देखने को मिला। नवमनोनीत पार्षद संदीप पुरी, अजय सिंह ,सुभाष कुमार मिश्रा एवं अनिल बैग के स्वागत के लिए वार्ड क्रमांक 6 दुर्गा मंदिर चौराहे में भव्य सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता, स्थानीय नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार मौजूद रहे। कार्यक्रम में नवमनोनीत पार्षदों के पहुंचते ही कार्यकताओं ने फूल-मालाओं के साथ उनका जोरदार स्वागत किया। बैंड-बाजे की धुन और कार्यकताओं के उत्साह के बीच पूरा क्षेत्र जश्न के माहौल में नजर आया। समर्थकों ने मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर की

और चारो मनोनीत पार्षदों को नई जिम्मेदारी मिलने पर शुभकामनाएं दीं। पवन कुमार चीनी ने दोनों मनोनीत पार्षदों का किया स्वागत

इस अवसर पर नगर परिषद के संदीप पुरी ,अजय सिंह, सुभाष कुमार मिश्रा तथा अनिल बैगा का फूल-माला पहनाकर स्वागत किया। भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष सतनारायण सोनी ने मनोनीत पार्षदों को नई जिम्मेदारी मिलने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी दोनों मनोनीत पार्षदों का गर्मजोशी से अभिनंदन किया। स्वागत कार्यक्रम के दौरान कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। फूल-मालाओं, बैंड-बाजे और मिठाई वितरण के साथ मनोनयन की खुशी मनाई गई। नगर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जताई उम्मीद कार्यक्रम के दौरान उपस्थित भारतीय जनता पार्टी के जिला शह कोषाध्यक्ष रामनारायण उरमलिया ने उम्मीद जताई कि नवमनोनीत पार्षद नगर परिषद बरगवां-अमलाई क्षेत्र के विकास और आम नागरिकों की समस्याओं को परिषद स्तर पर प्रमुखता से उठाएंगे। स्थानीय स्तर पर सड़क, नाली, साफ-सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था सहित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में सभी जनप्रतिनिधि मिलकर कार्य करेंगे। धूमधाम से मनाया गया उरमालिया जी का जन्मदिन भाजपा कार्यकताओं और समर्थकों की मौजूदगी ने स्वागत कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के जिला सहकोष अध्यक्ष

रामनारायण उरमलिया का जन्मदिन बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया और केक काटकर सभी को मिष्ठान वितरित किया गया। पत्रकारों का हुआ सम्मान मनोनीत पार्षदों के सम्मान समारोह में स्थानीय पत्रकारों का भी सम्मान किया गया । स्थानीय पत्रकार विजय तिवारी ,नीरज गुप्ता ,जीवन यादव ,राहुल मिश्रा और सौरभ सिंह का सम्मान किया गया । कार्यक्रम का सफल संचालन अजय दाहिया एवं डॉ राज पांडे ने किया। अंत में सभी भाजपा कार्यकताओं स्थानीय नागरिकों एवं पत्रकारों का आभार मनोनीत पार्षद संदीप पुरी द्वारा किया गया। मनोनीत पार्षदों के सम्मान समारोह में प्रमुख रूप से रामनारायण उरमलिया, चंद्रिका द्विवेदी, मंडल अध्यक्ष सतनारायण सोनी, वेद प्रकाश द्विवेदी, नगर परिषद उपाध्यक्ष डॉ राज तिवारी ,पार्षद पवन कुमार चीनी, दीपक कोल, सचिन पुरी, दशरथ नायक, सुरेंद्र सोनी ,अरविंद साहनी, मनीष तिवारी, रवि दुबे, सुमित सिंह, नीरज नामदेव, यदुराज पनिका, अजय यादव सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

संभल जिले की चारों विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा के बूथ अध्यक्ष सम्मेलन संपन्न

समाज जागरण

संभल। भारतीय जनता पार्टी ने संभल जिले की चारों विधानसभा क्षेत्रों–संभल, असमोली, गुन्नौर और चन्दौसी–में बूथ अध्यक्ष सम्मेलनों का आयोजन कर आगामी चुनावों की तैयारियों को धार दी। सम्मेलनों में बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने, जनसंपर्क बढ़ाने और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने पर जोर दिया गया। संभल विधानसभा के सम्मेलन में मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री एवं विधान परिषद सदस्य अशोक कटारिया ने कहा कि बूथ अध्यक्ष संगठन की रीढ़ हैं और मजबूत बूथ ही पार्टी की जीत सुनिश्चित करता है। जिलाध्यक्ष चौधरी हरेंद्र सिंह ने कार्यकर्ताओं से "मेरा बूथ, सबसे मजबूत" के संकल्प के साथ काम करने का आह्वान किया। असमोली विधानसभा के कुरकावली स्थित ए.के. रिसोर्ट में आयोजित सम्मेलन में विधान परिषद सदस्य गोपाल अंजन मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने संगठन के विस्तार और बूथ स्तर पर सक्रियता बढ़ाने पर बल दिया। गुन्नौर विधानसभा के सम्मेलन में प्रदेश उपाध्यक्ष एवं विधान परिषद सदस्य सत्यपाल सैनी ने बूथ अध्यक्षों का सत्यापन कर उनसे संवाद किया तथा चुनावी रणनीति में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। चन्दौसी विधानसभा सम्मेलन में प्रदेश उपाध्यक्ष राजेश

यादव और माध्यमिक शिक्षा मंत्री एवं विधायक गुलाब देवी मौजूद रहीं। राजेश यादव ने कहा कि बूथ अध्यक्ष ही संगठन की सबसे बड़ी ताकत हैं और उनकी सक्रियता से ही भाजपा की विजय यात्रा मजबूत होगी। सभी सम्मेलनों में बड़ी संख्या में पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, बूथ अध्यक्ष और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बबराला में भाजपा का विधानसभा बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित, संगठन मजबूती पर दिया जोर

समाज जागरण

बबराला। नगर के आदित्य गार्डन में मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी की ओर से विधानसभा स्तरीय बूथ अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य संगठन को बूथ स्तर तक और अधिक मजबूत बनाना तथा आगामी कार्यक्रमों एवं चुनावी तैयारियों को लेकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करना रहा। कार्यक्रम के संयोजक भाजपा जिला उपाध्यक्ष दीपक यादव रहे। सम्मेलन के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य एवं भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतपाल सैनी ने बूथ अध्यक्षों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा की सबसे बड़ी ताकत उसका बूथ स्तर तक फैला मजबूत संगठन है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बूथ अध्यक्ष पार्टी की रीढ़ है और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के साथ-साथ संगठन के कार्यक्रमों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कार्यकताओं से बूथों को और अधिक सशक्त बनाने तथा आम जनता से निरंतर संपर्क बनाए रखने का आह्वान किया।सम्मेलन में संगठनात्मक विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा बूथ स्तर पर सक्रियता बढ़ाने, सदस्यता अभियान, जनसंपर्क और आगामी कार्यक्रमों की रणनीति पर भी कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री राजू यादव, योगेंद्र यादव, दानवीर कुशवाहा, उमेश शर्मा और भुवनेश राघव, जिला मंत्री इंद्रवीर एवं शांति स्वरूप, बबराला नगर अध्यक्ष हर्षवर्धन, गुन्नौर अध्यक्ष धर्मेंद्र प्रजापति, जुनावई ब्लॉक अध्यक्ष दिव्य प्रकाश यादव, युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष शिखर गोयल सहित विधानसभा क्षेत्र के सभी बूथ अध्यक्ष एवं बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सम्मेलन के अंत में संगठन की मजबूती और आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए सभी कार्यकताओं से बूथ स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया गया।

आठ लाख रुपये के ट्रैक्टर व मशीन के विवाद में मारपीट, तीन पर मुकदमा दर्ज

दैनिक समाज जागरण

संभल। थाना एंचौड़ा कंबोह क्षेत्र के गांव मौसमपुर निवासी कमल पुत्र गुलाब सिंह ने थाना पुलिस को तहरीर देकर गांव पंसुखा माडली निवासी जाबुल पुत्र आकिल व उसके भाई पर मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पीड़ित के अनुसार करीब 17 माह पहले उसने जाबुल के साथ मिलकर एक ट्रैक्टर (स्वराज 855) और मक्का बोने की मशीन खरीदी थी, जिसमें उसके करीब आठ लाख रुपये खर्च हुए थे। आरोप है कि जाबुल ने पिछले 17 माह से न तो ट्रैक्टर और मशीन का किराया दिया और न ही हिसाब-किताब किया। कई बार कहने के बावजूद वह टालमटोल करता रहा। पीड़ित का आरोप है कि बुधवार को जब वह हिसाब-किताब करने के लिए जाबुल के घर पहुंचा तो जाबुल, उसके भाई तथा पिता आकिल ने गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने पर तीनों ने लाठी-डंडों से मारपीट की। आरोप है कि जाबुल ने उसके सिर पर नुकीली पंची से वार कर घायल कर दिया तथा जान से मारने की धमकी देकर भगा दिया। पीड़ित ने थाना एंचौड़ा कंबोह पुलिस को तहरीर देकर आरोपियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग की है। थाना अध्यक्ष शाह फैसल ने बताया पीड़ित कि तहरीर पर तीन लोगों के खिलाफ संबन्धित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है मामले की जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

ताइक्वांडो बेल्ट परीक्षा में एविशा-अंशवी सम्मानित

समाज जागरण

चंदौसी। एबीसी किड्ज मॉन्टेसरी स्कूल, चंदौसी में ताइक्वांडो कलर बेल्ट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली दो छात्राओं को कलर बेल्ट पहनाकर सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या संगीता भार्गव ने छात्राओं को बेल्ट पहनाकर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।सम्मानित होने वाली छात्राओं में एविशा ने ग्रीन बेल्ट तथा अंशवी ने येलो बेल्ट प्राप्त की। दोनों छात्राओं ने सफलतापूर्वक ताइक्वांडो कलर बेल्ट परीक्षा पास कर अपनी मेहनत और लगन का परिचय दिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्या संगीता भार्गव ने कहा, "यदि ये दोनों बेटियां ताइक्वांडो सीख सकती हैं, तो अन्य छात्र-छात्राएं भी अवश्य सीख सकते हैं। आत्मरक्षा हमारे अपने हाथ में होती है। ताइक्वांडो केवल एक खेल नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, अनुशासन और सुरक्षा का माध्यम है।"दोनों छात्राओं को पिछले काफी समय से अंकुश ताइक्वांडो क्लब के कोच अंकुश राणा द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उनकी मेहनत और निरंतर अभ्यास का परिणाम है कि दोनों खिलाड़ियों ने सफलतापूर्वक कलर

बेल्ट परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय एवं अपने अभिभावकों का नाम रोशन किया।विद्यालय परिवार एवं अंकुश ताइक्वांडो क्लब ने दोनों छात्राओं को उनकी इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए भविष्य में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन की शुभकामनाएं दीं। इसमें स्कूल की काजल शालू निशा प्रिया सिल्की इशिता मनप्रीत रक्षा अर्शी कुमुद वंशिका हिमांशी आरती अध्या रूपाली शिल्पा मनप्रीत शिल्की अंकिता मीनू आदि शिक्षिकाओं का

डीएम ने एफएमडी टीकाकरण वाहनों को दिखाई हरी झंडीगंगा महाआरती के सात वर्ष पूर्ण।

समाज जागरण

बबराला। मां गंगा जन कल्याण समिति द्वारा मां गंगा की भव्य महा आरती को 7 वर्ष पूरे हो गए। 22 जुलाई 2019 को यह महाआरती की शुरूआत तत्कालीन जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह द्वारा राजघाट के बबराला गंगा घाट पर शुरू कराई गई थी। 7 वर्ष पूर्ण होने पर गंगा मां की भव्य महाआरती 7 पुरोहितों द्वारा की गई।डीएसएम शुगर मिल रजपुरा के यूनिट हैड उपेंद्र तोमर रहे। उन्होंने मां गंगा का पूजन वैदिक रीति रिवाज से पूजन किया।उसके पश्चात मां गंगा की भव्य महाआरती 7 पुरोहितों द्वारा की गई। इस दौरान डीएसएम शुगर मिल के प्रशासनिक अधिकारी राजन दीक्षित थाना प्रभारी लवनीश चौधरी, मां गंगाजल कल्याण समिति के अध्यक्ष अतुल गोयल, योगेंद्र यादव, उमेश वार्ष्णेय, चैयरमैन बबराला हर्षवर्धन वार्ष्णेय,विवेक कुमार, सत्यम मिश्रा, डॉ. कैलाश वार्ष्णेय, डॉ.आर सी यादव आदि उपस्थित रहे।

बबराला रेलवे लाइन पर मिले महिला के शव की दूसरे दिन हुई शिनाख्त

समाज जागरण

बबराला थाना क्षेत्र के फिरोजपुर के जंगल में अलीगढ़ चंदौसी रेल लाइन के किनारें रेलवे ट्रैक पर अज्ञात महिला का शव मिला था। जिसकी पहचान बुधवार को जनपद बदायूं के थाना जरीफनगर क्षेत्र गांव करियावैन निवासी मंजीत की पत्नी नेकशी उम्र 50 के रुप में हुई। बताया जा रहा है कि महिला मानसिक रूप से विक्षिप्त थी। बबराला पुलिस ने शिनाख्त होने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अवैध मिट्टी परिवहन के विरुद्ध प्रशासन की प्रभावी कार्रवाई

समाज जागरण

संभल। जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार अवैध खनन एवं अवैध खनिज परिवहन के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में बुधबार को प्रातःकाल थाना कुढ़फतेहगढ़ क्षेत्र में खनन विभाग द्वारा संयुक्त जांच अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान बिना वैध अनुमति के मिट्टी का परिवहन करते हुए 02 ट्रैक्टर-ट्रॉली पकड़ी गईं। संबंधित वाहनों को नियमानुसार थाना कुढ़फतेहगढ़ की अभिरक्षा में सीज कर दिया गया है तथा प्रकरण में अग्रिम वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। जिला प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि अवैध खनन एवं बिना अनुमति खनिज परिवहन किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। ऐसे मामलों

में दोषियों के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। जनपदवासियों से भी अपील की जाती है कि अवैध खनन अथवा अवैध खनिज परिवहन की सूचना तत्काल संबंधित विभाग अथवा प्रशासन को उपलब्ध कराएं, जिससे प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

प्रभारी मंत्री डॉ. हंसराज विश्वकर्मा ने कनहर सिंचाई परियोजना, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दुद्धी का किया निरीक्षण

प्रभारी मंत्री ने गॉव चौपाल संवाद कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याओं निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारियों को किये निर्देशित

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। जनपद के प्रभारी मंत्री एवं उत्तर प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हंसराज विश्वकर्मा जी ने आज अमवार पहुंचकर निमार्णाधीन कनहर सिंचाई परियोजना का स्थलीय निरीक्षण किया तथा परियोजना की प्रगति का जायजा लिया। इसके उपरांत उन्होंने अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर परियोजना के कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि कनहर सिंचाई परियोजना का कार्य अति शीघ्र पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि यह परियोजना क्षेत्र के किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए निर्माण कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता सुनिश्चित की जाए। प्रभारी मंत्री ने परियोजना से प्रभावित विस्थापित परिवारों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन द्वारा अनुमन्य सुविधायें प्रत्येक लाभार्थी तक समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से पहुंचाई जाएं। इस दौरान माननीय प्रभारी मंत्री ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, दूद्धी का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल परिसर में साफ-सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाने, मरीजों को शासन द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सभी उपचार एवं स्वास्थ्य सुविधाएं गुणवत्तापूर्ण ढंग से उपलब्ध कराने तथा जर्जर भवनों की आवश्यक मरम्मत शीघ्र कराने के निर्देश सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक को दिए। उन्होंने कहा कि अस्पताल में आने वाले प्रत्येक मरीज को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराया जाना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। प्रभारी मंत्री ने पी0डब्लू0डी0 गेस्ट हाउस में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ किये बैठक, बैठक के दौरान कानून व्यवस्था जन सुरक्षा विकास कार्यो की प्रगति सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा किये और आम जन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण करने के निर्देश दियें उन्होने कहा कि शासन की मंशाके अनुरूप जन सामान्य के शिकायतों का निस्तारण सुनिश्चित किया जाये। इस दौरान प्रभारी मंत्री ने गॉव चौपाल संवाद कार्यक्रम में दुद्धी तहसील के अन्तर्गत ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किये। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष नंदलाल गुप्ता, अनुसूचित जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष जीत सिंह खरवार, श्रवण कुमार गौड़, अपना दल एस0 के अंजनी पटेल, उप जिलाधिकारी दुद्धी रवि पासवान सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

भारतीय विधिक सहायता एसोसिएशन की संगोष्ठी में तिरंगे के सम्मान और संवैधानिक मूल्यों पर दिया गया जोर

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। भारतीय विधिक सहायता एसोसिएशन की ओर से मंगलवार को अधिवक्ता भवन, तहसील परिसर रॉबर्ट्सगंज में राष्ट्रीय ध्वज एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति जनजागरूकता विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश कुमार यादव ने की। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप जायसवाल ने कहा कि भारतीय तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि देश के गौरव, स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानों और करोड़ों भारतीयों की भावनाओं का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह राष्ट्रध्वज का सम्मान करते हुए संविधान के आदर्शों और राष्ट्रहित के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखे। राष्ट्रीय संयोजक अधिवक्ता पवन कुमार सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय तिरंगा हमें एकता, भाईचारे और राष्ट्रसेवा की प्रेरणा देता है। उन्होंने युवाओं को संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया। संगोष्ठी में उपस्थित अधिवक्ताओं एवं सदस्यों ने राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान तथा संविधान के मूल आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता राजकुमार पटेल ने किया। इस अवसर पर विमल प्रसाद सिंह, रियाज खान, सुरेश सिंह कुशवाहा, कामता प्रसाद यादव, टीटू प्रसाद गुप्ता, आदर्श देव पांडेय, शहनवाज आलम खान, दशरथ यादव, संतोष चतुर्वेदी, अजीत कश्यप, राहुल जैन, धीरेंद्र पटेल सहित अनेक अधिवक्ता एवं सदस्य उपस्थित रहे।

श्रावण मास एवं कांवड़ यात्रा को लेकर कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई पीस कमेटी एवं धर्मगुरुओं की बैठक

समाज जागरण/ अवधेश कुमार गुप्ता

सोनभद्र। जनपद में श्रावण मास एवं कांवड़ यात्रा को सकुशल, शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने के उद्देश्य से कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी चर्चित गौड़ एवं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा की अध्यक्षता में पीस कमेटी एवं धर्मगुरुओं के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद के विभिन्न धर्मगुरुओं, जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्ध नागरिकों एवं प्रशासनिक अधि कारियों ने सहभागिता की।

बैठक को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने कहा कि श्रावण मास एवं कांवड़ यात्रा का आयोजन आपसी प्रेम, भाईचारे एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की नई परंपरा प्रारम्भ न होने दी जाए तथा सभी उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों में भ्रमण कर सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं का सतत निरीक्षण करें। उन्होंने कांवड़ मार्गों पर साफ-सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, चिकित्सा सुविधाओं एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को समयबद्ध रूप से सुनिश्चित कराने हेतु संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने कहा कि कांवड़ यात्रा के दौरान सभी श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। उन्होंने निर्देशित किया कि कांवड़ यात्रा मार्गों पर सुगम यातायात व्यवस्था सुनिश्चित की जाए तथा किसी भी प्रकार की अफवाह, भड़काऊ संदेश अथवा सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली भ्रामक सूचनाओं पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई की जाए। उन्होंने सभी से अपील की कि धार्मिक आस्था एवं परम्पराओं का सम्मान करते हुए कानून-व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें। किसी भी प्रकार की अफवाह फैलाने अथवा सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कठोर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) बगीश कुमार शुक्ला, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) अनिल कुमार, समस्त उप

जिला धिकारी, समस्त क्षेत्राधिकारी, संबंधित विभागों के अधिकारी, धर्मगुरु, जनप्रतिनिधि एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। बैठक में उपस्थित सभी धर्मगुरुओं एवं प्रबुद्ध नागरिकों ने प्रशासन को आश्वस्त किया कि जनपद में श्रावण मास एवं कांवड़ यात्रा पूर्व की भांति आपसी सौहार्द, भाईचारे एवं शांति के वातावरण में सम्पन्न कराई जाएगी तथा सभी नागरिक कानून-व्यवस्था बनाए रखने में पूर्ण सहयोग करेंगे।

जनसुनवाई में लापरवाही पर जिलाधिकारी का बड़ा एक्शन, 11 अधिकारियों का वेतन अवरुद्ध

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। जनसामान्य की समस्याओं का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने प्रातः 10:00 बजे से 12:00 बजे तक आयोजित जनसुनवाई के दौरान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान 11 जिला स्तरीय अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से अनुपस्थित पाए गए, जिस पर जिलाधिकारी ने कड़ा रुख अपनाते हुए तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। अनुपस्थित पाए गए अधिकारियों में

मुख्य चिकित्साधिकारी, ज्येष्ठ खान अधिकारी, सहायक निदेशक मत्स्य, सहायक महानिरीक्षक निबंधन, सहायक निदेशक रेशम, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, भूमि संरक्षण अधिकारी, जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी, अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत, क्षेत्रीय प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी तथा अधिशासी अभियंता ग्रामीण अभियंत्रण सेवा विभाग शामिल हैं। जिलाधिकारी ने सभी अनुपस्थित अधिकारियों का वेतन तत्काल प्रभाव से अवरुद्ध करने के निर्देश देते हुए दो दिवस के भीतर स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने को कहा है। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है और इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता, उदासीनता अथवा अनुशासनहीनता स्वीकार नहीं की जाएगी। जिलाधिकारी ने समस्त जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे प्रतिदिन प्रातः 10:00 बजे से 12:00 बजे तक अपने कार्यालय में बैठकर आमजन की शिकायतों की सुनवाई सुनिश्चित करें, साथ ही जिला, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी अपने अधीनस्थ अधिकारियों की भी निर्धारित समय में जनसुनवाई एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में अनिवार्य उपस्थिति सुनिश्चित कराएं, ताकि प्रत्येक शिकायत का त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी निस्तारण किया जा सके। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई आमजन की अपेक्षाओं से जुड़ी महत्वपूर्ण व्यवस्था है। इसमें लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के विरुद्ध भविष्य में प्रशासनिक कार्रवाई की जाएगी।

थाना शक्तिनगर साइबर टीम ने फ्रॉड की धनराशि ₹35,510/- करायी वापस

समाज जागरण/ अकबर अली

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा साइबर अपराधों की रोकथाम एवं साइबर अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे

विशेष अभियान के क्रम में तथा अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) अनिल कुमार के दिशा-निर्देशन में थाना प्रभारी साइबर क्राइम पुलिस थाना शक्तिनगर जनपद सोनभद्र के कुशल नेतृत्व में थाना शक्तिनगर साइबर टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए साइबर फ्रॉड की धनराशि कुल ₹35,510/- आवेदकों के खातों में वापस करायी गयी।

थाना शक्तिनगर क्षेत्र के निवासी युगल किशोर तिवारी पुत्र कैलाश प्रसाद तिवारी एवं अंकिता तिवारी पुत्री हरिकान्त तिवारी निवासीगण बीना, थाना शक्तिनगर, जनपद सोनभद्र के साथ किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा साइबर फ्रॉड कर धनराशि ऑनलाइन ट्रांसफर करा ली गयी थी।

प्रकरण में साइबर क्राइम पुलिस थाना शक्तिनगर की टीम द्वारा तत्काल कार्यवाही करते हुए संबंधित बैंकों से पत्राचार कर फ्रॉड की गयी धनराशि को होल्ड कराया गया तथा MRM पोर्टल के माध्यम से दोनों आवेदकों की कुल धनराशि ₹35,510/- उनके मूल बैंक खातों में सफलतापूर्वक वापस करायी गयी। धनराशि वापस मिलने पर आवेदकों द्वारा पुलिस अधीक्षक सोनभद्र, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सोनभद्र एवं साइबर क्राइम पुलिस थाना शक्तिनगर के अधिकारी/ कर्मचारीगण की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए आभार व्यक्त किया गया। साइबर सुरक्षा हेतु अपील- किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ अपनी व्यक्तिगत एवं बैंकिंग जानकारी जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, पासपोर्ट, बैंक खाता संख्या, नेट बैंकिंग आईडी, पासवर्ड एवं ओटीपी आदि कभी भी साझा न करें।

किसी भी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी होने पर तत्काल साइबर हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर कॉल करें अथवा नजदीकी थाने पर शिकायत दर्ज कराएं। ऑनलाइन शिकायत हेतcybercrime.gov.in पोर्टल पर भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

ऑपरेशन दहन के तहत पिपरी पुलिस की बड़ी कार्रवाई, करीब 18,000 लीटर अवैध अंग्रेजी शराब का विनष्टीकरण

समाज जागरण/ अकबर अली

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के आदेशानुसार तथा अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) ऋषभ रुणवाल व अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) अनिल कुमार के कुशल निर्देशन में थाना पिपरी पर माल मुकदमाती के त्वरित एवं विधिसम्मत निस्तारण हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में "ऑपरेशन दहन" के अंतर्गत बड़ी कार्रवाई की गई। माननीय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, सोनभद्र के आदेश दिनांक 25.06.2026 के अनुपालन में जिलाधिकारी सोनभद्र द्वारा गठित त्रिस्तरीय समिति,

जिसमें उपजिलाधिकारी दुद्धी, क्षेत्राधिकारी पिपरी हर्ष पाण्डेय, अभियोजन अधिकारी एवं थानाध्यक्ष पिपरी राजेश चौबे की उपस्थिति में थाना पिपरी परिसर में जब्त अवैध अंग्रेजी शराब का विधिवत विनष्टीकरण कराया गया। अभियोगों में जब्त 2426 पेटियों में रखी कुल 37,218 छोटी-बड़ी शीशियों, जिनमें लगभग 18,000 लीटर अवैध अंग्रेजी शराब थी, का थाना परिसर में जेसीबी से गड्ढा खुदवाकर, वीडियो एवं फोटोग्राफी के साथ समस्त विधिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए विनष्टीकरण किया गया। इस दौरान कार्रवाई को पूर्ण पारदर्शिता एवं नियमानुसार संपन्न कराया गया। समस्त प्रक्रिया त्रिस्तरीय समिति की निगरानी एवं उपस्थिति में संपन्न हुई।

रूट डायवर्जन के दौरान छात्रों से भरी स्कूल बस पलटी, सभी बच्चे सुरक्षित

समाज जागरण/ अवधेश कुमार गुप्ता

सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज सदर कोतवाली क्षेत्र के नई बाजार-देवरी गांव के पास बुधवार सुबह करीब 7 बजे एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। एमवीएम (MVM) स्कूल की छात्रों से भरी बस रूट डायवर्जन के दौरान अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गई। बस में 28 से 30 छात्र सवार थे। हादसे में करीब आधा दर्जन बच्चों को मामूली चोटें आईं। राहत की बात रही कि इस

दुर्घटना में कोई गंभीर रूप से घायल नहीं हुआ। बताया गया कि रॉबर्ट्सगंज-पन्नूगंज मार्ग पर रूट डायवर्जन होने के कारण स्कूल बस गांव के वैकल्पिक मार्ग से होकर गुजर रही थी। इसी दौरान बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गई, जिससे बच्चों में चीख-पुकार मच गई। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय ग्रामीण मौके पर पहुंचे और बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला। बस चालक बचऊ ने बताया कि बस में करीब 28 से 30 बच्चे सवार थे। सामने एक साइकिल सवार आ गया, जिसे बचाने के प्रयास में बस का पहिया सड़क किनारे गीली मिट्टी और गड्ढे में उतर गया। इससे बस अनियंत्रित होकर नीचे चली गई। चालक के अनुसार सभी बच्चे सुरक्षित हैं और किसी को गंभीर चोट नहीं आई। घटना के बाद अभिभावक मौके पर पहुंचे और बच्चों को अपने साथ घर ले गए। बताया गया कि बस में कहरोल और रामगढ़ क्षेत्र के बच्चे सवार थे। हादसे के बाद अभिभावकों में बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता देखी गई। वहीं स्थानीय लोगों ने स्कूल बसों के सुरक्षित संचालन, वैकल्पिक मार्गों की स्थिति में विशेष सावधानी बरतने तथा प्रशासन से ऐसे मार्गों पर यातायात व्यवस्था बेहतर बनाने की मांग की है।

जंतर-मंतर पर आंदोलित छात्रों के प्रति सरकार का रवैया अलोकतांत्रिक- विजय शंकर यादव

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। हठधर्मी सरकारें लोकतंत्र का सम्मान नहीं करतीं। जब देश का युवा और छात्र सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर होता है, तब समझ लेना चाहिए कि व्यवस्था पूरी तरह विफल हो चुकी है।" उक्त बातें भारतीय अहिंसा सेवा संस्थान के अध्यक्ष छात्र नेता व जनसेवक विजय शंकर यादव ने कहा कि देश अघोषित आपात काल के स्थिति से गुजर रहा है। आन्दोलन आलोचनाओं का दमन क्रूरता से किया जा रहा है। जो स्वस्थ्य लोकतन्त्र के लिए बेहतर नही है।अघोषित आपातकाल स्लोगन पोस्टर को अपने दिनचर्या में शामिल कर विरोध करते जनसेवक विजय शंकर यादव ने कहा कि जंतर-मंतर पर पिछले लगभग तीन सप्ताह से छात्र और युवा अपनी जायज मांगों को लेकर शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे हैं। इतने दिन बीत जाने के बाद भी सरकार की ओर से कोई प्रतिनिधि उनसे वार्ता करने नहीं पहुंचा। यह रवैया पूरी तरह से अलोकतांत्रिक और हठधर्मिता का प्रतीक है।शिक्षा विभाग पूरी तरह विफल शिक्षा व्यवस्था पर करारा प्रहार करते हुए उन्होंने कहा नीतिगत विफलता शिक्षा विभाग युवाओं के भविष्य को लेकर कोई सकारात्मक विकल्प नहीं खोज पा रहा है।

लोकतंत्र में आंदोलन आम जनता की आवाज होता है। जब सरकारें संवेदनहीन हो जाती हैं तो आवाम को सड़कों पर उतरना पड़ता है। सरकार को दमनकारी नीतिया छोड़कर तुरंत वार्ता के जरिए समाधान निकालना चाहिए।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर छात्रों का प्रदर्शन, हाइडिल मैदान तक निकाला पैदल मार्च

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर बुधवार को छात्रों ने सुप्रिया सिंह राजपूत के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार, छात्रों के भविष्य की सुरक्षा और जवाबदेही की मांग को लेकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। इसके बाद स्वर्ण जयंती चौक से हाइडिल मैदान तक पैदल मार्च निकालकर अपनी मांगों को बुलंद किया। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए सुप्रिया सिंह राजपूत ने कहा कि देश के छात्रों के भविष्य के साथ लगातार खिलवाड़ किया जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार सामने आ रही अनियमितताओं और शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त अव्यवस्था से लाखों छात्र प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को तत्काल अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक छात्रों को न्याय नहीं मिलेगा, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) के जिलाध्यक्ष अंशु गुप्ता एवं अर्पिता सिंह ने संयुक्त रूप से कहा कि छात्र अपने अधिकारों की लड़ाई पूरी मजबूती से लड़ रहे हैं और धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा लेकर ही दम लेंगे। उन्होंने कहा कि यदि सरकार छात्रों की आवाज को अनसुना करती रही तो आंदोलन को और व्यापक किया जाएगा। उन्होंने सरकार से शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और छात्रों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की। प्रदर्शन के दौरान छात्र-छात्राओं ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार, प्रतियोगी परीक्षाओं को निष्पक्ष ढंग से कराने और छात्रों के हितों की रक्षा को लेकर जोरदार नारेबाजी की। मार्च के दौरान प्रदर्शनकारी स्वर्ण जयंती चौक से हाइडिल मैदान तक पहुंचे और जिला प्रशासन के माध्यम से अपनी मांगें सरकार तक पहुंचाने की बात कही। प्रदर्शन में संदीप गुप्ता, सोनाक्षी श्रीवास्तव, सच्ची गुप्ता, खुशी, अनुष्का सोनकर, प्राची, प्रियांशु अग्रवाल, आदित्य सिंह, तनिष्क मौर्य, विवेक सिंह, सुजीत गुप्ता, रवि मद्धेशिया, शिवांशु गोस्वामी, रोहित जाटव, आशीष कुमार, दिव्यांशी सिंह, आकाश कुमार, प्रियांशु गुप्ता, युवराज गिरी, निमेष गोस्वामी सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं शामिल रहे। प्रदर्शन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ, लेकिन छात्रों ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

थाना शक्तिनगर पुलिस की प्रभावी कार्रवाई, अभियान के तहत 02 वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

समाज जागरण/ अकबर अली

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनिल कुमार एवं क्षेत्राधिकारी पिपरी हर्ष पाण्डेय के पर्यवेक्षण में तथा प्रभारी निरीक्षक शक्तिनगर श्री सत्येन्द्र कुमार राय के नेतृत्व

में थाना शक्तिनगर पुलिस द्वारा वांछित/वारण्टी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में थाना शक्तिनगर पुलिस टीम द्वारा प्रभावी कार्रवाई करते हुए आज दिनांक 22.07.2026 को 02 वारण्टी अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों का विवरण- 1. सोनू पुत्र गोविन्दा, निवासी बस स्टैण्ड शक्तिनगर, थाना शक्तिनगर, जनपद सोनभद्र। 2. धर्मेन्द्र विश्वकर्मा पुत्र नन्दलाल, निवासी जमशीला बस स्टैण्ड, थाना शक्तिनगर, जनपद सोनभद्र।

NEET पेपर लीक मामला: 'धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दो' के नारों से गूंजा स्वर्ण जयंती चौक

समाज जागरण/ ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी

सोनभद्र। राहुल गांधी की गिरफ्तारी और छात्रों के मुद्दों को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी सोनभद्र के बैनर तले बुधवार को कांग्रेस कार्यकताओं ने जिला अध्यक्ष रामराज सिंह गोंड के नेतृत्व में जिला कांग्रेस कार्यालय से स्वर्ण जयंती चौक तक पैदल मार्च निकालकर केंद्र सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। कार्यकताओं ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करते हुए सरकार विरोधी नारे लगाए। इस दौरान राहुल गांधी सहित विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी का विरोध किया गया। प्रदर्शन के दौरान कुछ समय के लिए पुलिस और कांग्रेस कार्यकताओं के बीच नोकझोंक भी हुई, हालांकि स्थिति शांतिपूर्ण बनी रही। कांग्रेस कार्यकर्ता केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का प्रतीकात्मक पुतला लेकर स्वर्ण जयंती चौक की ओर बढ़ रहे थे। आरोप है कि रास्ते में पुलिस ने यूथ कांग्रेस के महासचिव रोहिल मिश्रा और मृदुल मिश्रा से पुतला छीन लिया। इसके बावजूद कार्यकताओं ने अपना मार्च जारी रखा और स्वर्ण जयंती चौक पहुंचकर सभा आयोजित की। पूरे मार्ग में कांग्रेस कार्यकताओं ने शिक्षा मंत्री के इस्तीफे और छात्रों के हितों की रक्षा को लेकर जोरदार नारेबाजी की। सभा को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष रामराज सिंह गोंड ने कहा कि केंद्र सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करने का प्रयास कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि संसद में छात्रों और युवाओं के मुद्दे उठाने वाले राहुल गांधी को गिरफ्तार कर विपक्ष की आवाज दबाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देशभर में लगातार हो रहे पेपर लीक से लाखों छात्रों का भविष्य प्रभावित हुआ है, लेकिन सरकार इस गंभीर विषय पर जवाबदेह होने के बजाय विपक्षी नेताओं पर कार्रवाई कर रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा देने की मांग की। पूर्व प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष ज्ञानेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि केंद्र सरकार की नीतियों से महंगाई, बेरोजगारी और शिक्षा व्यवस्था पर संकट गहराता जा रहा है। उन्होंने कहा कि देश का हर वर्ग सरकार की नीतियों से परेशान है और अब बदलाव चाहता है। पूर्व शहर अध्यक्ष राजीव त्रिपाठी ने कहा कि राहुल गांधी की गिरफ्तारी लोकतंत्र पर सीधा हमला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार छात्रों, युवाओं, किसानों और आम जनता के मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए विपक्ष को निशाना बना रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस छात्रों के भविष्य की लड़ाई लगातार लड़ती रहेगी और पेपर लीक जैसे मामलों में दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग करती रहेगी। जिला उपाध्यक्ष संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि कांग्रेस हमेशा छात्रों, युवाओं, महिलाओं और आम जनता के अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही है। उन्होंने कहा कि देश का युवा रोजगार, शिक्षा और लगातार हो रहे पेपर लीक जैसी समस्याओं से परेशान है, लेकिन सरकार इन मुद्दों के समाधान के बजाय विरोध की आवाज को दबाने में लगी है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि छात्रों की मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो कांग्रेस आंदोलन को और व्यापक करेगी। यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष शशांक मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस छात्रों और युवाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए राहुल गांधी के नेतृत्व में संघर्ष जारी रखेगी। प्रदर्शन के दौरान स्वर्ण जयंती चौक पर भारी पुलिस बल तैनात रहा। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि उनका आंदोलन पूरी तरह शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक है तथा जनहित के मुद्दों पर पार्टी का संघर्ष आगे भी जारी रहेगा। इस अवसर पर पूर्व प्रदेश सचिव जितेंद्र पासवान, वरिष्ठ नेता जगदीश मिश्रा, गोपाल स्वरूप पाठक, सेतराम केसरी, श्रीकांत मिश्रा, सिद्धार्थ प्रजापति, राजबली पांडे, राहुल त्रिपाठी, हिमाचल साहनी, दयाशंकर पांडे, आशीष सिंह, बाबूलाल पनिका, शेखर शरण सिंह, शीतला सिंह पटेल, प्रदीप चौबे, जयशंकर भारद्वाज, सुनील मिश्रा, प्रांजल श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रॉयल जिम ने झारखंड स्टेट पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप 2026 में मारी बाजी

**अभय कुमार मिश्रा,
दैनिक समाज जागरण, ब्यूरो
चीफ,कोल्हान झारखंड**

सरायकेला खरसावां (झारखंड) 22 जुलाई 2026 : जमशेदपुर में भालू बासा स्थित होटल मिस्टी इन में आयोजित झारखंड स्टेट पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप रॉयल जिम ने बाजी मार ली है।झारखंड के खिलाड़ियों ने पावरलिफ्टिंग में शानदार प्रदर्शन किया है। दो दिवसीय आयोजित कार्यक्रम में रॉयल जिम के विद्युत सरकार ने झारखंड के मजबूत पुरुष और पी पदमा राव को "झारखंड की मजबूत महिला" का खिताब मिला है, जिससे उन्हें आगामी राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में जगह मिल गई है।

यह चैंपियनशिप 19 जुलाई को भालूबासा के होटल मिस्टी इन में आयोजित की गई थी, जहां कदमा स्थित सावित्री टावर की निवासी पद्मा राव ने अपनी ताकत और निरंतरता का शानदार प्रदर्शन करते हुए समग्र चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम किया। उन्होंने प्रतियोगिता के दौरान तीन स्वर्ण पदक हासिल किए, इस उपलब्धि ने राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप के लिए उनके चयन को भी सुनिश्चित किया।

आयोजनकताओं के अनुसार, "पी. पद्मा राव को चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन के लिए 'झारखंड की सबसे मजबूत महिला' की उपाधि से सम्मानित किया गया।" उन्होंने आगे बताया कि "तीन स्वर्ण पदक जीतकर उन्होंने राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में अपनी जगह पक्की कर ली।" पद्मा राव की इस उपलब्धि ने जमशेदपुर और झारखंड दोनों राज्यों का नाम रोशन किया है और राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में राज्य की उपस्थिति को मजबूत किया है। उनके प्रदर्शन से आगामी राष्ट्रीय चैंपियनशिप में झारखंड की संभावनाओं को और भी बल मिलने की उम्मीद है।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले राजाराम एस बी डी पहला पुरस्कार,सुनीता गोप ने बेंच प्रेस दूसरा पुरस्कार, विकास कुमार मुखी बेंच प्रेस तीसरा पुरस्कार प्राप्त किए,प्रद्युत सरकार एस बी डी बेंच प्रेस दूसरा पुरस्कार प्राप्त किए।

वही प्राप्त जानकारी के अनुसार पी पदमा राव,देवजानी सरकार,काजल किरार पटेल,विद्युत सरकार,प्रद्युत सरकार, रवींद्रनाथ महतो, जयप्रकाश सिंह,बीस इक्कीस और बाईस अगस्त को कोलकाता में होने वाले पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में चयनित किया गया है।

संकट-मोचन संगीत समिति ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के किए आयोजन, बिस्टुपुर मंदिर प्रांगण में संगीत संध्या का हुआ आयोजन

**अभय कुमार मिश्रा,
दैनिक समाज जागरण, ब्यूरो
चीफ, कोल्हान झारखंड**

सरायकेला खरसावां (झारखंड) 22 जुलाई 2026: मंगलवार को संकट-मोचन संगीत समिति द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित की गई। सन् 1989 से प्रारंभ हुई प्रत्येक मंगलवार को होती आ रही सांस्कृतिक संध्या बैठकी में सर्वप्रथम युवा उद्दियमान गायक कुशल दिव्यम ने राग तोड़ी में एक छोटा ख्याल सुनाने के बाद फिर एक मराठी नाट्य गीत तथा एक भजन गाकर मंदिर परिसर में उपस्थित सभी श्रोताओं का मन मोह लिया ।उनके साथ तबला संगत पर श्रेष्ठ उपाध्याय ने बहुत सुंदर संगत किया ।इसके बाद शहर के जानेमाने गायक निलांजन मित्रा ने राग मेघ में बड़ा ख्याल एवं छोटा ख्याल सुनाया इसके बाद घरानेदार ठुमरी एवं भजन सुनाया ।उनके गायन से पुरा मंदिर परिसर संगीतमय हो गया।अपनी प्रस्तुति के दौरान नीलांचल मित्र ने कहा की संकट मोचन संगीत समिति द्वारा मंदिर परिसर में विगत 37 वर्षों से प्रत्येक

मंगलवार को निरंतर संगीत बैठकी का आयोजन करवाना बहुत दुर्लभ कार्य है जिसे पूर्णरूप देने में तबला गुरु दयानाथ उपाध्याय परिवार की भुमिका अति सराहनीय है। इनके साथ तानपुरा पर धृतिमान मंडल एवं तबला संगत पर श्यामा चक्रवर्ती ने सुंदर संगत किया ।सभी कलाकारों को मंदिर की परंपरा के अनुसार अंगवस्त्र देकर संकट मोचन संगीत समिति के अभिभावक और तबला गुरु दयनाथ उपाध्याय, निलाम्बर चौधरी, समीर घोष,एवं बालमुकुन्द चौधरी द्वारा अंगवस्त्र पहना कर एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया ।इस कार्यक्रम में जमशेदपुर शहर के कई कलाकार एवं संगीत प्रेमी श्रोता उपस्थित थे जिसमें,सनत सरकार,रामकिंकर उपाध्याय,मृत्युंजय
उपाध्याय, उमाकांत पान्डेय,धनंजय उपाध्याय,प्रतीक पान्डेय, रेखा कुमारी, समृद्ध स्वराज,कौशिकी, कुलदीप,राजेश ठाकुर,एवं गणेश आदि उपस्थित थे कार्यक्रम का समापन हनुमान चालीसा पाठ से किया गया ।कार्यक्रम का संचालन कर रहे बीरेन्द्र उपाध्याय ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी संगीत प्रेमियो के प्रति आभार प्रकट किया।

नीट पेपर लीक और छात्रों पर लाठीचार्ज के विरोध में भड़के झामुमो जिलाध्यक्ष विक्टर सोरेन , केंद्र सरकार पर साधा निशाना

**दैनिक समाज जागरण
22.07.2026 चांद कुमार
लायेक (ब्यूरो चीफ) पूर्वी
सिंहभूम जमशेदपुर**

जमशेदपुर झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के पूर्वी सिंहभूम जिलाध्यक्ष विक्टर सोरेन ने नीट (NEET) परीक्षा में कथित पेपर लीक की घटनाओं तथा इसके विरोध में राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर हुए कथित लाठीचार्ज की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि यह घटना देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने के साथ-साथ लोकतांत्रिक अधिकारों का भी दमन है। उन्होंने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि छात्रों की आवाज दबाने का प्रयास लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

विक्टर सोरेन ने जारी बयान में कहा कि देश के लाखों छात्र-छात्राएं वर्षों तक कठिन परिश्रम कर डॉक्टर बनने का सपना देखते हैं। लेकिन लगातार सामने आ रही पेपर लीक और परीक्षा संबंधी अनियमितताओं की खबरों ने उनकी मेहनत और भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। उनका आरोप है कि परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने में केंद्र सरकार पूरी तरह विफल रही है, जिसके कारण युवाओं का विश्वास व्यवस्था से उठता जा रहा है।

उन्होंने कहा कि जब छात्र अपनी मांगों और न्याय की गुहार लेकर लोकतांत्रिक तरीके से जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, तब उन पर बल प्रयोग किया गया। उनका कहना था कि किसी भी लोकतांत्रिक देश में शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन करना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है और छात्रों पर लाठीचार्ज जैसी कार्रवाई न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है,

बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के भी विपरीत है। झामुमो जिलाध्यक्ष ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार अपनी प्रशासनिक विफलताओं को छिपाने के लिए वास्तविक दोषियों पर कठोर कार्रवाई करने के बजाय आंदोलनरत छात्रों को निशाना बना रही है। उन्होंने कहा कि पेपर लीक जैसी घटनाओं में शामिल माफियाओं और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो और प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता बनी रहे।

विक्टर सोरेन ने कहा कि युवाओं का भविष्य किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी होता है। यदि प्रतियोगी परीक्षाओं की निष्पक्षता पर सवाल उठेंगे तो इससे लाखों छात्रों का मनोबल टूटेगा और देश की शिक्षा व्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की कि नीट परीक्षा से जुड़े सभी विवादों की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए तथा छात्रों को न्याय दिलाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं।

उन्होंने कहा कि सरकार को छात्रों की समस्याओं को गंभीरता से सुनना चाहिए और संवाद के माध्यम से समाधान निकालना चाहिए। लोकतंत्र में असहमति और विरोध को दबाने के बजाय उसका सम्मान किया जाना चाहिए। छात्रों पर बल प्रयोग किसी भी स्थिति में उचित नहीं ठहराया जा सकता। अंत में विक्टर सोरेन ने चेतावनी देते हुए कहा कि देश का युवा अब जागरूक हो चुका है और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना जानता है। उन्होंने कहा कि यदि छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ जारी रहा और इस मामले में केंद्र सरकार ने शीघ्र ठोस कदम नहीं उठाए, तो झारखंड मुक्ति मोर्चा झारखंड सहित पूरे देश में आंदोलन को और तेज करेगा। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर इसकी पूरी जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होगी। साथ ही उन्होंने सभी छात्रों और युवाओं से लोकतांत्रिक एवं शांतिपूर्ण तरीके से अपने अधिकारों की लड़ाई जारी रखने की अपील की।

मेयर सुधा गुप्ता की पहल रंग लाई, मानगो में जुस्को ने शुरू किया विशेष नाला सफाई अभियान

**दैनिक समाज जागरण
22.07.2026 चांद कुमार
लायेक (ब्यूरो चीफ) पूर्वी
सिंहभूम जमशेदपुर**

जमशेदपुर मानगो नगर निगम क्षेत्र में लंबे समय से जाम नालियों, जलजमाव और गंदगी की समस्या से जूझ रहे लोगों के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। मानगो नगर निगम की मेयर सुधा गुप्ता की पहल पर अब जमीनी स्तर पर काम शुरू हो गया है। टाटा स्टील प्रबंधन के साथ हुई उनकी महत्वपूर्ण बैठक का सकारात्मक असर दिखाई देने लगा है। जुस्को ने मानगो के विभिन्न इलाकों में विशेष नाला सफाई अभियान प्रारंभ कर दिया है, जिसके तहत वर्षों से जमी गाद, कचरा और अन्य अवरोधों को हटाकर जलनिकासी व्यवस्था को दुरुस्त किया जा रहा है।

मानगो नगर निगम क्षेत्र में हर वर्ष बरसात के मौसम में जलजमाव एक बड़ी समस्या बनकर सामने आता है। नालियों में गाद और कचरा जमा होने के कारण बारिश का पानी समय पर नहीं निकल पाता, जिससे सड़कों, गलियों और आवासीय क्षेत्रों में पानी भर जाता है। इससे लोगों का आवागमन प्रभावित होने के साथ-साथ संक्रामक बीमारियों का खतरा

भी बढ़ जाता है। इस गंभीर समस्या को देखते हुए मेयर सुधा गुप्ता ने हाल ही में टाटा स्टील के प्रबंध निदेशक (एमडी) से मुलाकात कर मानगो की साफ-सफाई, जलनिकासी व्यवस्था और अन्य नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाने की मांग उठाई थी। उनकी इस पहल के बाद जुस्को ने विशेष सफाई अभियान शुरू कर दिया है।

अभियान के तहत जुस्को की आधुनिक मशीनों और सफाई कर्मियों की टीम विभिन्न वार्डों और प्रमुख नालियों की सफाई में जुटी हुई है। वर्षों से जमा गाद, प्लास्टिक, कचरा और अन्य अवरोधों को हटाकर नालियों को साफ किया जा रहा है ताकि बरसात के दौरान पानी का प्रवाह बाधित न हो। कई ऐसे स्थानों पर भी सफाई की जा रही है, जहां लंबे समय से नालियों की सफाई नहीं हुई थी और जलनिकासी पूरी तरह प्रभावित हो चुकी थी।

विशेष अभियान की प्रगति का जायजा लेने के लिए मेयर सुधा गुप्ता स्वयं विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचीं। उन्होंने जुस्को के अधिकारियों के साथ नालों और सफाई कार्य का निरीक्षण किया तथा कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्पष्ट कहा कि सफाई अभियान
केवल औपचारिकता बनकर नहीं रहना चाहिए, बल्कि प्रत्येक प्रभावित क्षेत्र की नालियों की पूरी तरह सफाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जहां जलनिकासी की समस्या अधिक गंभीर है, वहां प्राथमिकता के आधार पर कार्य पूरा किया जाए ताकि बरसात के दौरान लोगों को जलजमाव से राहत मिल सके।

मेयर सुधा गुप्ता ने कहा कि मानगो की जनता को बेहतर नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि टाटा स्टील प्रबंधन के साथ हुई सकारात्मक बातचीत का परिणाम अब धरातल पर दिखाई देने लगा है। आने वाले समय में भी सड़क, जलापूर्ति, सफाई, जलनिकासी और अन्य बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए नगर निगम और टाटा स्टील के बीच बेहतर समन्वय के साथ कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जनहित से जुड़े मुद्दों पर किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और नागरिकों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा।

उन्होंने जुस्को के अधिकारियों से अपेक्षा की कि नाला सफाई अभियान को केवल एक बार चलाकर समाप्त न किया जाए, बल्कि इसे नियमित प्रक्रिया बनाया जाए। समय-समय पर नालियों की सफाई होती रहे ताकि भविष्य में जलजमाव की समस्या उत्पन्न न हो। साथ ही उन्होंने लोगों से भी अपील की कि वे नालियों में कचरा, प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट न डालें तथा स्वच्छता बनाए रखने में नगर निगम का सहयोग करें। मानगो के विभिन्न इलाकों में नाला सफाई का कार्य शुरू होने से स्थानीय नागरिकों में भी संतोष देखा गया। लोगों ने कहा कि लंबे समय बाद इस दिशा में प्रभावी पहल हुई है। उनका मानना है कि यदि अभियान इसी गति और गंभीरता से जारी रहा तो बरसात के दौरान जलजमाव की समस्या में काफी हद तक कमी आएगी और क्षेत्र की स्वच्छता व्यवस्था में भी सुधार होगा। नागरिकों ने उम्मीद जताई कि नगर निगम और जुस्को मिलकर भविष्य में भी इसी तरह नियमित रूप से सफाई कार्य कराते रहेंगे। निरीक्षण के दौरान नगर निगम के प्रबंधक निशांत कुमार, जुस्को के अधिकारी जगन्नाथ महापात्र सहित अन्य अधिकारी एवं

कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर सफाई अभियान की प्रगति की समीक्षा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। नगर निगम का मानना है कि यह अभियान मानगो की जलनिकासी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने और नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

संघर्ष ही हमे आगे बढने का हौसला देता है- रंगनाथ मिश्र

दैनिक समाज जागरण

घोरावल/ सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी एक लोकतान्त्रिक पार्टी होने के साथ साथ कार्यकर्ताओ की पार्टी है. बूथ के कार्यकर्त्ताओ के अथक मेहनत से भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बडी राजनैतिक पार्टी बनकर उभरी है, बूथ अध्यक्ष कभी अपने आप को नीचा न समझे क्योकि जो निचले पायदान पर है वही आगे चलकर पहले पायदान पर पहुचता है बस उसे संघर्ष और धैर्य की जरूरत है क्योकि संघर्ष ही आगे बढने का हौसला देता है और पार्टी को शिखर पर पहुचाने के लिए कार्यकर्त्ता ही संघर्ष करता है.उक्त बाते घोरावल विधानसभा के भगवास स्थित विधायक आवास पर आयोजित बूथ सम्मेलन मे बूथ अध्यक्षों को सम्बोधित करते हुए रंगनाथ मिश्र (पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार) ने कही, बूथ अध्यक्षो से रुबरू होते हुए पूर्व मंत्री ने कहा कि देश मे किसी पार्टी के कार्यकर्त्ता ने देश के लिए अगर बलिदान दिया है तो जनसंघ के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दिया है, एक समय था जब पूर्व मे कांग्रेस की सरकार देश की आवाज को संसद मे नही पहुचने देती थी, बूथों पर एजेंट नही मिलते थे लेकिन जो भी कार्यकर्त्ता थे वो भारतमाता की जय करते हुए लाठी खाकर भी देश व संगठन के लिए सबकुछ न्यौछावर कर संगठन को आज इस मुकाम पर पहुचा दिया कि भारतीय जनता पार्टी पिछले 12 सालों से केन्द्र मे और 9 सालों से राज्य मे रहते हुए सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के प्रण के साथ सडक, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसान हित के कार्य,कानून व्यवस्था अन्यादि अभुतपूर्व कार्य कर रही है, कार्यक्रम की शुरूवात मुख्य अतिथि द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। विधायक अनिल मौर्या ने बूथ अध्यक्ष सम्मेलन की मे मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्र देकर उनका अभिवादन किया और समस्त कार्यकर्त्ताओ का आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम का समापन नागेश्वर देव पांडेय ने किया संचालन जिला मंत्री डॉ. प्रसन्न पटेल ने किया. इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख अजीत रावत, विधायक प्रतिनिधि सुरेंद्र मौर्य, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष पुष्पा सिंह, मणिकर्णिका कोल, शम्भू नारायण सिंह, कैलाश सिंह, अमरनाथ पटेल, मंडल अध्यक्ष सीमा गुप्ता, आशुतोष सिंह अंकुर, मनीष पटेल, विमलेश चौबे, रामबली मौर्य,युवा मोर्चा जिलामंत्री अभय
पटेल, संजय पाठक, श्रवण सिंह, सुनील चौबे, लवकुश केशरी, पूर्व के मंडल के पदाधिकारी शक्ति केन्द्र संयोजक व अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

बारीडीह हाई स्कूल में दंत जांच शिविर, 105 छात्रों व शिक्षकों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

**दैनिक समाज जागरण
22.07.2026 चांद कुमार
लायेक (ब्यूरो चीफ) पूर्वी
सिंहभूम जमशेदपुर**

जमशेदपुर शहर की तनाव निवारण संस्था मुस्कान द्वारा दंत आरोग्यम, राम मंदिर टेल्को के सहयोग से बारीडीह हाई स्कूल परिसर में निःशुल्क दंत जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों में दंत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा समय रहते दांतों से जुड़ी समस्याओं की पहचान कर उचित उपचार के लिए प्रेरित करना था। शिविर में छात्रों, शिक्षकों एवं विद्यालय कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्राचार्या संगीता हलधर ने किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ दंत स्वास्थ्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने संस्था मुस्कान एवं दंत आरोग्यम की पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर समय-समय पर आयोजित होने चाहिए, ताकि बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़े और वे बेहतर जीवनशैली अपना सकें।

शिविर में कक्षा एक से लेकर ग्यारहवीं तक के छात्र-छात्राओं के अलावा विद्यालय के शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों का भी दंत परीक्षण किया गया। दंत चिकित्सक डॉ. अंकित सिंह और डॉ. प्रेरणा सिंह ने अपनी टीम के सदस्य शुभम एवं

प्रतिमा के सहयोग से सभी का सावधानीपूर्वक परीक्षण किया। जांच के दौरान बच्चों को सही तरीके से दांतों की सफाई करने, नियमित ब्रश करने, संतुलित आहार लेने तथा मीठे खाद्य पदार्थों के अत्यधिक सेवन से बचने की सलाह दी गई।

शिविर में कुल 105 लोगों का दंत परीक्षण किया गया। जांच के दौरान 10 लोगों में दांतों से संबंधित विभिन्न प्रकार की समस्याएं पाई गईं। ऐसे सभी लोगों को दवा की पर्ची के साथ आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया गया तथा बेहतर उपचार के लिए विशेषज्ञ चिकित्सक से संपर्क करने की सलाह दी गई। चिकित्सकों ने बताया कि समय पर जांच और उचित देखभाल से अधिकांश दंत समस्याओं से बचा जा सकता है।

संस्था मुस्कान के पदाधिकारियों ने बताया कि संस्था केवल तनाव निवारण ही नहीं, बल्कि समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए भी लगातार कार्य कर रही है। संस्था की ओर से समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर, जागरूकता अभियान तथा निःशुल्क परामर्श कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि मानसिक तनाव, अवसाद या अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझ रहे लोग संस्था के 24 घंटे संचालित हेल्पलाइन नंबर 8092867918 पर संपर्क कर निःशुल्क एवं पूर्णतः गोपनीय काउंसलिंग सेवा का लाभ उठा सकते हैं।

इस अवसर पर संस्था मुस्कान के अध्यक्ष शशि भूषण मिश्रा, काउंसलर बिजेंद्र कुमार, प्रदीप सिंह भोजपुरिया, कौशलेश तिवारी, राजेश राय, दुलाल चंद पति सहित विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल को विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताते हुए भविष्य में भी ऐसे शिविरों के नियमित आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

झारखंड में पहली बार होगा 'सोना देवी यूनिवर्सिटी एजुकेशन एक्सीलेंस अवाड्र्स 2026'

समाज जागरण

जमशेदपुर, 22 जुलाई। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों, प्राचार्यों, शिक्षाविदों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और शैक्षणिक संस्थानों को सम्मानित करने के उद्देश्य से सोना देवी यूनिवर्सिटी पहली बार "सोना देवी यूनिवर्सिटी एजुकेशन एक्सीलेंस अवाड्र्स 2026" का आयोजन कर रही है। स्काईवे करियर हब के सहयोग से आयोजित यह राज्य स्तरीय सम्मान समारोह 25 जुलाई 2026 को शाम 6 बजे बिष्टुपुर स्थित द एल्कोर होटल में होगा। विश्वविद्यालय की सहायक कुलसचिव अर्चना सिंह ने बताया कि यह सम्मान समारोह अब प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाएगा। इसका उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य, नवाचार, नेतृत्व और समाज के प्रति समर्पण को पहचान देना तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहित

करना है। उन्होंने बताया कि चयन प्रक्रिया के दौरान 1 से 15 जुलाई के बीच प्राप्त नामांकनों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें कोल्हान क्षेत्र के 100 से अधिक शिक्षण संस्थानों की प्रोफाइल शामिल थीं। चयन समिति ने विभिन्न मानकों के आधार पर योग्य प्रतिभाओं और संस्थानों का चयन किया है। समारोह में लाइफ टाइम अचीवमेंट, पायनियर इन एजुकेशन, विजनरी
प्रिंसिपल, आउटस्टैंडिंग एजुकेटर, एक्सीलेंस इन टीचिंग, डिजिटल लर्निंग एक्सीलेंस तथा अन्य प्रतिष्ठित श्रेणियों में सम्मान प्रदान किए जाएंगे। कार्यक्रम में राज्यभर के शिक्षाविद, प्राचार्य, शिक्षक, संस्थान प्रतिनिधि और विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी भाग लेंगे। आयोजकों का विश्वास है कि यह पहल झारखंड में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता और नवाचार को नई दिशा प्रदान करेगी।

मेड़र माता मंदिर परिसर में गूंजा शिव-पार्वती विवाह का दिव्य प्रसंग, रामकथा में उमड़ा आस्था का सैलाब

**समाज जागरण/
आदिवासी सुनील त्रिपाठी**

चोपन/ सोनभद्र। मेड़र माता मंदिर परिसर में आयोजित सप्तदिवसीय श्रीराम कथा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ के अंतर्गत बुधवार को कथा व्यास पूज्य श्री दिलीप कृष्ण भारद्वाज महाराज ने भगवान शिव एवं माता पार्वती के मंगल विवाह का अत्यंत भावपूर्ण, ओजस्वी और सजीव वर्णन प्रस्तुत किया। कथा के दौरान पूरा पंडाल शिवमय हो उठा और श्रद्धालु स्वयं को कैलाश पर्वत पर संपन्न हो रहे दिव्य विवाह का प्रत्यक्ष साक्षी अनुभव करने लगे। भक्ति गीतों और मंगल ध्वनियों के बीच उपस्थित श्रद्धालु भजनों पर झूमते रहे तथा कथा रस में सराबोर होकर आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति करते रहे। कथाव्यास श्री भारद्वाज महाराज ने कहा कि माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी। महर्षि नारद के मार्गदर्शन में किए गए कठिन तप से प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ ने उन्हें अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने शिव विवाह की अद्भुत एवं अलौकिक बारात का ऐसा वर्णन किया कि श्रद्धालु मंत्रमुग्ध होकर कथा का श्रवण करते रहे। देवताओं, ऋषियों, गंधर्वों और शिवगणों से सजी बारात का चित्रण सुनकर पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। कथा के दौरान महाराज श्री ने माता सती और भगवान शिव के प्रथम वैवाहिक प्रसंग का भी विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि जब भगवान शिव अगस्त्य ऋषि के आश्रम से कथा श्रवण कर लौट रहे थे, तब उन्हें वन में भगवान श्रीराम के दर्शन हुए।

शिवजी ने उन्हें साक्षात परमब्रह्म मानकर दूर से प्रणाम किया और माता सती से भी प्रणाम करने को कहा। किंतु सती के मन में संशय उत्पन्न हुआ और उन्होंने भगवान राम की परीक्षा लेने का विचार किया। शिवजी के मना करने के बावजूद सती ने माता सीता का रूप धारण कर भगवान राम के समक्ष जाने का प्रयास किया। भगवान शिव ने सती द्वारा सीता स्वरूप धारण करने को अनुचित माना और मन ही मन उनका त्याग कर दिया, किंतु कभी कठोर शब्दों में उन्हें अपमानित नहीं किया। कथाव्यास ने कहा कि भगवान शिव का यह चरित्र प्रत्येक गृहस्थ के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने बताया कि जीवन में सम्मान, धैर्य, त्याग और मयार्दा का पालन किस प्रकार किया जाए, यह भगवान शिव के आचरण से सीखा जा सकता है। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं से भगवान शिव के आदर्शों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। महाराज श्री ने आगे बताया कि जब माता सती को अपने पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ का समाचार मिला तो उन्होंने वहां जाने का आग्रह किया। भगवान शिव के मना करने के बावजूद वे यज्ञ में पहुंचीं, जहां उन्हें और भगवान शिव को अपमानित किया गया। इस अपमान से आहत होकर माता सती ने यज्ञ को भंग कर योगाग्नि द्वारा अपने प्राण त्याग दिए। बाद में वे हिमालय राज के यहां माता पार्वती के रूप में अवतरित हुईं और कठोर तपस्या के पश्चात पुनः भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त किया। शिव-पार्वती विवाह की दिव्य कथा सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। कथा के दौरान कई बार पूरा पंडाल "हर-हर महादेव" और "बोल बम" के जयघोष से गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने कथा व्यास के मुखारविंद से निकले आध्यात्मिक संदेशों को आत्मसात करते हुए धर्म, संस्कृति और सनातन परंपराओं के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। इस अवसर पर चोपन नगर सहित जनपद सोनभद्र के अनेक गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता, धर्मप्रेमी श्रद्धालु एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए भक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। आयोजन समिति कार्यक्रम स्थल पर आयोजन समिति के धमार्चार्य पहाड़ी बाबा शिव कुमार निषाद, नागेश्वर प्रसाद गौड़ एवं वरिष्ठजन सुनील सिंह, राजा मिश्रा, श्यामा चरण गिरी, सन्तोष साहनी, राजकुमार यादव, संदीप चौरसिया सहित अन्य श्रद्धालुओं के लिए विशेष व्यवस्थाएं की गई थीं। श्रीराम कथा महोत्सव के माध्यम से क्षेत्र में धर्म,
संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का वातावरण निरंतर सुदृढ़ हो रहा है।

बारिश के मौसम में शुरू हुआ आपदा सुरक्षा एवं कारसेवा अभियान

राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज बोले– बारिश, जलभराव और सड़क हादसों से बचाव के लिए जागरूकता सबसे बड़ा सुरक्षा उपाय

धंसी सड़क पर गड्ढे को भर संकेतक लगाकर वाहन चालकों को किया सतर्क

दैनिक समाज जागरण, जिला संवाददाता। (महेन्द्र जावला बहल)

भिवानी। सामाजिक संस्था नेताजी सुभाष चंद्र बोस युवा जागृति सेवा समिति द्वारा बारिश के मौसम को देखते हुए जिले में आपदा सुरक्षा एवं कारसेवा अभियान की शुरूआत की गई। अभियान का उद्देश्य आमजन और वाहन चालकों को संभावित दुर्घटनाओं से बचाने के लिए जागरूक, सतर्क और सावधान करना है। अभियान के तहत जोखिम वाले स्थानों पर संकेतक लगाकर लोगों को सचेत किया जा रहा है।

भारत सरकार से राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता एवं हिट एंड रन सड़क सुरक्षा अभियान के सदस्य अशोक कुमार भारद्वाज ने बताया कि उनके नेतृत्व में पिछले लगभग 15 वर्षों से लगातार आपदा सुरक्षा अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के माध्यम से लोगों को टूटी और धंसी हुई सड़कों, सड़कों पर बने गहरे गड्ढों, बारिश के पानी से भरे खतरनाक स्थानों, टूटे हुए नालों, खुले सीवरेज मेनहोल, बिजली के करंट और अन्य संभावित खतरों के प्रति जागरूक किया जाता है।

अभियान के प्रथम चरण में कार्यकताओं ने एनएच-709ई पर बारिश के कारण धंसी हुई सड़क के पास चेतावनी संकेतक लगाए, ताकि वहां से गुजरने वाले वाहन चालक समय रहते सावधानी बरत सकें और किसी दुर्घटना का शिकार न हों। संस्था के सदस्यों ने राहगीरों और वाहन चालकों को भी सुरक्षित गति से वाहन चलाने तथा जलभराव वाले क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरतने की सलाह दी।

अशोक कुमार भारद्वाज ने कहा कि बारिश, जलभराव और बाढ़ जैसे हालात में छोटी-सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को सतर्क रहना चाहिए और प्रशासन द्वारा जारी सुरक्षा निर्देशों का पालन करना चाहिए। उन्होंने केंद्र और प्रदेश सरकार, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई), राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग , बीएंडआर , नगर परिषद तथा संबंधित एजेंसियों से अपील की कि बारिश के मौसम में क्षतिग्रस्त सड़कों, खुले मेनहोल और अन्य खतरनाक स्थानों पर तुरंत सुरक्षा प्रबंध किए जाएं तथा समय पर मरम्मत कार्य कराया जाए। उन्होंने कहा कि प्रशासन और समाज के संयुक्त प्रयासों से ही दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है और लोगों के जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

माय युवा भारत पोर्टल से जुड़े अधिक से अधिक युवाः सीटीएम

दैनिक समाज जागरण, जिला संवाददाता। (महेन्द्र जावला बहल)

भिवानी। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत मेरा युवा भारत केंद्र, भिवानी द्वारा बुधवार को लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए सभागार में जिला सलाहकार समिति एवं जिला समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सिटी मजिस्ट्रेट (सीटीएम) अनिल कुमार (एचसीएस) ने की। इस अवसर पर जिला युवा अधिकारी मनसा, भारत सरकार से राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों, यूथ क्लबों तथा स्काउट एंड गाइड के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक को संबोधित करते हुए सीटीएम अनिल कुमार ने कहा कि अधिक से अधिक युवाओं को मेरा युवा भारत पोर्टल से जोड़ना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि पोर्टल के माध्यम से युवाओं को समाज और राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है। विभिन्न सरकारी विभागों, संस्थानों

और सामाजिक संगठनों को जब भी स्वयंसेवकों या युवा प्रतिभागियों की आवश्यकता होगी, तब माय युवा भारत से जुड़े युवा प्रभावी सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इसी दृष्टि से युवाओं को सरकारी योजनाओं, सामाजिक अभियानों और जनहित कार्यक्रमों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बैठक में मौजूद शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, खेल विभाग, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सामाजिक संगठनों तथा यूथ क्लबों के प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि वे अपने-अपने स्तर पर अधिक से अधिक युवाओं का मेरा युवा भारत पोर्टल पर पंजीकरण सुनिश्चित करें, ताकि युवाओं की ऊर्जा और प्रतिभा का उपयोग राष्ट्रहित में किया जा सके। जिला युवा अधिकारी मनसा ने कहा कि 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग का प्रत्येक युवा मात्र दो मिनट की सरल प्रक्रिया के माध्यम से माय युवा भारत पोर्टल पर अपना पंजीकरण कर सकता है। उन्होंने बताया कि पोर्टल से जुड़ने वाले युवाओं को विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक, खेल एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े कार्यक्रमों में भागीदारी का अवसर मिलेगा। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे बड़ी संख्या में पंजीकरण कर देश और समाज की सेवा में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

तेज बारिश के बीच भी उमड़ा जनसैलाब, काले कंबल वाले बाबा के निःशुल्क आरोग्य शिविर में बढ़ा विश्वास

प्रवीन गोदारा बोले– बारिश भी नहीं रोक सकी जनसेवा का कारवां, क्षेत्रवासियों का मिल रहा भरपूर सहयोग

छठे दिन भी दूर-दराज से पहुंचे मरीज, पहले बैच के सकारात्मक परिणामों से बढ़ा लोगों का भरोसा

दैनिक समाज जागरण, जिला संवाददाता। (महेन्द्र जावला बहल)

लोहारू, 22 जुलाई ।अनाज मंडी रोड, लोहारू में काले कंबल वाले बाबा गणेश यादव के सानिध्य में आयोजित आठ दिवसीय निःशुल्क आरोग्य शिविर के छठे दिन बुधवार सुबह हुई तेज बारिश के बावजूद मरीजों का उत्साह कम नहीं हुआ। प्रतिकूल मौसम के बावजूद लोहारू,

बहल तथा आसपास के गांवों के साथ-साथ दूर-दराज क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग उपचार एवं स्वास्थ्य परामर्श के लिए शिविर में पहुंचे। सुबह से देर शाम तक मरीजों की आवाजाही लगातार बनी रही।

आयोजकों के अनुसार पहले बैच के पांच दिवसीय उपचार कोर्स के सकारात्मक परिणाम सामने आने के बाद लोगों का विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है। उपचार पूरा कर चुके कई मरीजों ने स्वास्थ्य में सुधार का अनुभव साझा किया, जिसके बाद नए मरीज भी बड़ी संख्या में शिविर में पहुंच रहे हैं। तेज बारिश के बावजूद लोगों की मौजूदगी इस स्वास्थ्य सेवा अभियान के प्रति बढ़ते भरोसे को दर्शाती है।

समाजसेवी एवं वरिष्ठ भाजपा नेता प्रवीन गोदारा हांसीवाले ने बताया कि बहल में आयोजित सफल शिविर के बाद क्षेत्रवासियों की मांग पर लोहारू में इस स्वास्थ्य सेवा अभियान का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद लोगों का बड़ी संख्या में शिविर में पहुंचना इस जनसेवा अभियान की सफलता का प्रमाण है। उन्होंने क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में शिविर का लाभ उठाने की अपील भी की।

उन्होंने कहा कि शिविर का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद लोगों तक निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श और उपचार की सुविधा पहुंचाना है, ताकि अधिक से अधिक लोग स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें। आयोजकों के अनुसार शिविर में गठिया, सर्वाइकल, उच्च रक्तचाप (बीपी), मधुमेह (शुगर), लकवा, पोलियो, निसंतान दंपतियों की समस्याएं, जोड़ों के दर्द सहित विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी रोगों का निःशुल्क परीक्षण, परामर्श एवं उपचार किया जा रहा है। मरीजों को स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

मंढोली कलां में आयुष विभाग का विशाल स्वास्थ्य शिविर आयोजित

बीपी, शुगर, टीबी व स्त्री रोगों की हुई निःशुल्क जांच, दवाइयों का भी किया वितरण

योगाभ्यास के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का दिया संदेश

दैनिक समाज जागरण, जिला संवाददाता। (महेन्द्र जावला बहल)

बहल, 22 जुलाई। महानिदेशक आयुष विभाग, हरियाणा तथा जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. रश्मि शर्मा के निदेर्शानुसार मंढोली कलां स्थित सामान्य चौपाल (सुरजेवाला कुआं के समीप) में आयुष विभाग, भिवानी द्वारा विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया। शिविर के दौरान बीपी, शुगर, टीबी, स्त्री रोग सहित विभिन्न बीमारियों की निःशुल्क जांच की गई। मरीजों को आवश्यक परामर्श देने के

साथ-साथ निःशुल्क दवाइयों का वितरण भी किया गया। इसके अलावा उपस्थित लोगों

को योगाभ्यास करवाकर स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अर्चना (एम.डी., बाल रोग एवं आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी, आयुर्वेदिक औषधालय मंढोली कलां) ने ग्रामीणों को आयुर्वेद और योग के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने नियमित दिनचर्या, संतुलित आहार और योग को बेहतर स्वास्थ्य का आधार बताया। कार्यक्रम में आयुष योग सहायक मनीष कुमार, रेखा रानी, बनिता पूनिया, वाटर कैरियर श्रीभगवान, जिला पार्षद रविंद्र मंढोली सहित गांव के गणमान्य नागरिक एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

ई - 20 ग्रीन फ्यूल्स प्राइवेट लिमिटेड पन्नीवाला रूलदु द्वाराः

किसानों की आवाज को दबाने के लिए भेजे नोटिसों से नहीं डरते आंदोलनकारीः लखविंदर सिंह औलख

फैक्ट्री मालिकों की गिरफ्तारी तथा सरकारी चावल खरीद घोटाले की निष्पक्ष जांच को लेकर 24 जुलाई को होगा प्रदर्शन, किसानों से की फैक्ट्री के सामने पहुंचने की अपीलः लखविंदर सिंह औलख

समाज जागरण

कालांवाली (सुरेश जोरासिया) भारतीय किसान एकता (बीकेई) के प्रदेशाध्यक्ष लखविंदर सिंह औलख ने कालांवाली में प्रेस वार्ता के दौरान ई-20 ग्रीन फ्यूल्स प्राइवेट लिमिटेड, पन्नीवाला रूलदु द्वारा उन्हें भेजे गए नोटिस के बारे में बताते हुए कहा कि आंदोलनकारी मुकदमों तथा नोटिसों से डरने वाले या दबने वाले नहीं हैं। लुटेरों को लुटेरा ही कहा जाएगा।

बीकेई टीम ने किसानों को सब्सिडी पर मिलने वाली यूरिया खाद इथेनॉल फैक्ट्री से रंगे हाथ पकड़वाई है, जिस पर फैक्ट्री के खिलाफ कृषि विभाग द्वारा मुकदमा नंबर 0233, 9 जुलाई को सदर थाना डबवाली में दर्ज करवाया गया है, जिसमें फैक्ट्री मालिकों की गिरफ्तारी को लेकर शुक्रवार 24 जुलाई को एथेनॉल फैक्ट्री के बाहर प्रदर्शन रखा गया है। इलाके के सभी किसानों-मजदूरों से अपील है कि सुबह 10:30 बजे कालांवाली डबवाली रोड पर इथेनॉल फैक्ट्री पनीवाला रूलदु पहुंचें। उन्होंने ओपन मार्केटिंग सेल्स स्कीम के तहत खरीदे गए सरकारी चावल के बड़े पैमाने पर कथित दुरुपयोग का आरोप लगाया। लखविंदर सिंह औलख ने बताया कि ई-20 ग्रीन फ्यूल्स प्राइवेट लिमिटेड ने एफसीआई कालांवाली तथा एफसीआई डबवाली लाखों गट्टे सरकारी चावल ओ.एम.एस.एस. योजना के तहत खरीदे थे। यह चावल सरकार की नीति के अनुसार इथेनॉल उत्पादन में उपयोग किया जाना था, लेकिन आरोप है कि इसे बीच रास्ते से अवैध रूप से विभिन्न राइस मिलों में ऊंचे दामों पर सप्लाई कर दिया गया। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा यह चावल लगभग 2320 प्रति क्विंटल की दर से उपलब्ध कराया गया था, जबकि इसे कथित रूप से 2800 से 3000 प्रति क्विंटल तक विभिन्न राइस मिलों में बेचा गया। इससे सरकारी योजना का उद्देश्य प्रभावित हुआ है तथा किसानों और सरकारी खजाने दोनों को नुकसान पहुंचा है। औलख ने आरोप लगाया कि ई-20 ग्रीन फ्यूल्स प्राइवेट लिमिटेड का यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी फैक्ट्री में किसानों के लिए सब्सिडी पर मिलने वाली नीम कोटेड यूरिया के कथित अवैध उपयोग के मामले में मुकदमा दर्ज हो चुका है, लेकिन अब तक किसी भी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। संगठन के अनुसार आने वाले समय में कंपनी से जुड़े अन्य मामलों का भी खुलासा किया जाएगा। बीकेई प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि फैक्ट्री के आसपास के ग्रामीण लंबे समय से वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भारी ट्रैफिक और किसानों के हिस्से के पानी के कथित अवैध उपयोग जैसी समस्याओं से परेशान हैं। उनका आरोप है कि एक ओर किसानों के संसाधनों का दुरुपयोग किया जा रहा है और दूसरी ओर सरकारी योजनाओं का भी कथित रूप से दुरुपयोग किया जा रहा है, जबकि प्रशासन अब तक प्रभावी कार्रवाई करने में विफल रहा है।

उन्होंने मांग की कि सरकारी चावल के कथित घोटाले की निष्पक्ष विभागीय जांच करवाई जाए, संबंधित अधिकारियों और कंपनी प्रबंधन के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाए तथा यूरिया खाद मामले में लंबित जांच को शीघ्र पूरा कर दोषियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाए। भारतीय किसान एकता द्वारा इथेनॉल प्लांट पनीवाला रूलदु के बाहर शांतमयी प्रदर्शन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि कानून-व्यवस्था की कोई स्थिति उत्पन्न होती है तो इसकी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी।

वीडियो वायरल करने की धमकी देकर ₹5 लाख की उगाही करने वाले गिरोह का पदार्फाश

सीआईए स्टाफ-२ ने दो महिलाओं सहित मुख्य आरोपी को किया गिरफ्तार, उगाही की रकम बरामद

मुख्य आरोपी पुलिस रिमांड पर, प्रारंभिक जांच में हरियाणा पुलिस का जवान होने की बात सामने आई

दैनिक समाज जागरण, जिला संवाददाता। (महेन्द्र जावला बहल)

भिवानी । भिवानी जिला पुलिस ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर एक वृद्ध व्यक्ति से लाखों रुपये की जबरन वसूली करने के मामले का खुलासा करते हुए मुख्य आरोपी सहित दो महिला आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से उगाही गई राशि भी बरामद की है। मुख्य आरोपी को न्यायालय में पेश कर एक दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया, जबकि मामले में गहन पूछताछ जारी है। डीसीपी क्राइम अनूप कुमार ने बताया कि थाना औद्योगिक क्षेत्र निवासी एक व्यक्ति ने शिकायत दी थी कि 9 जुलाई 2026 को उसके क्राउन प्लाजा, पुराना बस स्टैंड स्थित कार्यालय में एक युवती नौकरी के संबंध में आई थी। नौकरी देने से इनकार करने पर युवती ने कार्यालय के शौचालय का उपयोग करने की अनुमति मांगी। इसी दौरान एक युवक कार्यालय में पहुंचा और वीडियो

बनाना शुरू कर दिया। आरोप है कि कुछ देर बाद युवती शौचालय से नग्न अवस्था में बाहर आई और युवक ने शिकायतकर्ता के साथ उसकी वीडियो बना ली। इसके बाद आरोपियों ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर ₹5 लाख की मांग की। डर के कारण शिकायतकर्ता ने मौके पर ₹4.47 लाख आरोपियों को दे दिए। कुछ दिन बाद आरोपियों ने फिर ₹2 लाख की मांग की, जिसके बाद पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार (आईपीएस) के निर्देश पर सीआईए स्टाफ-2 के प्रभारी उप निरीक्षक दशरथ के नेतृत्व में एएसआई सुभाष की टीम ने कार्रवाई करते हुए नरेंद्र, ममता और पुष्पी को गिरफ्तार किया। जांच में सामने आया कि ममता ने अपने साथी नरेंद्र के साथ मिलकर पूरी साजिश रची थी तथा पुष्पी को शिकायतकर्ता के कार्यालय में भेजा गया था। पुलिस ने महिला आरोपी पुष्पी के कब्जे से ₹6,000, ममता के कब्जे से ₹5,000 तथा मुख्य आरोपी नरेंद्र के कब्जे से पुलिस रिमांड के दौरान ₹4.47 लाख बरामद किए हैं।

प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी नरेंद्र हरियाणा पुलिस का जवान है और वर्तमान में गुरुग्राम जिले में तैनात है। पुलिस मामले में प्रयुक्त अन्य साधनों, शेष राशि तथा इस तरह की अन्य संभावित घटनाओं के संबंध में पूछताछ कर रही है।

पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार ने लोगों से अपील की है कि यदि किसी के साथ वीडियो वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेलिंग या जबरन वसूली जैसी घटना होती है तो तुरंत पुलिस को सूचना दें, ताकि दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जा सके।

हरियाणा में सोशल मीडिया पत्रकारों के लिए बन सकता है नया नियम, प्रेस की आजादी के साथ जवाबदेही पर जोर

समाज जागरण

कालांवाली, 22 जुलाई (सुरेश जोरासिया): हरियाणा में सोशल मीडिया के जरिए खबरें दिखाने वाले लोगों के लिए भविष्य में नया नियामक ढांचा (रेगुलेटरी फ्रेमवर्क) बनाया जा सकता है। इसका उद्देश्य प्रेस की आजादी को बनाए रखते हुए फर्जी और गैर-जिम्मेदाराना पत्र कारिता पर रोक लगाना हो सकता है। हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि आजकल मोबाइल और माइक्रोफोन लेकर कोई भी खुद को पत्रकार बताने लगता है।

अदालत ने कहा कि कई लोगों के पास न पत्रकारिता की शिक्षा होती है ,और ना ही किसी प्रकार की जवाबदेही। ऐसे में सरकार को ऐसा नियामक ढांचा बनाने पर विचार करना चाहिए, जिससे प्रेस की स्वतंत्रता भी सुरक्षित रहे और गलत तरीके से पत्रकारिता करने वालों की जवाबदेही भी तय हो सके। सूत्रों के अनुसार, हरियाणा में सोशल मीडिया से जुड़े लोगों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इस दिशा में चर्चा शुरू हो गई है। पानीपत जिला प्रशासन और

सिरसा में मुख्यमंत्री के कार्यक्रमों के दौरान सोशल मीडिया कर्मियों के प्रति अपनाए गए सरकारी रवैये से भी संकेत मिलते हैं कि सरकार इस क्षेत्र में कुछ नए नियम लागू करने पर विचार कर सकती है। चर्चा है कि समाचार पत्रों के पंजीकरण की तर्ज पर जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी (डीआईपीआरओ) की अध्यक्षता में एक समिति बनाई जा सकती है। यह समिति सोशल मीडिया पत्रकार के आवेदन, पुलिस सत्यापन, शैक्षणिक योग्यता और पत्रकारिता में आने के उद्देश्य की जांच के बाद प्रेस कार्ड जारी करने की सिफारिश कर सकती है। यह भी संभावना जताई जा रही है कि महिला सोशल मीडिया पत्रकारों और यूट्यूबर्स के लिए अलग समिति बनाने पर भी विचार किया जा सकता है,

ताकि उनकी कार्यशैली और आवश्यकताओं के अनुसार उचित व्यवस्था की जा सके। हालांकि, इस संबंध में अभी तक हरियाणा सरकार की ओर से कोई आधिकारिक घोषणा या अधिसूचना जारी नहीं की गई है।

फिलहाल इसे प्रस्ताव और संभावित व्यवस्था के रूप में ही देखा जा रहा है।

पशु क्रूरता के आरोप में दो हिरासत में, घायल कटरा कराया बरामद

दैनिक समाज जागरण

संभल। असमोली थाना क्षेत्र की मढ़न चौकी पुलिस ने पशु क्रूरता के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार कर घायल कटरे को अपने कब्जे में लिया है। बरामद कटरे का चिकित्सीय परीक्षण कराया जाएगा। मढ़न चौकी प्रभारी अनुज चौहान पुलिस बल के साथ बुधवार की शाम क्षेत्र में गश्त और संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान मढ़न-गुमसानी मार्ग पर सैदपुर जयराम गांव के चौराहे के पास उन्होंने देखा कि गुमसानी की ओर से एक काला कटरा भागता हुआ आ रहा था, जिसके पीछे दो व्यक्ति लाठी-डंडों से उसे पीटते हुए दौड़ रहे थे। मारपीट के कारण कटरा बुरी तरह हांफ रहा था।

पुलिस ने तत्काल दोनों व्यक्तियों को रोककर पूछताछ की। उन्होंने अपने नाम लोकेश और गुड्डु, निवासी गांव गुमसानी बताए। कटरे के शरीर का निरीक्षण करने पर उस पर जगह-जगह लाठी-डंडों से लगी लाल-नीली चोटों के निशान पाए गए।

पुलिस ने दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर उनके खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम की संबंधित धाराओं में कार्रवाई की। घायल कटरे को कब्जे में लेकर थाने भेज दिया गया है। थाना प्रभारी मोहित चौधरी ने बताया दो लोगों के खिलाफ संबन्धित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर हिरासत में लिया गया है कटरे का परीक्षण पशु चिकित्सा अधिकारी से कराया जाएगा, जिसके आधार पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने चलाया इंटर कॉलेज सदस्यता अभियान

समाज जागरण

चन्दौसी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) द्वारा 15 जुलाई से 5 अगस्त तक प्रदेशभर में इंटर कॉलेज सदस्यता अभियान संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में नगर इकाई चन्दौसी द्वारा आरएस इंटर कॉलेज चंदौसी में सदस्यता अभियान आयोजित किया गया। अभियान के दौरान विद्यालय के अनेक छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की सदस्यता ग्रहण करते हुए राष्ट्र निर्माण एवं छात्र

हितों के लिए कार्य करने का संकल्प लिया। परिषद कार्यकताओं ने विद्यार्थियों को संगठन

की कार्यप्रणाली, उद्देश्य एवं विभिन्न आयामों की जानकारी देते हुए अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनने का आह्वान किया।

इस अवसर पर नगर मंत्री आशीष ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रहित एवं छात्र हितों के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य करता है। अधिक से अधिक विद्यार्थियों को परिषद से जुड़कर राष्ट्र निर्माण की इस यात्रा का सहभागी बनना चाहिए। कार्यकर्ता ने कहा कि सदस्यता अभियान केवल संगठन का विस्तार नहीं, बल्कि जागरूक, जिम्मेदार एवं राष्ट्रभक्त छात्र शक्ति के निर्माण का अभियान है।

इस सदस्यता अभियान में नगर मंत्री आशीष, शोएब, सदब,विनीता सपना सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।